A Daily News Magazine
भोपाल
गुरुवार, 27 मार्च, 2025

सुबह सवेरे

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 22, अंक 196, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

नीतियाँ बनीं, तो भी इलेक्ट्रिक कारों की बिक्री क्यों नहीं बढ़ रही?

मधुरेंद्र सिन्हा

देश में इलेक्ट्रिक कारों को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने न केवल नीतियाँ बनाईं बल्कि राज्य स्तर पर सब्सिडी वगैरह की घोषणा भी की। इसके तहत ही एक इनका यानी इलेक्ट्रिक कारों का उत्पादन बढ़ाने के लिए एक स्कीम भी बनाई गई है जो जारी है। इसमें ऐसे कार निर्माताओं को छूट देने के अलावा इम्पोर्ट में कुछ छूट और कुछ इंसेंटिव भी दिये गये हैं। पीएम ई ड्राइव स्कीम भी सितंबर 2024 में घोषित की गई। इन सभी का लक्ष्य यह था कि देश में 2030 तक कुल 30 फ़ीसदी कारें बिजली से चलने वाली हों ताकि पर्यावरण प्रदूषण में कमी हो। इसके लिए फेम 1 और फेम 2 सब्सिडी की घोषणा भी की गई थी। इसके अलावा टैक्स में कई तरह की छूट खरीदारों को दी गई है।

राज्यों ने अपने-अपने स्तर पर भी इलेक्ट्रिक कारों, बाइक वगैरह की खरीदारी पर छूट देने की घोषणा की। मसलन, दिल्ली सरकार ने 2024 तक इलेक्ट्रिक वाहनों की संख्या कुल संख्या का 25 फ़ीसदी तक ले जाने की घोषणा की थी। लेकिन यह विफल हो गई। यह संख्या उससे काफ़ी कम रही। हालाँकि ग्राहकों को दस हजार रुपये की सब्सिडी भी मिलती रही। अन्य राज्यों जैसे महाराष्ट्र, गुजरात, असम, बंगाल वगैरह में अच्छी सब्सिडी के कारण बिक्री बढ़ी लेकिन उस सीमा तक नहीं जैसा सरकारों ने सोचा था। इससे फिर एक बार यह मुद्दा गरम हो गया है कि आख़िर इलेक्ट्रिक कारों की बिक्री क्यों नहीं रफ्तार पकड़ रही है? आज स्थिति यह है कि देश में कारों की कुल बिक्री में इन कारों का प्रतिशत महज 2.4 है। आइये देखते हैं कि मुख्य वजह क्या है:

पहली वजह यह है कि भारतीय किसी भी चीज को खरीदने के पहले उसकी क़ीमत पर ध्यान देते हैं। उनका ध्यान फीचर्स और टेक्नोलॉजी पर कम रहता है। इस मामले में इलेक्ट्रिक कारें पिट जाती हैं क्योंकि उनकी क़ीमत परंपरागत कारों से कहीं ज़्यादा हैं। इलेक्ट्रिक कारें ऑटोमोबाइल कंपनियों की नई पेशकश है और जाहिर है कि जब कोई नया प्रॉडक्ट आता है तो उसकी क़ीमतें कहीं ज़्यादा होती हैं। ऐसे में ग्राहक को वह चुकानी पड़ती है। समझदार या यूं कहें कि दूर की सोचने वाले ग्राहक हमेशा इंतजार करना पसंद करते हैं ताकि नये उत्पाद की कीमतें घट जायें। ऐसा होता भी है। यहां पर आईफोन का उदाहरण सामने है जो शुरू में तो बहुत महंगी दरों पर बिकता है लेकिन थोड़े समय के बाद उसकी क़ीमत गिर जाती है। कारों में तो ऐसा होता नहीं है लेकिन कंपनियाँ कई अन्य तरह की छूट देने लग जाती हैं। बहरहाल, भारत में इलेक्ट्रिक कारें अपनी ऊँची क़ीमतों के कारण ज़्यादा बिक नहीं पा रही हैं। लोग इंतजार कर रहे हैं कि क़ीमतें उनके बजट में आयें।

दूसरा कारण यह है कि इसकी बैटरी चार्ज करने के लिए उपयुक्त चार्जिंग स्टेशनों की देश में काफी कमी है। छोटे शहरों में तो जरा भी सुविधा नहीं है। इसके अलावा जो कमर्शियल चार्जिंग स्टेशन हैं उनकी दरें ज़्यादा हैं जिससे ईंधन में जो बचत होती, उस पर सेंध लग जाती है। पैसे उतने नहीं बचते जितने बचने चाहिए। लेकिन सबसे बड़ी बात है कि मन में एक शंका बनी रहती है कि अगर कार की बैटरी डिस्चार्ज हो गई तो वह कहां चार्ज होगी।

सीएनजी कारों की तरह इन कारों में पेट्रोल से चलने की सुविधा कतई नहीं होती क्योंकि इनमें इंजिन होता ही नहीं है। यह बैटरी से चलने वाले खिलौना कारों की ही तरह तो होती हैं। ग्राहक की चिंता बैटरी चार्ज करने की होती है। बेहतर ऑप्शन यह होगा कि उसके पास अपना चार्जिंग स्टेशन हो जो बेहद छोटा सा होता है। सरकारों को इस तरह का इन्फ्रास्ट्रक्चर तैयार करना होगा। अभी बहुत सी हाउसिंग सोसायटीज में ऐसी सुविधा दे दी गई है और आगे भी दी जायेगी।

सच तो ये है कि बैटरी कारों के लिए उपयुक्त इन्फ्रास्ट्रक्चर की अभी भारी कमी है। सरकारी स्तर पर कहीं-कहीं चार्जिंग की व्यवस्था तो है लेकिन वे दूरदराज में हैं या ऐसी जगहों पर हैं जहां जाना कठिन है।

ठीक वैसी स्थिति है जैसी सीएनजी वाली कारों के मालिकों को एक जमाने में झेलना पड़ा था। यहां पर यह बताना ज़रूरी है कि ईवी की बैटरियों का सबसे बड़ा निर्माता देश चीन है जो दुनिया की कुल खपत का 79 फ़ीसदी उत्पादित करता है। उसके बाद ही अमेरिका का स्थान है। विदेशों से आयातित होने के कारण इन बैटरियों की क़ीमतें भी ज़्यादा हैं और दूसरे देशों पर हमारी निर्भरता भी है। भारत में हालाँकि बैटरियाँ बनती हैं लेकिन कम।

मारुति सुजकी कार कंपनी का एक बहुत दिलचस्प टीवी कमर्शियल है जिसमें मुख्य पात्र हर कार और यहाँ तक कि नासा के रॉकेट के बारे में पूछता है-कितना देती है! उसका तात्पर्य यहां माइलेज से है। इलेक्ट्रिक कारों में तो माइलेज का मामला एक चार्ज में वे कितना चलती हैं से जुड़ा होता है। अभी भारत में ग्राहक इस बात से आश्वस्त नहीं हैं कि आखिर यह कार एक चार्ज में कितना देगी। शुरुआती दौर में ये कारें लगभग 300 किलोमीटर चलने का दावा करती थीं। लेकिन अब बड़ी बैटरियों के आने से यह माइलेज 500 किलोमीटर तक हो गई है। मारुति सुजुकी जो इसी साल नई इलेक्ट्रिक कार लेकर आई है, 500 किलोमीटर का दावा कर रही है।

यह तय है कि आने वाले समय ये कारें और भी ज्यादा दूरी तय करेंगी क्योंकि उनकी बैटरियां और शक्तिशाली होती जायेंगी, ठीक मोबाइल फोन की बैटरियों की तरह। लेकिन फिर भी ग्राहकों के मन में एक बात रहेगी कि इन बैटरियों की लाइफ़ कितनी है? बताया जा रहा है कि बाइकों में लगने वाली बैटरियों की लाइफ़ महज तीन साल होती है। अब अगर ऐसा है तो पैसों की बचत का मामला तो गड़बड़ हो गया। कारों की बैटरियों में लगने वाली 40 से 60 केडब्लूएच की क़ीमत औसतन 6 लाख रुपये से 9 लाख रुपये तक होती है। वैसे तो इसके ख़राब होने पर इसके अंदरूनी सेल बदले जा सकते हैं लेकिन इसकी भारी भरकम क़ीमतों को देखकर ग्राहक सोच में डूबे हुए हैं।

(सत्य हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

दिल्ली में भी कमल खिल गया है और अब पश्चिम बंगाल... अमित शाह

- बिल पारित होने से ग्रामीण अर्थव्यवस्था मजबूत होगी

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय गृहमंत्री और सहकारिता मंत्री अमित शाह ने लोकसभा में कहा कि दिल्ली में भी कमल खिल गया है अब बस पश्चिम बंगाल बचा है। अमित शाह आयुष्मान भारत योजना पर बात कर रहे थे। उन्होंने कहा कहा कि दिल्ली में कमल खिल गया है और अब आयुष्मान भारत दिल्ली में भी है। अब सिर्फ पश्चिम बंगाल बचा है, चुनाव के बाद वहां भी कमल खिलेगा और आयुष्मान भारत योजना पश्चिम बंगाल में भी आएगी।

त्रिभुवन सहकारी विश्वविद्यालय विधेयक पर हो रही चर्चा- लोकसभा में त्रिभुवन सहकारी विश्वविद्यालय विधेयक 2025 पर चर्चा चल रही है। इसी दौरान केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने सवालों के जवाब दिए। उन्होंने बताया कि इस विधेयक के पारित होने के बाद इससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था मजबूत होगी, स्वरोजगार और लघु उद्यमिता का विकास होगा, सामाजिक समावेश भी बढ़ेगा, नवाचार और अनुसंधान में नए मानक स्थापित करने के अवसर मिलेंगे... मेरे लिए यह सौभाग्य की बात है कि मैं आज इस विधेयक को सदन के समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूं।

महादेव सट्टा... भूपेश बघेल के घर सीबीआई रेड, समर्थकों का हंगामा

- कांग्रेस विधायक, 4 आईपीएस के यहां भी छापा; 4 राज्यों के 60 जगहों पर ऐक्शन

रायपुर (एजेंसी)। महादेव सट्टा एप मामले में सीबीआई की टीम ने छत्तीसगढ़ सहित 4 राज्यों दिल्ली, भोपाल और कोलकाता के 60 जगहों पर छापा मारा है। पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल, उनके दो ओएसडी रहे आशीष वर्मा और मनीष बंछोर, उनकी सेक्रेटरी रही सौम्या चौरसिया, विधायक देवेंद्र यादव, रिटायर्ड आईएएस अनिल टुटेजा और 4 आईपीएस अधिकारी आनंद छाबड़ा, अभिषेक पल्लव, आरिफ शेख, प्रशांत अग्रवाल के घर जांच जारी थी

भूपेश के घर के बाहर पुलिस से भिड़े समर्थक- पूर्व सीएम के भिलाई-3 पदुम नगर स्थित घर, विधायक देवेंद्र यादव के सेक्टर 5 स्थित घर, आईपीएस अभिषेक पल्लव के सेक्टर 9 स्थित निवास और उनके समय में महादेव सट्टा चलाने वाले सिपाही नकुल और सहदेव के नेहरू नगर स्थित घर पर दस्तावेजों की जांच जारी है। पुलिस से पूर्व सीएम बघेल के समर्थकों से झड़प भी हुई।

पीएमश्री एयर एम्बुलेंस सेवा सभी जरूरतमंदों के लिए नि:शुल्क : सीएम यादव

मुख्यमंत्री ने मुरैना में रोटरी क्लब के राहत स्वास्थ्य शिविर का किया शुभारंभ

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि अस्पताल में मरीजों को बेहतर इलाज मिल जाये तो डॉक्टर उसके लिये भगवान बन जाते हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि मानव काया में कोई भी कष्ट बड़ी चुनौती होती है। आमजन की शारीरिक व्याधियों के उपचार के लिये चंबल में वृहद स्वास्थ्य शिविर का आयोजन और उसमें देश के बड़े चिकित्सकों के आगमन पर प्रसन्नता के साथ ही आभार भी माना। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि चंबल की धरती वीरों की भूमि है। इस वीर भूमि के जवान हमेशा देश की रक्षा में आगे बढ़कर अपने प्राणों की आहुति देने के लिये तत्पर हैं। मुख्यमंत्री ने मुरैना के एसएएफ ग्राउण्ड में आयोजित रोटरी राहत वृहद स्वास्थ्य शिविर के शुभारंभ अवसर पर यह बातें कहीं। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने कठिन परिस्थितियों में भी नागरिकों को स्वास्थ्य सुविधाएँ उपलब्ध कराने के लिये पीएमश्री एयर एम्बुलेंस सेवा प्रारंभ की है। इसका लाभ सभी जरूरतमंदों को निःशुल्क उपलब्ध कराया जा रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने स्वास्थ्य शिविर के शुभारंभ के बाद ओपीडी के सभी काउंटरों का भ्रमण कर चिकित्सकों एवं रोटेरियन के सदस्यों से मुलाकात की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि शिविर में उपचार के लिये बेहतर प्रबंध किये गये हैं।

शिविर में ख्याति प्राप्त चिकित्सक देंगे अपनी सेवाएँ

शिविर में कार्डियोलॉजिस्ट एवं कार्डियक सर्जन डॉ. नरेश त्रैहान मेदान्ता हॉस्पिटल से अपनी टीम से साथ एवं नेशनल हार्ट इंस्टिट्यूट के डॉ. ओ.पी. यादव, डॉ नितिश शाह ऑल इंडिया मेडिकल इंस्टिट्यूट साइंस, एवं मैक्स एवं मनीपाल हॉस्पिटल के कार्डियोलॉजिस्ट अपनी सेवाएँ देंगे। अन्य विशेषज्ञो में ऑक्नोलॉजिस्ट, हेमेटोलॉजिस्ट डॉ. दिनेश भूरानी रहेगें, अस्थिरोग में एम्स दिल्ली से डॉ. विवेक शंकर एवं नितिश नायक, डॉ. प्रकाश कोतवाल रहेगें। पेन के डॉ. नीरज जैन मैक्स दिल्ली से आकर सेवाऐं देंगे। पीडियाट्रिक सर्जन डॉ. मीनू वाजपेयी रेन्बो हॉस्पिटल दिल्ली से आ रही हैं। कामता शाह मुम्बई नानावटी हॉस्पिटल से, बच्चों मे हार्निया, हाइपोस्पेडियास एवं सभी बच्चों की आवश्यक सर्जरी करेगी। किडनी विशेषज्ञ डॉ. रावत सर गंगाराम हॉस्पिटल से, डॉ. एस.बी बंसल, मेदान्ता हॉस्पिटल से तथा लेप्रोस्कोपिक सर्जन, गॉल ब्लेडर, हार्निया, लेप्रोस्कोपिक पद्वति से डॉ. मुकुन्द खेतान एवं चंडीगढ़ से डॉ. परमार एवं उनकी टीम द्वारा किये जायेंगे।

जस्टिस यशवंत वर्मा पर जांच तेज

- जज कैश केस- बंगले पर पहुंची दिल्ली पुलिस, सुप्रीम कोर्ट के कर्मचारी भी गए अंदर

नई दिल्ली (एजेंसी)। हाइकोर्ट के जस्टिस यशवंत वर्मा के तुगलक क्रिसेंट रोड स्थित सरकारी आवास पर दिल्ली पुलिस पहुंची है। नई दिल्ली जिले के डीसीपी देवेश महला मुआयना करने पहुंचे हैं। उनके साथ तुगलक रोड के एसीपी वीरेंद्र जैन और सुप्रीम कोर्ट के दो-तीन कर्मचारी भी अंदर गए।

बताया गया कि करीब 2.15 बजे ये सभी अधिकारी जस्टिस यशवंत वर्मा के आवास पर पहुंचे थे। ये लोग स्टोर रूम का मुआयना कर रहे थे, जहां 14 मार्च की रात 11.15 बजे आग लगी थी।

- **पुलिस ने स्टोर रूम सील किया, यहीं अधजले नोट मिले थे, सुप्रीम कोर्ट बोला- पिटीशनर बयानबाजी न करें-** दिल्ली हाईकोर्ट के जस्टिस यशवंत वर्मा के घर जले हुए नोटों के बंडल मिलने के मामले में बुधवार को पुलिस उनके घर पहुंची। रिपोर्ट्स के मुताबिक, डीसीपी नई दिल्ली देवेश की टीम ने पैसे मिलने वाले स्टोर रूम को सील किया है। वहीं, सुप्रीम कोर्ट ने जस्टिस वर्मा के खिलाफ एफआईआर दर्ज करने की मांग वाली याचिका पर सुनवाई करने को कहा है। कोर्ट ने याचिकाकर्ता एडवोकेट मैथ्यूज जे नेदुम्परा को सार्वजनिक बयान न देने का आदेश दिया है। हालांकि मैथ्यू ने सीजेआई की तारीफ करते हुए कहा कि उन्होंने जले हुए नोटों के वीडियो को सार्वजनिक करके अच्छा काम किया है।

अब पीएफ से पैसे निकालना होगा आसान..

- एक लाख तक की रकम एटीएम-यूपीआई से तुरंत निकाल सकेंगे

नई दिल्ली (एजेंसी)। ईपीएफओ मेंबर्स जल्द ही पीआई और एटीएम से यूपीआई का पैसा निकाल सकेंगे। इसकी लिमिट एक लाख रुपए तक रहेगी। इस साल मई के आखिरी या जून की शुरुआत तक यह सुविधा शुरू होने की उम्मीद है। श्रम एवं रोजगार मंत्रालय की सचिव सुमिता डावरा ने बुधवार को यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि इसके लिए कर्मचारियों को डेबिट कार्ड की तरह ईपीएफओ विड्रॉल कार्ड दिया जाएगा। इससे वे एटीएम से तुरंत पैसे निकाल सकेंगे। यूपीआई के जरिए यूजर्स अपना पीएफ बैलेंस भी चेक कर पाएंगे।

भारतीय संस्कृति पर आधारित फिल्में आज भी समसामयिक हैं : डॉ यादव

विक्रमोत्सव

डॉ. जफर महमूद
उज्जैन से

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव कालिदास अकादमी में विक्रमोत्सव के अंतर्गत अंर्तराष्ट्रीय फिल्मोत्सव के समापन समारोह में शामिल हुए। मुख्यमंत्री डॉ यादव ने फिल्म फेस्टिवल में विभिन्न देशों से आए राजनयिकों के साथ सौजन्य भेंट की। इस दौरान मुख्यमंत्री डॉ यादव ने लेखक सीमा कपूर की आत्म कथा 'युं गुज़री है अब तलक' का विमोचन भी किया।

मुख्यमंत्री डॉ यादव ने इस अवसर पर कहा कि विक्रमोत्सव में धीरे-धीरे विभिन्न प्रकार के आयाम जुड़ रहे हैं। भारतीय संस्कृति की यह विशेषता रही है कि यहां के लोगों ने हर प्रकार की चुनौतियों और विषम परिस्थितियों में अपने आप को दृढ़ रखा रख कर पूरे विश्व के समक्ष एक मिसाल पेश की है। भारतीय संस्कृति पर आधारित फिल्म फेस्टिवल हमारी कला और संस्कृति को पूरे विश्व के समक्ष प्रस्तुत करता है। इस फेस्टिवल में अतीत की कालजयी फिल्मों का प्रसारण किया गया है।चलित हिंदी फिल्मों की यात्रा दादा साहब फालके द्वारा निर्देशित फिल्म राजा हरिश्चंद्र से शुरू हुई है।हमारी भारतीय संस्कृति पर आधारित फिल्में आज भी समसामयिक हैं। आने वाले समय में और भव्य स्तर पर इस प्रकार के आयोजन किए जाने चाहिए। विक्रम महोत्सव के माध्यम से हम सम्राट विक्रमादित्य के स्वर्णिम काल को याद करते हैं। सम्राट विक्रमादित्य पर आधारित नाट्य और फिल्मों के माध्यम से पूरे विश्व में उनकी न्याय प्रियता और उनके सुशासन का संदेश जाता है। सम्राट विक्रमादित्य के विराट व्यक्तित्व में विभिन्न आयाम समाए हुए हैं। सही अर्थों में उज्जैन 64 कलाओं को प्रदान करने वाली नगरी है। मुख्यमंत्री डॉ यादव ने अपनी ओर से फिल्मोत्सव

समापन अवसर पर संस्कृति विभाग, कालिदास अकादमी और विक्रमादित्य शोध पीठ को शुभकामनाएं दीं।

समापन समारोह में प्रभारी मंत्री गौतम टेटवाल, विधायक अनिल जैन कालूहेड़ा, दिलीप सिंह परिहार, नगर निगम सभापति कलावती यादव, ओम जैन, कालिदास संस्कृत अकादमी के निदेशक गोविंद गंधे, नरेश शर्मा, राजेश सिंह कुशवाह मौजूद थे।

विक्रमादित्य शोध पीठ के निदेशक श्रीराम तिवारी ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने स्वागत भाषण देते हुए कहा कि मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव की मंशा के अनुरूप भारत के ज्ञान और संस्कृति के प्रकाश को दुनिया में पहुंचाने के उद्देश्य से अंतर्राष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल का आयोजन किया गया। जिसमें 90 फिल्मों का प्रसारण किया गया है। इसमें अधिकतर फिल्में भगवान श्री कृष्णा पर आधारित हैं। कार्यक्रम में साउथ अमेरिका के देश सूरीनाम की एंबेसी में कार्यरत सचिव सुनैना पीआर मोहन ने कहा कि उज्जैन शहर में उनका प्रथम बार आगमन हुआ है। यहां के लोगों के व्यक्तित्व में सादगी समाहित है। उज्जैन के कण-कण में ईश्वर का निवास है। हमारे देश के युवा अपने शहर, अपने प्रदेश और अपने देश पर गर्व करें, गर्व से कहें कि हम भारतीय हैं।

उल्लेखनीय है कि अंतराष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल के समापन के पूर्व गोपाल कृष्ण (हिन्दी), भगवान श्री कृष्णा (हिन्दी), श्री कृष्ण अर्जुन युद्धम (तेलुगु), मीरा रो गिरधा (राजस्थानी), भगवान श्री कृष्णा चैतन्य (बंगाली), श्री कृष्णा लीला (तमिल), भगतसयो (गुजराती) भाषा कि फिल्मों का प्रस्तुतिकरण किया गया।

सुप्रभात

सुनों बसंती हील उतारो
अपने मन की कील उतारो
नंगे पैर चलो धरती पर
बंजर पथ पर झील उतारो
जिनको तुम नाटी लगती हो
उनकी आँखें रोगग्रस्त हैं
उन्हें ज़रूरत है इलाज की
ख़ुद अपने से लोग ग्रस्त हैं
सच कहती हूँ सुनो साँवली
तुमसे ही तो रंग मिले सब
जब ऊँचे स्वर में हँसती हो
मानो सूखे फूल खिले सब
बिखरे बाल बनाती हो जब
पिन को आड़ा तिरछा करके
आस पास की सब चीज़ों को
रख देती हो अच्छा करके
मुझे नहीं मालूम बसंती
उक्त जगत का कौन नियंता
पर तुमको अर्पित यह उपमा
'स्वयं सिद्ध घोषित अभियंता'
तुमने स्वयं गढ़े जो रूपक
शब्द नहीं वो आलंबन है
अर्थों के मस्तक पे बढ़कर
अक्षर कर लेते चुम्बन हैं
जिसको नीची लगती हो तुम
उसकी सोच बहुत नीची है
सुनो बसंती हील उतारो
अपने मन की कील उतारो..।

– आकृति विज्ञा 'अर्पण'

सुबह सवेरे
भोपाल ■ गुरुवार, 27 मार्च 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

शादी के 15वें दिन कारोबारी पति की हत्या कराई

● मुंह दिखाई के पैसे से शूटर बुलाया; प्रॉपर्टी पर कब्जा कर प्रेमी संग रहना चाहती थी

औरैया(यूपी) (एजेंसी)। यूपी के औरैया में शादी के 15वें दिन ही दुल्हन ने अपने पति की हत्या करवा दी। उसने प्रेमी के साथ मिलकर शूटर को सुपारी दी। पुलिस के मुताबिक, पत्नी ने शादी और मुंह दिखाई में मिले पैसे और गहने बेचकर एक लाख रुपए शूटर को एडवांस दिए। पुलिस ने इस हत्याकांड का खुलासा किया। पुलिस ने आरोपी पत्नी प्रगति यादव, उसके प्रेमी अनुराग यादव और सुपारी किलर रामजी नागर को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है।

एसपी अभिजीत आर शंकर ने बताया कि दुल्हन ने शादी से पहले ही प्रेमी के साथ मिलकर पति की हत्या का प्लान बनाया था।

पूछताछ में उसने कहा कि घरवालों ने बिना मर्जी के दिलीप से शादी कराई। प्रगति की प्लानिंग थी कि विधवा होने के बाद वह पति की करोड़ों की प्रॉपर्टी पर कब्जा कर प्रेमी के साथ रहेगी।

औरैया में दिबियापुर के रहने वाले दिलीप (21) की 5 मार्च को फफूंद निवासी प्रगति से शादी हुई। दिलीप का परिवार कारोबारी है। परिवार में 20 से ज्यादा हाइड्रा मशीन और क्रेन हैं। 19 मार्च को दिलीप कन्नौज के उमर्द के पास शाह नगर में हाइड्रा लेकर काम करवाने गया था। दिलीप उसी दिन काम से लौट रहा था। दोपहर करीब डेढ़ बजे उसने बड़े भाई संदीप को फोन पर घर लौटने की सूचना दी। सहार थाना क्षेत्र के पास एक होटल पर दिलीप रुका। जहां कुछ बाइक सवार युवक उससे मिले। युवक खाई में फंसी कार को हाइड्रा से निकलवाने के बहाने दिलीप को अपने साथ ले गए।

इसके बाद दिलीप होटल से 7 किमी दूर पलिया गांव के पास गंभीर हालत में खून से लथपथ मिला। ग्रामीण उसे अस्पताल ले गए। 2 दिन जिंदगी-मौत से जूझने के बाद 21 मार्च को दिलीप की मौत हो गई। परिजन ने अज्ञात लोगों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराई। अंतिम संस्कार मैनपुरी के भोगांव में किया गया।

● **5 दिन ससुराल में रही, होली पर मायके गई, फिर मौत पर लौटी**– शादी के बाद 6 मार्च की सुबह प्रगति विदा होकर ससुराल आई थी। 10 मार्च को वह होली मनाने के लिए अपने मायके फफूंद चली गई। 21 मार्च को पति की मौत होने पर ससुराल आई। इसके बाद से ससुराल में ही रह रही थी। इस दौरान ससुराल वालों को जरा भी शक नहीं हुआ कि पति की हत्या प्रगति ने करवाई है।

● **वॉट्सएप पर पति की लोकेशन प्रेमी को भेजी**– पुलिस के मुताबिक, हत्या की पूरी साजिश वॉट्सएप कॉल और वीडियो कॉल पर रची। प्रगति ने दिलीप की लोकेशन बताने के लिए अनुराग को वॉट्सएप किया। अनुराग ने शूटरों से भी वॉट्सएप से संपर्क किया।

कोटा- पंखे में लगा था 'एंटी सुसाइड डिवाइस'

छात्र ने लोहे की रॉड पर फंदा डालकर किया सुसाइड; इस साल नौवां मामला

जयपुर (एजेंसी)। राजस्थान के कोटा से एक बार फिर एक छात्र द्वारा आत्महत्या करने का मामला सामने आया है। जवाहर नगर इलाके में मंगलवार को एक 17 वर्षीय मेडिकल छात्र ने अपने हॉस्टल के कमरे में लोहे की रॉड से कथित तौर पर फांसी लगा ली।

इस साल की शुरुआत से मतलब जनवरी से कोटा में अभी तक छात्र द्वारा आत्महत्या करने का ये नौवां मामला आया है। जवाहर नगर एसएचओ रामलक्ष्मण ने बताया कि बिहार के नालंदा जिले का निवासी हर्षराज शंकर पिछले साल अप्रैल से कोटा में एक कोचिंग संस्थान में मेडिकल प्रवेश परीक्षा की तैयारी कर रहा था।

लोहे की रॉड का जुगाड़ कर की आत्महत्या– पुलिस अधिकारी ने बताया कि हॉस्टल के केयरटेकर ने इस बारे में सूचना दी कि लड़के ने अंदर से कमरा बंद कर लिया है और कोई प्रतिक्रिया नहीं दे रहा है। जिसके बाद पुलिस की एक टीम मौके पर पहुंची और कमरे का दरवाजा तोड़ा तो पाया कि लड़का लोहे की रॉड से लटका हुआ है।

पुलिस ने बताया कि हॉस्टल के कमरे के पंखे में आत्महत्या निरोधक उपकरण लगे हुए थे, इस वजह से नीट अभ्यर्थी ने खुद को फांसी लगाने के लिए लोहे की रॉड का इंतजाम किया था।

गाजा में पहली बार हमास का विरोध

जंग से ऊब सड़कों पर उतरे हजारों फिलिस्तीनी, हमास को उखाड़ फेंकने के नारे लगाए

गाजा (एजेंसी)। गाजा में पहली बार हमास के खिलाफ विरोध प्रदर्शन शुरू हो गए हैं। मंगलवार को 3 जगहों पर विरोध प्रदर्शन हुए, जिसमें हजारों लोग शामिल हुए। लोगों ने हमास को आतंकी संगठन कहा और सत्ता छोड़ने की मांग की।

दरअसल, यहां के लोग इजराइल-हमास जंग से परेशान हो चुके हैं। सड़कों पर उतरे लोगों ने 'हमास बाहर जाओ, हमास आतंकी हैं', 'हम हमास को उखाड़ फेंकना चाहते हैं' के नारे लगाए। 'जंग खत्म करो' और 'फिलिस्तीन में बच्चे जीना चाहते हैं', लिखे पोस्टर लेकर प्रदर्शन किया। हमास के हथियारबंद लड़ाकों ने प्रदर्शन कर रहे लोगों के साथ मार-पीट भी की और उन्हें अलग-थलग करने की कोशिश की। इन प्रदर्शनों के सोशल मीडिया पर वीडियो वायरल हो रहे हैं।

4 वजहों से जंग नहीं चाहते गाजावासी

*बड़े पैमाने पर तबाही-

*पलायन- (20 लाख से ज्यादा लोग) को अपना घर छोड़कर भागना पड़ा।

*भुखमरी और बुनियादी चीजों का अभाव

*बच्चों और परिवारों पर असर

राणा सांगा को गद्दार कहने वाले सपा सांसद के घर हमला

आगरा में करणी सेना के कार्यकर्ता बुलडोजर लेकर पहुंचे

आगरा (एजेंसी)। राज्यसभा में राणा सांगा को गद्दार कहने वाले सपा सांसद रामजी लाल सुमन के आगरा स्थित घर पर बुधवार को करणी सेना के कार्यकर्ताओं ने हमला कर दिया। 1000 से ज्यादा कार्यकर्ता बुलडोजर लेकर सांसद के आवास पर पहुंचे। वहां जमकर तोड़फोड़ और पथराव किया। झड़प में कई पुलिसकर्मी घायल हो गए।

चाय पीकर बैठा 30 साल के युवक को आया हार्ट अटैक, मौत

सरदार शहर (चूरू) (एजेंसी)। चूरू जिले में 30 साल के युवक की हार्ट अटैक से मौत हो गई। युवक सुबह चाय पीकर घर में बैठा था। इस दौरान अचानक उसकी तबीयत बिगड़ गई और वह बेहोश हो गया। परिजन उसे अस्पताल लेकर पहुंचे, लेकिन उसकी पहले ही मौत हो गई थी। मामला सरदारशहर के बंधनाऊ गांव का है। सरदारशहर उप जिला अस्पताल के फिजिशियन डॉ. चंदन मोठसरा ने बताया- रामप्रताप (30) पुत्र रामेश्वर लाल निवासी बंधनाऊ को बुधवार को तबीयत बिगड़ने पर अस्पताल लाया गया था, लेकिन अस्पताल पहुंचने से पहले ही उसकी मौत हो गई थी। मौत का कारण हार्ट अटैक है। पोस्टमॉर्टम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया है।

लोकसभा में हम जो कहना चाहते हैं, कहने नहीं देते सदन अलोकतांत्रिक तरीके से चला रहे : राहुल गांधी

विपक्ष के 70 सांसदों के साथ लोकसभा स्पीकर से मिले

नई दिल्ली (एजेंसी)। बजट सत्र के दूसरे फेज का 11वां दिन था। इस दौरान विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने आरोप लगाया कि मुझे लोकसभा में बोलने नहीं दिया जाता है। संसद अलोकतांत्रिक तरीके से चलाई जा रही है।

उन्होंने कहा- विपक्ष के सवालों का जवाब नहीं मिलता है। संसद केवल सरकार के लिए चल रही है। इस बीच विपक्ष के 70 सांसद लोकसभा स्पीकर ओम बिरला से मिले। सांसदों ने स्पीकर से अपनी नाराजगी जताई।

राहुल गांधी ने कहा कि मुझे नहीं पता कि क्या हुआ। मैं खड़ा हुआ और कहा कि मुझे बोलने दीजिए। स्पीकर एक शब्द नहीं बोले, घूमकर चले गए। हाउस एडजर्न (सदन स्थगित) कर दिया गया।

मैंने कुछ नहीं किया। मैं बिल्कुल शांति से बैठा था। अभी भी मैंने एक शब्द नहीं बोला। पिछले 7-8 दिन में मैंने कुछ नहीं बोला है। ये नया तरीका है। डेमोक्रेसी में सरकार और अपोजिशन (विपक्ष) की जगह होती है। यहां अपोजिशन की जगह है ही नहीं। यहां सिर्फ सरकार की जगह है।

उस दिन प्रधानमंत्री जी ने कुंभ मेले के बारे में बोला। मैं कहना चाहता था कि कुंभ बहुत अच्छा हुआ। बेरोजगारी के बारे में बोलना चाहता था, लेकिन बोलने नहीं दिया। पता नहीं इनकी क्या थिंकिंग (सोच), क्या अप्रोच है? सच्चाई यही है कि हमें बोलने नहीं दिया जा रहा। हमारी मुख्य विपक्षी पार्टी है। मैं विपक्ष का नेता हूं। सदन बिल्कुल नॉन-डेमोक्रेटिक स्टाइल (अलोकतांत्रिक तरीके) से चलाया जा रहा है।

बड़े पर्दे पर दिखेगी सीएम योगी आदित्यनाथ की कहानी

मुंबई (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की बायोपिक का फर्स्ट लुक सामने आ गया है। 26 मार्च को सम्राट सिनेमैटिक्स ने अजेय: द अनटोल्ड स्टोरी ऑफ ए योगी का पहला लुक जारी किया। यह मोशन पोस्टर योगी आदित्यनाथ की बदलती जिंदगी की एक झलक पेश करती है, जो उनके आध्यात्मिक और राजनीतिक मार्ग को आकार देने वाले फैसलों को दर्शाता है।

इस फिल्म में योगी आदित्यनाथ के शुरुआती साल, नाथपंथी योगी बनने का उनका फैसला और उत्तर प्रदेश के सामाजिक-राजनीतिक परिदृश्य को बदलने वाले नेता के रूप में उनका विकास दिखाया जाएगा।यह फिल्म सम्राट सिनेमैटिक्स के बैनर तले ऋतु मेंगी ने प्रोड्यूस की है, जबकि इसका निर्देशन रवींद्र गौतम ने किया है। यह फिल्म शांतनु गुप्ता की बेस्टसेलिंग किताब 'द मॉन्क हू बिकेम चीफ मिनिस्टर' से प्रेरित है। फिल्म में ड्रामा, इमोशन, एक्शन और बलिदान का शानदार मिश्रण देखने को मिलेगा।

सीएम योगी के राजकीय विमान में आई खराबी

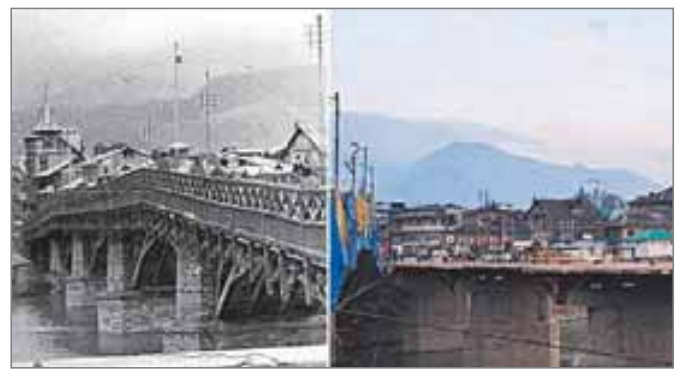

आगरा (एजेंसी)। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के राजकीय विमान में तकनीकी खराबी आई। खेरिया एयरपोर्ट से उड़ान भरने के बाद पायलट को जानकारी हुई। विमान के नौ मिनट हवा में रहने के बाद पायलट ने एयर ट्रैफिक कंट्रोलर को सूचना देकर खेरिया एयरपोर्ट पर ही लैंडिंग की। सीएम योगी दो घंटे एयरपोर्ट के वीआइपी लांज में बैठे। दिल्ली से दूसरा विमान आने पर शाम 5.40 बजे लखनऊ के लिए रवाना हुए मुख्यमंत्री।

श्रीनगर में 250 साल पुराने अमीरा कदल पुल से रौनक होगा लाल चौक

● यह पुल शहर की समृद्ध वास्तुकला की विरासत है

● पर्यटकों को मिलेगा शानदार अनुभव

श्रीनगर (एजेंसी)। कश्मीर तक ट्रेन हो या फिर विश्व का सबसे ऊंचा चिनाब ब्रिज... इस समय जम्मू-कश्मीर विकास की नई ऊंचाइयों को छू रहा है। इसी क्रम में लाल चौक के शहर के केंद्र के पास झेलम नदी पर अमीरा कदल लकड़ी के पुल को श्रीनगर स्मार्ट सिटी परियोजना के तहत पुनर्जीवित किया जा रहा है। अधिकारियों ने कहा कि पुराने पुल के मौजूदा खंभों पर लकड़ी का पैदल मार्ग बनाया जा रहा है। 7.17 करोड़ रुपये की इस परियोजना में खंभों की मरम्मत और अन्य काम शामिल हैं। इसका लक्ष्य शहर के सबसे पुराने अमीरा कदल लकड़ी के पुल को पुनर्जीवित करना और इसे एक सांस्कृतिक और दर्शनीय स्थल में बदलना है। यह नदी का जीवंत दृश्य प्रस्तुत करेगा और पर्यटकों को आकर्षित करेगा। इस पुल पर पर्यटक पैदल चल सकेंगे और सुंदर नजारों का लुत्फ उठा सकेंगे।

1774 पुराने पुल पर हो रहा मरम्मत का काम– मूल रूप से 1774 में दुर्रानी साम्राज्य के तहत कश्मीर के अफगान गवर्नर अमीर खान जवान शेर द्वारा निर्मित, पुल का श्रीनगर स्मार्ट सिटी परियोजना के हिस्से के रूप में महत्वपूर्ण नवीनीकरण किया जा रहा है। इसे आधुनिक वास्तुकला को पारंपरिक लकड़ी के साथ बनाया जा रहा है।

अब निर्मला सीतारमण पर कुणाल कामरा ने कसा तंज

सैलरी चुराने साड़ी वाली दीदी आई

नई दिल्ली (एजेंसी) महाराष्ट्र के उप मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे पर टिप्पणी कर विवादों में घिरे स्टैंड-अप कॉमेडियन कुणाल कामरा ने वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण पर तंज कसा है। उन्होंने अपने यूट्यूब चैनल पर एक वीडियो पोस्ट किया है, जहां वह एक गाने के जरिए वित्त मंत्री को 'निर्मला ताई' बुला रहे हैं और नीतियों पर सवाल खड़े कर रहे हैं। करीब डेढ़ मिनट के वीडियो में कामरा ने व्यंग करते हुए कहा,आपका टैक्स का पैसा हो रहा है हवा हवाई। इन सड़कों की बर्बादी करने सरकार है आई। मेट्रो है इनके मन में खोद कर लें अंगड़ाई। ट्रैफिक बढ़ाने ये है आई, ब्रिजेस गिराने ये है आई।

पेड़ काटना इंसान की हत्या से बदतर: सुप्रीम कोर्ट

● ताज महल के आस-पास 454 पेड़ काटे थे; प्रति पेड़ 1 लाख जुर्माना लगाया

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि बड़ी संख्या में पेड़ों को काटना किसी इंसान की हत्या से भी बदतर है। पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने वालों पर कोई दया नहीं दिखाई जानी चाहिए। सुप्रीम कोर्ट ने आगरा के ताज महल के आस-पास अवैध रूप से काटे गए प्रत्येक पेड़ के लिए एक लाख रुपए का जुर्माना लगाने को मंजूरी दी है। साथ ही जुर्माने के खिलाफ लगाई गई याचिका को खारिज कर दिया। जस्टिस अभय एस ओका और जस्टिस उज्जल भुइयां की बेंच ने स्पष्ट किया कि कोई भी व्यक्ति संबंधित अधिकारी या संस्थान से अनुमति लिए बिना पेड़ नहीं काट सकता। दरअसल, सुप्रीम कोर्ट एक याचिका की सुनवाई कर रहा था, जिसमें एक व्यक्ति ने पेड़ काटने पर जुर्माना लगाने पर जुर्माना और कार्रवाई न करने की मांग की थी।

कानून और पेड़ों को हल्के में नहीं लिया जा सकता– बेंच ने सीनियर एडवोकेट एडीएन राव के सुझाव को स्वीकारा कि अपराधियों को यह स्पष्ट संदेश दिया जाना चाहिए कि कानून और पेड़ों को हल्के में नहीं लिया जा सकता और न ही लिया जाना चाहिए। कोर्ट ने अपने आदेश में इस बात का बेंचमार्क भी तय किया है कि ऐसे मामलों में कितना जुर्माना लगाया जाना चाहिए।

454 पेड़ काटने पर प्रति पेड़ 1 लाख रुपए जुर्माना– न्यायालय ने केंद्रीय अधिकार प्राप्त समिति की रिपोर्ट स्वीकार कर ली है, जिसमें शिव शंकर अग्रवाल ने पिछले साल काटे गए 454 पेड़ों के लिए प्रति पेड़ 1 लाख रुपए (कुल 4.54 करोड़) का जुर्माना लगाया गया था।

सुप्रीम कोर्ट बोला- रेप पर इलाहाबाद हाईकोर्ट की टिप्पणी असंवेदनशील,फैसले पर रोक– सुप्रीम कोर्ट ने इलाहाबाद हाईकोर्ट के उस फैसले पर रोक लगा दी है, जिसमें हाईकोर्ट ने कहा था कि नाबालिग लड़की के ब्रेस्ट पकड़ना और उसके पायजामे के नाड़े को तोड़ना रेप या अटेम्प्ट टु रेप नहीं है।

लालू बोले-वक्फ संशोधन बिल का नीतीश समर्थन कर रहे

● तेजस्वी ने कहा-नागपुरिया कानून लागू नहीं होने देंगे, मुस्लिम संगठनों के प्रदर्शन में पीके भी हुए शामिल

पटना (एजेंसी)। पटना में वक्फ संशोधन बिल के खिलाफ बुधवार को गर्दनीबाग में मुस्लिम संगठनों ने प्रदर्शन किया। प्रदर्शन को आरजेडी का समर्थन मिला। धरनास्थल पर आरजेडी सुप्रीमो लालू यादव, नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव भी पहुंचे। दोपहर बाद प्रशांत किशोर भी गर्दनीबाग पहुंचे और वक्फ बिल के खिलाफ विरोध प्रदर्शन का समर्थन किया।

लालू यादव ने कहा- गलत हो रहा है। सरकार को देखना चाहिए। हम इसके विरोध में हैं। किसी के साथ अन्याय नहीं होगा। नीतीश कुमार उन लोगों के साथ हैं, वो इस बिल का समर्थन कर रहे हैं। जनता सब समझ रही है।

वहीं, सभा को संबोधित करते हुए तेजस्वी यादव ने कहा- किसी भी कीमत पर नागपुरिया कानून लागू नहीं होने देंगे। आप लोगों की लड़ाई में मजबूती से हम साथ हम खड़े हैं। आप लोग एक कदम चलिएगा तो हम चार कदम चलेंगे। इस कानून को रोकने का काम करेंगे। कुछ लोग साजिश कर रहे हैं। देश को तोड़ने का काम किया जा रहा है।

हक के लिए हम लोग लड़ेंगे

मुस्लिम संगठनों के प्रदर्शन को आजाद समाज पार्टी के अध्यक्ष चंद्रशेखर आजाद का भी समर्थन मिला है। प्रदर्शन में शामिल होने के लिए चंद्रशेखर आजाद पटना पहुंचे। उन्होंने कहा-आज देश में अजीब तरह का माहौल है। जिनके भी अधिकारों पर हमला होगा, उसकी रक्षा के लिए आगे आएंगे। बहुजन समाज, कमजोर वर्ग के अधिकारों पर हमले को रोकने के लिए संविधान ने विरोध का अधिकार दिया है। आज उसी का इस्तेमाल करने के लिए बिहार में हैं।

सौरभ चंद्राकर से जुड़े लोगों के ठिकानों पर सीबीआई रेड

भोपाल (नप्र)। केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) ने बुधवार को महादेव बेटिंग ऐप से जुड़े एक मामले में मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल सहित कोलकाता और दिल्ली में 60 स्थानों पर छापेमारी की। महादेव बुक, एक ऑनलाइन बेटिंग प्लेटफॉर्म है, जिसे रवि उप्पल और सौरभ चंद्राकर ने प्रमोट किया है, और ये दोनों इस वक्त दुबई में हैं।

सीबीआई के अनुसार, जांच में यह सामने आया है कि इन प्रमोटरों ने अपने अवैध नेटवर्क के संचालन को सुचारू रूप से चलाने के लिए सरकारी कर्मचारियों को भारी रकम 'सुरक्षा शुल्क' के तौर पर दी थी। महादेव ऐप के प्रमोटर सौरभ चंद्राकर को नवंबर 2024 में दुबई से गिरफ्तार किया गया था, जब इंटरपोल ने उनके खिलाफ रेड कॉर्नर नोटिस जारी किया था। यह नोटिस प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के अनुरोध पर जारी किया गया था।

भोपाल में बैक एंड शेक के मालिक के ठिकानों पर सर्चिंग- भोपाल में बैक एण्ड शेक के मालिक गिरीश तलरेजा उर्फ दुबई के ठिकानों पर भी सीबीआई ने सर्चिंग की है। उनके आईएसबीटी स्थित होटल पर भी सर्च कार्रवाई की गई है।

साहू समाज के नए भवन का लोकार्पण, मंत्री कृष्णा गौर ने दिए 5 लाख

भोपाल (नप्र)। राजधानी के भेल साहू समाज इकाई ने मां कर्मा देवी की जयंती धूमधाम से मनाई। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि राज्यमंत्री कृष्णा गौर ने साहू समाज के नए भवन का लोकार्पण किया। समारोह में

सिंगरौली जिला प्राधिकरण के अध्यक्ष दिलीप शाह भी मौजूद रहे। मंत्री गौर ने भवन की पहली मंजिल के लिए 5 लाख रुपए का सहयोग दिया।

कार्यक्रम में बोलते हुए मंत्री गौर ने कहा कि साहू समाज ने उन्हें बहुत स्नेह दिया है। उन्होंने समाज की हर समस्या को दूर करने का वादा किया। साथ ही समाज के बच्चों को अच्छी शिक्षा दिलाने का भी आश्वासन दिया। बीएचईएल साहू समाज के अध्यक्ष विकास साहू ने सभी समाज बंधुओं को जयंती की शुभकामनाएं दीं। उन्होंने मंत्री कृष्णा गौर का समाज को निरंतर सहयोग देने के लिए आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में समाज के दानदाताओं का सम्मान किया गया।

अमीर बनने की चाह में गांजा तस्कर बने दो दोस्त

भोपाल (नप्र)। भोपाल में जल्द अमीर बनने की चाह में दो दोस्त गांजा तस्करी करने लगे। इससे पहले एक ट्रेन में पानी बेचने और दूसरा मजदूरी का काम करता था। मुखबिर की सूचना पर क्राइम ब्रांच ने दोनों को गिरफ्तार किया है।

आरोपियों के कब्जे से 8.350 किलो ग्राम गांजा मिला है। यह गांजा अलग-अलग पैकेट में रखा गया था। आरोपियों के खिलाफ एनडीपीएस एक्ट के तहत कार्रवाई की गई है। एसीपी मुख्तार कुरैशी के मुताबिक एक तस्कर की पहचान सचिन कुचबंदिया और दूसरे की निखिल जायसवाल के रूप में हुई।

काम के बीच गांजा तस्करों के संपर्क में आया आरोपी

आरोपी निखिल ट्रेन में पानी बेचने का काम करता था। इस बीच वह गांजा तस्करों के संपर्क में आ गया। वहीं, सचिन मजदूरी करता है। मुखबिर की सूचना के बाद कोहेफिजा में वीआईपी गेस्ट हाउस के पास तस्करों की घेराबंदी की गई।

तलाशी के दौरान दोनों के बैग से गांजा बरामद हुआ। यह गांजा कहां से लाए? इस संबंध में पुलिस पूछताछ कर रही है। भोपाल पुलिस ने आम नागरिकों से ऐसे लोगों की जानकारी देने की अपील की है।

भोपाल में 1283 लोकेशन पर जमीनों के दाम 18 प्रतिशत बढ़ेंगे

विरोध में बिल्डर, सांसद-मंत्रियों से मिले; रोक के लिए कोर्ट जाने की चेतावनी

भोपाल (नप्र)। भोपाल में 1 अप्रैल से नई कलेक्टर गाइडलाइन लागू हो जाएगी। इसमें 1283 लोकेशन पर प्रॉपर्टी के रेट औसतन 18 फीसदी तक बढ़ाने का प्रस्ताव है। कहीं-कहीं तो 5 प्रतिशत से 300 प्रतिशत तक दरें बढ़ेंगी।

अब यह प्रस्ताव केंद्रीय मूल्यांकन बोर्ड को भेजा जाएगा। इससे पहले विरोध भी हो रहा है। मंत्री, सांसद-विधायकों के सामने मुद्दा उठाने के बाद अब क्रेडाई मुख्य सचिव अनुराग जैन से भी मिलेगा।

वहीं, एक्सपर्ट इस पर रोक लगाने के लिए कोर्ट का दरवाजा खटखटाने की बात भी कह रहे हैं। क्रेडाई अध्यक्ष मनोज मीक ने बताया कि भोपाल में क्रेडाई, कलेक्टर गाइडलाइन पर रोक लगाने की मांग कर रहा है, क्योंकि यहां लगातार कलेक्टर गाइडलाइन बढ़ रही है। मीके मुताबिक-इसे लेकर मंत्रियों, सांसदों और विधायकों तक से मिल चुके हैं। उन्होंने भी गाइडलाइन को बढ़ना अनुचित बताया है। इसलिए भोपाल की कलेक्टर गाइडलाइन तुरंत रोकी जानी चाहिए।

केंद्रीय मूल्यांकन कमेटी को भेजा जा रहा प्रस्ताव- 13 मार्च को उप मूल्यांकन समिति की मीटिंग हुई थी। इसमें भोपाल की कलेक्टर गाइडलाइन दरें बढ़ाने का प्रस्ताव है। इसे लागू करने से पहले दावा-आपत्ति लिए गए। इस दौरान करीब

200 दावा-आपत्ति आए। वहीं, बैठक के बाद अब केंद्रीय मूल्यांकन कमेटी को प्रस्ताव भेजा जा रहा है।भोपाल के प्रभारी मंत्री चैतन्य काश्यप और विधायक भगवानदास सबनानी से मिलकर गाइडलाइन रोकने की मांग करते क्रेडाई पदाधिकारी।

200 से ज्यादा आपत्ति, कोलार-होशंगाबाद रोड की ज्यादा- राजधानी में 2887 लोकेशन में से 1283 में 5 प्रतिशत से 300 प्रतिशत तक दरें बढ़ाने का प्रस्ताव है। कोलार और होशंगाबाद रोड पर दर बढ़ोतरी को लेकर सबसे ज्यादा आपत्तियां आई हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में 200 से 300 प्रतिशत तक वृद्धि पर बैठक में चर्चा होगी।

संभावना है कि इस बढ़ोतरी को आंशिक रूप से वापस लिया जा सकता है। 2011-12 में जमीनों के दाम में 31.50 प्रतिशत का इजाफा हुआ था। इस बार औसतन 18 प्रतिशत वृद्धि प्रस्तावित है। ग्रामीण क्षेत्रों में दरें 300 प्रतिशत तक बढ़ सकती हैं।

दूसरी ओर, भोपाल जिले में लोकेशन की संख्या 3883 से घटाकर 2885 कर दी गई हैं। 1283 लोकेशन पर गाइडलाइन दरें बढ़ाने का प्रस्ताव है, जबकि 1601 लोकेशन पर दरें जस की तस रहेंगी। 7 नई लोकेशन जोड़ी गई हैं। पिछले साल 1443 लोकेशन पर 7.19 प्रतिशत की औसत बढ़ोतरी की गई थी।

गाइडलाइन को लेकर क्रेडाई की मांगें

- कलेक्टर गाइडलाइन दरों में वृद्धि पर फौरन रोक लगाई जाए।
- साल 2019-20 के स्तर पर दरों को वापस लाया जाए।
- कृषि भूमि सहित सभी जरूरी उपबंध (प्रोविजन) खत्म किए जाएं।
- तीन साल तक किसी भी बढ़ोतरी पर प्रतिबंध लगाया जाए।
- स्वतंत्र विशेषज्ञ समिति बनाकर गाइडलाइन दर की तय प्रक्रिया को पारदर्शी बनाया जाए।

आयुष्मान कार्ड के बावजूद नवजात के लिए बाहर से मंगवाए 28 हजार रुपए के इंजेक्शन

दूसरे अस्पताल ने कहा - इसकी जरूरत ही नहीं थी

भोपाल (नप्र)। स्वास्थ्य सुविधाओं में सुधार के तमाम दावों के बावजूद अस्पतालों की लापरवाही के मामले सामने आ रहे हैं। ताजा मामला हमीदिया की नई बिल्डिंग में संचालित सुल्तानिया अस्पताल का है, जहां आयुष्मान कार्ड होने के बावजूद नवजात के परिजनों को महंगे इंजेक्शन बाहर से खरीदने पड़े। नवजात के पिता अशोक प्रजापति के अनुसार, उनकी पत्नी रिंकू प्रजापति ने चार मार्च को सुल्तानिया में बच्चे को जन्म दिया। जन्म के बाद नवजात का हृदय काम नहीं कर रहा था, जिसके कारण उसे आठ दिन तक वेंटिलेटर पर रखा गया। डॉक्टरों ने बताया कि उसके दिल में छेद है और सर्जरी की आवश्यकता होगी। इसके लिए जेके अस्पताल, एम्स भोपाल, बंसल या रायपुर रेफर करने की बात कही गई। अस्पताल में छह मार्च से इंजेक्शन लगाने की प्रक्रिया शुरू हुई और 28 हजार रुपये के इंजेक्शन बाहर से खरीदने पड़े, जबकि आयुष्मान योजना के तहत इलाज मुफ्त होना चाहिए था।

परिजनों को जबरन इंजेक्शन खरीदने के लिए किया मजबूर- पिता अशोक प्रजापति का आरोप है कि अस्पताल प्रशासन ने जबरन कागजों पर साइन करवाकर उन्हें महंगे इंजेक्शन बाहर से खरीदने के लिए मजबूर किया। इसके अलावा अस्पताल प्रबंधन ने नवजात को बाहर की एंबुलेंस से ले जाने की अनुमति नहीं दी और हमीदिया परिसर की एंबुलेंस से ही ले जाने को कहा गया। हमीदिया से बाहर जाने के लिए एक एंबुलेंस का किराया 2500 रुपये था, जबकि बाहर की एंबुलेंस से मात्र 1000 रुपये में यह सेवा मिल सकती थी। मजबूरी में परिजनों को हमीदिया की एंबुलेंस से ही बच्चे को जेके अस्पताल ले जाना पड़ा।

जेके अस्पताल में खुलासा, अधिक इंजेक्शन लगाए गए- डिस्चार्ज के बाद अशोक प्रजापति के आयुष्मान कार्ड से 22 हजार रुपये काट लिए गए। जब वे अपने बच्चे को जेके अस्पताल लेकर पहुंचे। तो वहां डाक्टरों ने जांच करने के बाद बताया कि नवजात को केवल चार इंजेक्शन ही लगाने थे, लेकिन सुल्तानिया अस्पताल में सात इंजेक्शन लगाए गए। डॉक्टरों ने यह भी स्पष्ट किया कि सर्जरी की जरूरत तो होगी, लेकिन इसे बाद में भी कराया जा सकता है।

स्वास्थ्य व्यवस्था पर उठे सवाल

समाजसेवी मुकेश रघुवंशी ने बताया कि इस मामले ने सरकारी अस्पतालों की व्यवस्था पर सवाल खड़े कर दिए हैं। आयुष्मान योजना के बावजूद मरीजों से इलाज के नाम पर पैसे वसूले जा रहे हैं। सरकार को इस मामले की जांच कर दोषियों पर सख्त कार्रवाई करनी चाहिए। ताकि भविष्य में किसी अन्य परिवार को इस तरह की परेशानी का सामना न करना पड़े।

इस मामले की जानकारी ली जाएगी। यदि बच्चे को कोई गंभीर समस्या थी, तो उसे पीडियाट्रिक विभाग में भर्ती किया गया होगा। वहां किस डाक्टर ने इंजेक्शन मंगवाए, इसकी जांच की जाएगी। हमारे अस्पताल में आयुष्मान कार्ड से ही दवाइयां और इंजेक्शन उपलब्ध कराए जाते हैं।

- डॉ. शबाना सुल्ताना, प्रमुख, सुल्तानिया अस्पताल।

भोपाल में 29 मार्च को जुटेंगे देशभर के कवि

अटल पथ पर होगा कवि सम्मेलन, महिला, बुजुर्ग-दिव्यांगजनों के लिए रहेगी अलग बैठक व्यवस्था

भोपाल (नप्र)। भोपाल में 29 मार्च को गुड़ी पड़वा पर देशभर के कवि जुटेंगे। वे देर रात तक कविता का पाठ करेंगे। 'कर्मश्री' संस्था के बैनर तले अटल पथ पर 25वां अखिल भारतीय कवि सम्मेलन होगा। इसमें महिला, बुजुर्ग और दिव्यांगजनों के लिए बैठने की व्यवस्था अलग-अलग रहेगी। कर्मश्री संस्था के अध्यक्ष और हुजूर विधायक रामेश्वर शर्मा द्वारा यह कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। अभा कवि सम्मेलन

का यह लगातार (कोरोना काल को छोड़कर) 25वां वर्ष है। विधायक शर्मा ने बताया कि गुड़ी पड़वा, चैत्र नवरात्र और चैती चांद पर पिछले 24 साल से कवि सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। अबकी बार इस आयोजन का 25वां वर्ष है।

ये कवि मौजूद रहेंगे- उन्होंने बताया, कवि सम्मेलन में देश के विभिन्न स्थानों से आए ख्यातनाम कवि शिरकत करेंगे। जिनमें पद्मश्री डॉ. सुनील जोगी, नई दिल्ली, डॉ. सुरेंद्र दुबे, रायपुर, कविता तिवारी, लखनऊ, डॉ. अनिल चौबे, वाराणसी, सुदीप भोला, जबलपुर, गौरी मिश्रा, उत्तराखंड, अमन अक्षर, इंदौर, विकास बौखल, बाराबंकी, श्वेता सिंह, वड़ोदरा और मुकेश मासूम, खातेगांव शामिल हैं। कवि सम्मेलन का मंच संचालन सर्वरस के विख्यात कवि शशिकांत यादव शशि, देवास करेंगे।

बैठक की यह व्यवस्था- कर्मश्री अध्यक्ष शर्मा ने बताया, कवि सम्मेलन में महिलाओं और बुजुर्गों के बैठने के लिए अलग से व्यवस्था की जा रही है। वृद्ध एवं निशक्तजनों के लिए कुर्सियों की व्यवस्था की जाएगी।

विवाद के बाद ऑटो में आग लगाई

चालकों ने आपसी रंजिश के चलते फूंक दिया ऑटो, मालिक को भी पीटा

भोपाल (नप्र)। भोपाल के रोहित नगर में दो ऑटो चालकों का एक अन्य ऑटो चालक से विवाद हो गया। आरोपियों ने पहले फरियादी को पीटा फिर उसके ऑटो में आग लगा दी। पुलिस ने शिकायत दर्ज कर मामले की जांच शुरू कर दी है। आग लगाने वाले दोनों आरोपियों को हिरासत में ले लिया गया है।

पुलिस के मुताबिक फरियादी मोनू सोनारे (35) बावड़िया कलां में रहता है। आरोपी दीपक और बंटी उसके पुराने दोस्त हैं। तीनों मंगलवार को शराब पार्टी कर रहे थे। तभी नशे की हालत में दीपक और बंटी का मोनू से विवाद हो गया।

विवाद के बाद आरोपी ने फरियादी के साथ मारपीट की।इसके बाद उसके ऑटो में पेट्रोल छिड़ककर आग लगा दी। एएसआई शिव नारायण साहू ने बताया कि दोनों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। उनका पुराना रिकार्ड खंगाला जा रहा है। तीनों आपस में दोस्त हैं। नशे की हालत में हुए विवाद के बाद मारपीट की गई है। मौके पर मौजूद लोगों ने आरोपियों को पकड़कर पुलिस के हवाले किया था।

आधे घंटे तक जलता रहा ऑटो- ऑटो में आग की सूचना राहगीरों ने तत्काल पुलिस को दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने राहगीरों की मदद से आग को बुझाया। इस दौरान करीब आधे घंटे तक ऑटो सुलगता रहा। बताया जा रहा है कि ऑटो सीएनजी था, लिहाजा ब्लॉस्ट की आशंका के चलते सड़क पर ट्रैफिक भी रोकना पड़ा।

मार्च में अवकाश के दिनों में भी खुलेंगे बिजली बिल भुगतान केन्द्र

भोपाल (नप्र)। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के कार्य क्षेत्र में 29 मार्च शनिवार, 30 मार्च रविवार व 31 मार्च ईद-उल-फितर को बिल भुगतान केन्द्र सामान्य दिवसों की तरह कार्य करते रहेंगे। भोपाल शहर वृत्त के अंतर्गत चारों शहर संभाग यथा पश्चिम, पूर्व, दक्षिण तथा उत्तर संभाग के अंतर्गत सभी जोनल कार्यालय और दानिश नगर, मिसरोद, मण्डीदीप में बिल भुगतान केन्द्र उक्त अवकाश के दिनों में भी सामान्य कार्य दिवस की तरह खुले रहेंगे। बिजली उपभोक्ताओं से अपील है कि वे राजधानी के जोनल ऑफिस में पीओएस मशीन से कैश के जरिए बिल भुगतान तथा ऑनलाइन माध्यम से भी बिल भुगतान कर सकते हैं। कंपनी ने यह भी निर्देश दिए हैं कि कंपनी कार्य क्षेत्र के सभी 16 जिलों में बिजली वितरण केन्द्र/बिल भुगतान केन्द्र अवकाश के दिनों में खुले रहेंगे। इसके लिए सभी मैदानी महाप्रबंधकों को निर्देशित किया गया है।

प्रदेश में तैनात होंगे 6 साइबर कमांडो, हैकिंग और वायरस के हमलों को रोकेंगे

साइबर अपराधों की जांच में भी ये सहयोग करेंगे

भोपाल (नप्र)। देश में आतंकी घटनाओं से लेकर वीवीआईपी की सुरक्षा में जिस तरह कमांडो तैनात रहते हैं, उसी तरह साइबर हमले से निपटने, साइबर जालसाजों के नेटवर्क का राजफाश करने के लिए प्रदेश में कमांडो पदस्थ होंगे। अप्रैल से छह कमांडो काम करने लगेंगे। मप्र के लिए साइबर कमांडो के पहले बैच का छह माह का प्रशिक्षण 31 मार्च को पूरा हो रहा है। बता दें कि केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने देशभर में अलग-अलग बैच में मिलाकर पांच हजार कमांडो तैनात करने का निर्णय लिया है।

दूसरे बैच में 39 पुलिसकर्मियों को भेजा जाएगा- पुलिस मुख्यालय के अधिकारियों ने बताया कि दूसरे बैच में प्रदेश के 39 पुलिसकर्मियों को प्रशिक्षण के लिए भेजा जाएगा। परीक्षा के बाद इनका चयन भी हो चुका है। जल्द ही यह तय हो जाएगा कितने पुलिसकर्मियों को कहां प्रशिक्षण के लिए भेजा जाएगा। प्रशिक्षण लिए जाने वालों में आरक्षक से लेकर उप पुलिस अधीक्षक स्तर तक के अधिकारी शामिल हैं।

यह काम करेंगे साइबर कमांडो

- **साइबर सुरक्षा** - साइबर खतरों से नेटवर्क और डाटा को सुरक्षित रखना।
- **साइबर हमले से सुरक्षा-** कमांडो साइबर नेटवर्क या सिस्टम में हैकिंग और वायरस के हमलों से निपटने के लिए काम करेंगे। हमले की स्थिति में त्वरित निराकरण के लिए काम करेंगे। खतरों से आगाह भी करेंगे।
- **नेटवर्क की निगरानी-** साइबर कमांडो की जिम्मेदारी नेटवर्क की निगरानी करने की रहेगी।
- **डेटा सुरक्षित रखने का काम-** महत्वपूर्ण संस्थानों का डेटा लीक नहीं होने पाए, इसके लिए भी सुझाव देंगे।
- **अपराधों की जांच-** बड़े साइबर अपराधों की जांच और डाटा के विश्लेषण में सहयोग करेंगे। साथ ही साइबर सुरक्षा की नीतियां बनाने में सहयोग करेंगे।

दूसरे बैच के लिए भी चयन किया गया

हमारे छह पुलिसकर्मी साइबर कमांडो का प्रशिक्षण ले रहे हैं, जो शीघ्र आ जाएंगे। इसके अतिरिक्त दूसरे बैच के लिए भी चयन कर लिया गया है।

- ए साई मनोहर, एडीजी साइबर

शिवराज, वीडी, भूपेंद्र सिंह की सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई टली

23 अप्रैल को अगली तारीख, कांग्रेस सांसद तन्खा ने लगाया था 10 करोड़ का मानहानि केस

भोपाल (नप्र)। केन्द्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान के खिलाफ कांग्रेस सांसद विवेक तन्खा द्वारा 10 करोड़ की मानहानि के मामले में आज सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई टल गई। अब 23 अप्रैल को सुनवाई होगी। पिछले हफ्ते 19 मार्च को सुप्रीम कोर्ट में इस मामले की सुनवाई हुई थी। जिसमें विवेक तन्खा की तरफ से दर्ज कराए गए आपराधिक मानहानि मामले में कोर्ट ने शिवराज सिंह चौहान को अधीनस्थ न्यायालय के समक्ष व्यक्तिगत पेशी से छूट दी थी।

वरिष्ठ अधिवक्ता विवेक तन्खा का आरोप है कि केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान, भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा और पूर्व मंत्री भूपेंद्र सिंह ने राजनीतिक लाभ के लिए उनके खिलाफ समन्वित, दुर्भावनापूर्ण, झूठा और मानहानिकारक अभियान चलाया और मध्यप्रदेश में 2021 के पंचायत चुनाव में अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) आरक्षण का विरोध करने का आरोप लगाया था। बीते 19

मार्च को सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस एमएम सुंदरेश और जस्टिस राजेश बिंदल की पीठ ने शिवराज और बीजेपी के दो अन्य नेताओं की याचिका पर सुनवाई आज 26 मार्च तक टाल दी थी।

मानहानि को रद्द करने दायर हुई याचिका मध्यप्रदेश हाईकोर्ट के 25 अक्टूबर के उस आदेश के खिलाफ शिवराज सिंह चौहान की अपील पर सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई होनी है। जिसमें मानहानि मामले को रद्द करने से इनकार कर दिया गया था। इससे पहले सुप्रीम कोर्ट ने मानहानि मामले में तीनों भाजपा नेताओं के खिलाफ जमानती वारंट की तामील पर रोक लगा दी थी। अदालत ने शिवराज चौहान और अन्य भाजपा नेताओं की अपील पर तन्खा से जवाब मांगा था।

तन्खा की ओर सिब्बल रखेंगे पक्ष- शिवराज सिंह चौहान की तरफ से पैरवी सीनियर एडवोकेट महेश जेठमलानी, जबकि तन्खा की तरफ से वरिष्ठ वकील कपिल सिब्बल और अधिवक्ता सुमीर सोढ़ी पैरवी कर सकते हैं।विवेक तन्खा ने तीनों नेताओं पर ओबीसी विरोधी होने के बयान पर मानहानि का दावा लगाया था।

जनवरी 2024 में दर्ज हुआ था मानहानि का मामला- दरअसल, मध्यप्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के साथ भाजपा प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा और पूर्व मंत्री भूपेंद्र सिंह ने विवेक तन्खा को लेकर एक बयान दिया था। जिसमें उन्हें ओबीसी विरोधी बताया था। इस मामले में विवेक तन्खा ने तीनों नेताओं पर 10 करोड़ रुपए का मानहानि का दावा करते हुए जबलपुर जिला कोर्ट में केस दायर किया था। उन्होंने बताया था कि भाजपा नेताओं ने उन्हें ओबीसी विरोधी बताया, इससे उनकी छवि धूमिल हुई है।

जिसके बाद 20 जनवरी 2024 को अदालत ने तीनों भाजपा नेताओं के खिलाफ भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) की धारा 500 के तहत मानहानि का मामला दर्ज कर उन्हें तलब किया था। हाईकोर्ट में बीजेपी नेताओं ने आरोपों का खंडन करते हुए दलील दी थी कि तन्खा द्वारा संलग्न समाचार पत्रों की कतरनें मानहानि की शिकायत का आधार नहीं बन सकतीं और अधीनस्थ अदालत इसका संज्ञान नहीं ले सकती।

तन्खा ने तीनों नेताओं से माफी मांगने को कहा था

साल 2021 में सुप्रीम कोर्ट ने एमपी में पंचायत चुनाव में 27 प्रतिशत ओबीसी आरक्षण पर रोक लगा दी थी। इस दौरान विवेक तन्खा ने याचिकाकर्ताओं की ओर से पंचायत और निकाय चुनाव में रोटेशन और परिसीमन को लेकर पैरवी की थी। बीजेपी नेताओं ने विवेक तन्खा को ओबीसी विरोधी बताते हुए उनके खिलाफ बयानबाजी की थी।विवेक तन्खा ने तत्कालीन सीएम शिवराज सिंह चौहान, बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा और तत्कालीन मंत्री भूपेन्द्र सिंह से सार्वजनिक माफी मांगने की बात कही थी, लेकिन तीनों नेताओं ने माफी नहीं मांगी। जिसके बाद विवेक तन्खा ने कोर्ट में उनके खिलाफ 10 करोड़ रुपए का मानहानि केस दायर किया था। जिस पर सुनवाई करते हुए एमपी-एमएलए कोर्ट जबलपुर ने ये मुकादमा दर्ज किया था।

संपादकीय

मोदी का ईदी गिफ्ट !

इस बार ईदुल फितर पर भाजपा द्वारा देश में 32 लाख मुसलमानों को बतौर ईदी सौगात- ए- मोदी का वितरण भले ही एक सुनियोजित सियासी चाल हो, लेकिन इसने मुस्लिम वोटों की ठेकेदार पार्टियों में खलबली मचा दी है। सौगात- ए- मोदी का आगामी चुनावों में भाजपा के पक्ष में और मोदी के समर्थन में वोटों में परिवर्तन कितना होता है, यह कहना मुश्किल है, लेकिन यह भाजपा का स्मार्ट मूव है, इसमे दो राय नहीं। दरअसल मुसलमानों के पवित्र माह रमजान के आखिरी हफ्ते में भाजपा ने यह चाल चलकर खलबली मचा दी कि वह देश में अल्पसंख्यकों का दिल जीतने के लिए बड़े पैमाने पर तोहफे बांटेगी। यूं तो इस तरह के तोहफे ईसाइयों, सिखों और बौद्धों आदि को भी बांटने की बात है, लेकिन चूंकि देश में मुस्लिम सबसे बड़ा अल्पसंख्यक समुदाय है और जिसे घोर भाजपा और मोदी विरोधी माना जाता है, को तोहफे देना अपने आप में हैरान करने वाली बात है। बताया जा रहा है कि देश की योजना 32 हजार मस्जिदों से प्रति मस्जिद 100 किट बांटने की है। इस महाभियान की शुरूआत मंगलवार से हुई। तोहफे बांटने की जिम्मेदारी भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चे को सौंपी गई है। मोर्चे के 32 हजार कार्यकर्ता देश की 32 हजार मस्जिदों के साथ मिलकर जरूरतमंदों तक ये किट पहुंचाएगी। सौगात-ए-मोदी किट में कपड़े और खाने-पीने का सामान है। इसमें महिलाओं के लिए सूट, पुरुषों के लिए कुर्ता-पायजामा, दाल, चावल, सेवई, सरसों तेल, चीनी, कपड़े, मेवा, खजूर शामिल हैं। प्रत्येक किट की कीमत 500 से 600 रू. के करीब बताई गई है। इस हिसाब से भाजपा 160 करोड़ रू. खर्च करेगी।

भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जमाल सिद्दीकी का कहना है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी हर त्योहार के जश्न और हर किसी की खुशी में शामिल होते हैं। हम हर त्योहार को रंगों से भरपूर बनाने का प्रयास कर रहे हैं। आज हम सौगात-ए-मोदी किट बांट रहे हैं। क्योंकि यह रमजान का महीना है। सभी की आस्था का सम्मान किया जाना चाहिए। भाजपा और एनडीए के कुछ नेताओं ने इसे प्रधानमंत्री के 'सबका साथ, सबका विकास' का सुफल बताया है। लेकिन विपक्ष इस चाल के पीछे राजनीतिक मंशा भांप रहा है। विपक्षी नेताओं का कहना है कि पीएम ईद का गिफ्टो नहीं दे रहे बल्कि सीधे तौर पर बदले में वोट मांग रहे हैं। विपक्षी नेताओं का कहना है कि सरकार मुसलमानों को गिफ्ट बांटने की जगह उन्हें रोजगार वगैरह दिलवाए। बसपा सुप्रीमो मायावती ने भी इसे राजनीतिक स्वार्थ से प्रेरित बताया है। कुछ मुस्लिम नेताओं ने इसका स्वागत भी किया है। हालांकि राजनीतिक प्रेक्षकों का मानना है कि भाजपा द्वारा इस तरह पहली बार ईदी बांटने के पीछे असली निशाना बिहार में होने वाले विधानसभा चुनाव हैं। बिहार में 18 फीसदी मुस्लिम वोट है, जिसका बड़ा हिस्सा राजद को और बाकी भाग कांग्रेस, जद यू और लोजपा को मिलता है। भाजपा गिफ्ट बांटकर यह संदेश देना चाहती है कि वह मुसलमानों की विरोधी नहीं है। वह यह भी जानती है कि बिहार में हिंदू मुसलमान वाली राजनीति नहीं चलती। हालांकि इस गिफ्ट पॉलिटिक्स से भाजपा को चुनाव में कितना मुस्लिम वोट मिलेगा, कहना मुश्किल है, लेकिन अगर वह 10-15 फीसदी वोट भी काट पाई तो चुनाव नतीजे बदल सकते हैं। यूं केन्द्र और राज्य सरकार की कल्याणकारी योजनाएं भी सभी के लिए हैं। मुसलमान भी उनका भरपूर फायदा उठाते हैं। लेकिन जब वोट देने की बात आती है तो वो अमूमन लामबंद होकर भाजपा को हराने के लिए वोट करते हैं। इस प्रवृत्ति को तोड़ना आसान नहीं है। फिर भी भाजपा के इस मूव से विपक्षी पार्टियां चिंता में जरूर पड़ गई हैं।

नजरिया

रमेश सर्राफ धमोरा

लेखक पत्रकार हैं।

कैसे रूक पायेगा राजनीति में बढ़ता अपराधीकरण

हमारे देश के राजनेताओं में दिन-प्रतिदिन नैतिकता कम होती जा रही है। कई बड़े नेता आए दिन विवादास्पद बयान देखकर चर्चाओं में बने रहते हैं। वहीं बहुत से निर्वाचित विधायकों, सांसदों, मंत्रियों सहित अन्य जनप्रतिनिधियों पर अपराधिक मामले दर्ज हो रहें हैं। जिससे राजनीति के क्षेत्र में काम करने वालों की छवि खराब होती जा रही है। देश की राजनीति में आज अपराध का इतना घालमेल हो गया है कि पता ही नहीं चलता कि कौन सा जनप्रतिनिधि अपराधी है और किसकी छवि स्वच्छ है। अपराधी प्रवृत्ति के लोगों के नेता बनने से जहां राजनीतिक दागदार हुई है। वहीं नेताओं की जनता की दूरी भी बढ़ने लगी है। मौजूदा समय में राजनीतिक व्यवसाय बन चुकी है। राजनीति में वही लोग सफल होते हैं जो या तो बड़े नेताओं के परिवार से है या फिर बहुत पैसे वाले हैं। राजनीति के क्षेत्र में अब सेवा, संगठन, वफादार कार्यकर्ताओं का कोई महत्व नहीं रह गया है। राजनीति पूरी तरह पैसों की चकाचौंध में लिप्त हो गई है।

एक समय था जब धरातल पर काम करने वाला पार्टी कार्यकर्ता आगे चलकर जनप्रतिनिधि बनता था। जमीन से उठकर आगे आने वाला नेता आम जनता से जुड़ा रहता था और वह जनता के सुख-दुख से वाकिफ भी होता था। इसलिए वह आमजन के हित में काम करता था। मगर अब लोग पैसे के बल पर पैराशूट से उतरकर राजनीति करने लगे हैं। वह पैसे के बल पर ही चुनाव जीत जाते हैं। इसलिए उन्हें आमजन की समस्याओं से कोई लेना-देना नहीं रहता है। ऐसे नेता पांच सितारा संस्कृति के वाहक होते हैं। ऐसे नेता राजनीति में आने के लिए पहले खूब पैसा खर्च करते हैं और जब किसी पद पर पहुंच जाते हैं तो जमकर भ्रष्टाचार कर पैसा कमाते हैं। ऐसे लोगों के कारण ही आज राजनीति समाज सेवा की बजाय व्यवसाय बन गई है।

1971 के लोकसभा चुनाव में झुंझुनू सीट पर देश के सबसे बड़े औद्योगिक घराने के कृष्ण कुमार बिड़ला को हराने वाले शिवनाथ सिंह गिल को मैंने 1998 से 2003 में विधायक के रूप में देखा है। वह अपने क्षेत्र से जयपुर जाते या अपने घर से विधानसभा जाते हमेशा सरकारी बस का ही उपयोग करते थे। कभी निजी गाड़ियों से नहीं घूमते थे। इसी के चलते उन्होंने राजनीति में 50 साल लंबी पारी खेली थी। वह ईमानदार थे इसीलिए ईमानदारी से रहते थे। आज हम देखते हैं कि राजनीतिक दलों के छोटे-छोटे कार्यकर्ता भी कई लाख रूपयों की महंगी गाड़ियों में घूमते हैं। पार्टी का कोई नेता उनसे यह नहीं पूछता है कि इतनी महंगी गाड़ियां खरीदने के लिए पैसे कहां से आता है। सबको पता है की राजनीति में आज छूट-भैया नेता भी सत्ता की दलाली में पैसा कमा रहे हैं। दलाली के पैसों में बड़े नेताओं का भी हिस्सा होता है। इसीलिए उनकी तरफ कोई अंगुली नहीं उठाता हैं।

चुनाव सुधार पर काम करने वाली एक गैर सरकारी

संगठन एसोसिएशन ऑफ डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स की एक रिपोर्ट में सामने आया है कि देश के 45 प्रतिशत विधायकों पर आपराधिक मामले दर्ज हैं। इस संगठन ने देश के 28 राज्यों और विधानसभा वाले तीन केंद्र शासित प्रदेशों के कुल 4123 विधायकों में से 4092 के चुनावी हलफनामे का विश्लेषण किया है। जिसमें आंध्र प्रदेश के सबसे ज्यादा 174 में से 138 यानी 79 प्रतिशत विधायकों ने जबकि सिक्किम में सबसे कम 32 में से सिर्फ एक विधायक 3 प्रतिशत ने अपने खिलाफ आपराधिक मामले घोषित किए हैं। तेलुगु देशम पार्टी के सबसे ज्यादा 134 विधायकों में से 115 यानि 86 प्रतिशत पर आपराधिक मामले दर्ज हैं।

उक्त रिपोर्ट से पता चला कि 1861 विधायकों ने अपने खिलाफ आपराधिक मामले दर्ज होने की घोषणा की है। इसमें 1205 पर हत्या, हत्या की कोशिश, अपहरण और महिलाओं के खिलाफ अपराध जैसे गंभीर आरोप हैं। रिपोर्ट के अनुसार 54 विधायकों पर भारतीय दंड संहिता की धारा 302 के तहत हत्या के आरोप हैं। वहीं 226 पर धारा 307 और भारतीय न्याय संहिता की धारा 109 के तहत हत्या की कोशिश के आरोप हैं। इसके अलावा 127 विधायकों पर महिलाओं के खिलाफ अपराधों के मामले दर्ज हैं। इनमें 13 पर भारतीय न्याय संहिता की धारा 376 और 376 (2)(द) के तहत बलात्कार का आरोप है। धारा 376 (2)(द) एक ही पीड़ित के बार-बार यौन उत्पीड़न से संबंधित है।

एसोसिएशन ऑफ डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स की रिपोर्ट के अनुसार 543 लोकसभा सदस्यों में से 251 (46 प्रतिशत) के खिलाफ आपराधिक मामले दर्ज हैं। उनमें से 27 को दोषी ठहराया गया है। रिपोर्ट के अनुसार लोकसभा में चुने जाने वाले आपराधिक आरोपों का सामना कर रहे उम्मीदवारों की यह सबसे बड़ी संख्या है। कुल 233 सांसदों (43 प्रतिशत) ने अपने खिलाफ आपराधिक मामले घोषित किए थे। जबकि 2014 में 185 (34 प्रतिशत), 2009 में 162 (30 प्रतिशत) और 2004 में 125 (23 प्रतिशत) सांसदों के खिलाफ आपराधिक मामले दर्ज हैं। 2024 में लोकसभा के लिये चुने गये 251 उम्मीदवारों में से 170 (31 प्रतिशत) पर बलात्कार, हत्या, हत्या का प्रयास, अपहरण और महिलाओं के खिलाफ अपराध सहित गंभीर आपराधिक मामले दर्ज हैं। विश्लेषण से पता चला कि यह 2019 में 159 (29 प्रतिशत) सांसदों, 2014 में 112 (21 प्रतिशत) सांसदों और 2009 में 76 (14 प्रतिशत) सांसदों की तुलना में भी वृद्धि है।

एडीआर के अनुसार 18वीं लोकसभा में सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरी बीजेपी के 240 विजयी उम्मीदवारों में से 94 (39 प्रतिशत) ने आपराधिक मामले घोषित किए हैं। कांग्रेस के 99 विजयी उम्मीदवारों में से 49 (49 प्रतिशत) ने आपराधिक मामले घोषित किए हैं और समाजवादी पार्टी के 37 उम्मीदवारों में से 21 (45 प्रतिशत) पर आपराधिक आरोप हैं। विश्लेषण में पाया गया कि 63 (26 प्रतिशत) बीजेपी उम्मीदवार, 32 (32 प्रतिशत) कांग्रेस उम्मीदवार और 17 (46 प्रतिशत) समाजवादी पार्टी उम्मीदवारों ने गंभीर आपराधिक मामले घोषित किए हैं। इसमें कहा गया है कि सात (24 प्रतिशत) टीएमसी उम्मीदवार, छह (27 प्रतिशत) डीएमके उम्मीदवार, पांच (31 प्रतिशत) टीडीपी उम्मीदवार और चार (57 प्रतिशत) शिवसेना उम्मीदवार गंभीर आपराधिक मामलों का सामना कर रहे हैं।

रिपोर्ट के अनुसार केरल के 20 में से 19 (95 प्रतिशत) सांसदों पर आपराधिक मामले दर्ज हैं जिनमें से 11 गंभीर अपराधों से जुड़े हैं। तेलंगाना के 17 में से 14 (82 प्रतिशत), ओडिशा के 21 में से 16 (76 प्रतिशत), झारखंड के 14 में से 10 (71 प्रतिशत) और तमिलनाडु के 39 में से 26 (67 प्रतिशत) सांसदों के खिलाफ आपराधिक मुकदमे लंबित हैं। वहीं उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल, बिहार, कर्नाटक और आंध्र प्रदेश में लगभग 50 प्रतिशत सांसदों पर आपराधिक मामले दर्ज हैं। दूसरी ओर हरियाणा 10 और छत्तीसगढ़ 11 सांसद में केवल एक-एक सांसद पर आपराधिक मामले दर्ज हैं। पंजाब के 13 में से 2, असम के 14 में से 3, दिल्ली के 7 में से 3, राजस्थान के 25 में से 4, गुजरात के 25 में से 5 और मध्य प्रदेश के 29 में से 9 सांसदों पर आपराधिक मामले लंबित हैं।

एक जनवरी 2025 तक वर्तमान या पूर्व विधायकों के खिलाफ कुल 4,732 आपराधिक मामले लंबित थे। इनमें सबसे ज्यादा उत्तर प्रदेश में 1,171 मामले दर्ज हैं। ओडिशा (457), बिहार (448), महाराष्ट्र (442), मध्य प्रदेश (326), केरल (315), तेलंगाना (313), कर्नाटक (255), तमिलनाडु (220), झारखंड (133) और दिल्ली (124) मुकदमे लंबित हैं।

उपरोक्त आंकड़ों को देखने से लगता है कि हमारे देश की राजनीति में आपराधियों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। यदि समय रहते इस पर लगाम नहीं लगाई गई तो यह देश के लिए एक बड़ा नासूर बन जाएगी। एक समय ऐसा होगा जब राजनीति का पूरी तरह अपराधीकरण हो जाएगा और स्वच्छ छवि के लोग राजनीति से दूर होते चले जाएंगे। ऐसी स्थिति देश के लिए अच्छी नहीं होगी। सरकार को भी इस दिशा में कड़े कदम उठाने होंगे तभी राजनीति में बढ़ती अपराधियों की संख्या पर लगाम लग पाएगी।

मुद्दा

जवाहर चौधरी

लेखक स्तंभकार हैं।

देश के लिए अमीरी भी है एक बड़ी समस्या

भारत में गरीबी एक बड़ी समस्या रही है, अब और विकराल है, अस्सी करोड़ लोगों को मुफ़्त राशन देना पड़ रहा है। लेकिन आधुनिक भारत में अमीरी भी बड़ी दिक्कत है। समानता, न्याय और कल्याण के घोषित लक्ष्य रखने वाले हमारे देश में 10 सबसे बड़े अमीरों के पास इतनी संपत्ति है कि देश के 25 वर्ष तक के सारे (लगभग 65 करोड़) बच्चों को उच्च शिक्षा मुफ़्त दी जा सके। यह भी चौंकाने वाला आंकड़ा है की अकेले 21 अमीरों के पास इतना धन है जितना कि 70 करोड़ भारतीयों के पास है। सारे अमीर असहिष्णु नहीं हैं लेकिन ज्यादातर लाड़ले-अमीर कानून और नियमों का, ईमानदारी व नैतिकता का सम्मान प्रायः नहीं करते हैं। अपने प्रभाव से आर्थिक संस्थानों में गलियां निकालकर वे अपना हित साधते हैं और जिम्मेदारी के समय गायब हो जाते हैं। सब जानते हैं कितने लाडले देश का पैसा लेकर भाग गए हैं। ये अमीर लोन लेते हैं और जमा नहीं करते बाद में येन-केन माफी करवा लेते हैं। सरकारी आंकड़ों के अनुसार वित्त वर्ष 2022-23 में 2 लाख करोड़ से अधिक की ऋण माफी हुई। 2023-24 में भी 1.7 लाख करोड़ ऋण माफ किए गए। राजनीतिक दलों को उद्योगपतियों और अमीरों से बड़ा चंदा मिलता है। घोषित सरकारी आंकड़ों के अनुसार सत्ता में रहने वाले दलों को अधिक चंदा मिलता है। छः हजार करोड़ एक ही पार्टी को मिला! चंदा देने वाले प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से राजनीति को भी प्रभावित करते हैं और अपने हित में फैसला करवा लेते हैं। नीति और योजनाएं भी उद्योगपति व अमीरों को ध्यान में रखकर बनाना पड़ जाती हैं। उन्हें अनेक सुविधाएं, छूट आदि भी देना पड़ती हैं । यह भी एक सच्चाई है कि भ्रष्टाचार का एक महालोक अमीरों के कारण अस्तित्व में है। आमजन को कानून का डर सबसे ज्यादा होता है। समृद्ध और प्रभावी

तबका कानून को कुछ नहीं समझता है। उसके पास किसीको भी खरीद लेने के लिए धन और कानून से लड़ने वाले कमांडो होते हैं। वह सिस्टम में ड्राइविंग सीट पर दिखाई भले ही ना देता हो पर होता वहीं है।

हमारे लाडले अमीर ग्लोबल विलेज को पूरी तरह से भोगते हैं। दुनिया में अनेक जगहों पर उनकी पहुंच होती है, विशेषकर उन देशों में भी जहां टैक्स हेवन की सुविधा मिलती है। देश से कमाया और बटोर हुआ धन वे विदेश में जमा कर सुरक्षित हो लेते हैं। करोना महामारी काल में लाखों लोग मरे, बेरोजगार हुए, लेकिन (ऑक्सफैम इंडिया कि रिपोर्ट के अनुसार) भारतीय अमीरों की संपत्ति में 35 प्रतिशत का इजाफा हुआ। यही नहीं इस दौरान लाडले महाअमीरों की संख्या 102 से बढ़कर 142 हो गई। यही रिपोर्ट कहती है कि इस अवधि में अमीरों की संपत्ति में प्रतिदिन 3600 करोड़ रुपए की वृद्धि हुई। आमजन को यह आंकड़े चौंकाने वाले व अविश्वसनीय लग सकते हैं किंतु अमीरी का व्योम-जगत इस सच्चाई को जानता है। आपदा अमीरों के लिए अवसर बन कर उतरी, इसे उनकी कोई गलती नहीं है । एक और सच्चाई सामने है की करोना काल में लोगों को मुफ्त राशन लेकर अपने जीवन रक्षा करनी पड़ी। सरकारी योजना के तहत आज भी 80 करोड़ लोगों को मुफ्त राशन दिया जा रहा है। इसका मतलब साफ है कि 135 करोड़ लोगों की जनसंख्या में 80 करोड़ लोग ऐसे हैं जो राशन के लिए भी मोहताज है। अमीरी और गरीबी के बीच की यह खाई चिंताजनक होनी चाहिए। बढ़ती अमीरी देश में असमानता को बढ़ा रही है।

गरीबी देश में नई समस्या नहीं है। पहले भी सरकारें गरीबी हटाने को प्राथमिकता देती रही है। लेकिन वर्तमान में बढ़ती अमीरी और उसके प्रभाव ने गरीबी को और जटिल बना दिया है। अपनी आर्थिक शक्ति के प्रयोग से यदि आमिर अपने हितों को बढ़ाते रहे तो समाज के बाकी लोग अनदेखे रह जाएंगे। यदि हमारे संसाधन, सत्ता, सिस्टम और सुविधाएं कोई एक तबके या वर्ग की सेवा में लगे रहेंगे तो जिम्मेदारी के अन्य काम उपेक्षित रहेंगे। गाँधी जी ने ट्रस्टीशिप का विचारदेते हुए कहा था कि अमीर हमारे ऐसे पुत्र हैं जो सफल हैं और अधिक धन कमाते हैं। उन्हें अपनी सपूर्ण जरूरतें पूरी करने के बाद बचा हुआ धन समाज के लिए लगा देना चाहिए। बचे हुए धन को समाज की अमानत समझना चाहिए । अपने धन के वे ट्रस्टी होंगे और उनकी मर्जी से वह धन समाज कल्याण के लिए खर्च होगा । हालाँकि यह विचार व्यावहारिक नहीं हो पाया । किन्तु लगता है अमीरी सामाजिक बुराई बने इससे पहले उस पर भी लगाम कसने की जरूरत है। सरकार अमीरों की मित्र बनी रहे लेकिन मित्रता निबाहने से पहले विचार करे । आय पर कर तो लगता ही है, इसमें दिखाई देने वाली कमियों को दूर किया जा सकता है। बैंक घोटालों और बड़े लोन देने के मामले में कुछ जरूरी सावधानी रहे और वसूली के ऊपर विशेष ध्यान दिया जा सकता है।

वित्तीय साक्षरता को समझते भावी नागरिक

अभिव्यक्ति

अदिति सिंह भदौरिया

लेखक स्तंभकार हैं।

हम जब भी किसी भी तरह की शिक्षा की बात करते है , तब हमारे सामने यही भाव उभर कर आते है कि विश्व के हर बच्चे का पहला स्कूल उसका घर और उसकी पहली शिक्षिका उसकी मां होती है। यह सच भी है , क्योंकि बच्चा अपने घर के परिवेश से बहुत कुछ सीखता है और वहीं आदतें उसके स्वभाव का मूल सिद्दांत बन जाती है। बचत ऐसी ही एक विशेष कड़ी है। जिससे बच्चा अपने भविष्य की नींव को मजबूत बनाना सीख सकता है।

हम सब अपने बच्चों को एक सुखी, स्वस्थ और उन्नति से भरे भविष्य में देखना चाहते है, जहां हमारे बच्चे अपने जीवन को सुख से बीता सकें। लेकिन हम से अगर कोई पूछे कि हम उनके बेहतर भविष्य के लिए उनकी क्या सहायता कर रहे है, तो सबके पास एक ही जवाब होगा कि हम उन्हें बेहतर शिक्षा दे रहे है। पर क्या किताबी ज्ञान ही उनके भविष्य को उज्ज्वल बनाने में सहायक सिद्द हो सकता है? यह एक ज्वलंत प्रश्न है जिसका जवाब हमें अपने भीतर ही ढूंढना होगा। क्योकि कोई भी किताब आपको डिग्री लेने में तो सहायता कर सकती है, लेकिन जीवन के जीवंत उदाहरण आपको जीवन को जीने में मुख्य भूमिका निभाते है। कल के भावी नागरिकों से हम उम्मीद करते है कि वह अपने जीवन में आगे बढ़े,लेकिन कैसे यह हम बताना भूल जाते है। छोटी-छोटी बचत करना हमें उन्हें सीखाना होगा। जिससे कि पैसे बचाना उनके स्वभाव का अहम हिस्सा बन जाए। यहाँ हम उन्हें कंजूसी करने को नहीं कह रहे बल्कि बचत करने को कह रहे है। यह उनके सफल जीवन की पहली शिक्षा होगी। जिसकी सहायता से वह अपने भविष्य का निर्माण सफलतापूर्वक कर सकेंगे।हर देश की अर्थव्यवस्था ही उसके सफल होने का प्रमाण होती है।

ऐसे में जब हमारे भावी नागरिक अपने आपको व्यवस्थित रूप से जीने की ओर ले जाएंगे।तब यह सीधे हमारे देश के उज्ज्वल भविष्य की और सुखद संकेत होगा। इसकी शुरुआत हमें घर से ही करनी होगी। बच्चों के भीतर वितीय साक्षरता को सीखाने के लिए उन्हें वास्तविक उदाहरण दें, जैसे गरोसरी खरीदने जाने से पहले उनके साथ मिल कर एक बजट तैयार करें। उनकी गुल्लक बनाए। जिससे उन्हें पैसों को बचाने की सीख मिल सकें । उनकी शोपिंग के लिए भी एक फिक्स बजट तैयार करें और उसी के भीतर उन्हें खर्च करने की आदत डालें। अपने बच्चों को बैंकिंग की मूल अवधारणा की समझ दें। सबसे महत्वपूर्ण बच्चों को आवश्कताओं और इच्छाओं के बीच का अंतर बताए। उन्हें यह समझाए कि क्या विशेष खर्च उनकी प्राथमिकताओं से मेल खाता है। क्या सच में उस चीज़ की इतनी आवश्यकता है? बच्चों के सामने एक उदाहरण बनकर आए।

यदि हम उनके सामने अत्याधिक शोपिंग या अनियंत्रित खर्चा करेंगे तब उनकी उस बात की अहमियत कभी समझा नहीं पाएंगे।हमारा घर हमारी पहली पाठशाला होती है। हम अपने घर का बजट बनाते समय यदि बच्चों को भी इन्वाल्व करेंगे तब बचत का गुण उनके भीतर स्वयं ही आ जाएगा। धीरे-धीरे ही सही बचत की यह छोटी आदत उनके आगामी जीवन में आने वाले बड़े फैसलों को धैर्यता से लेने में सहायक सिद्द होंगें।बचत मात्र हमें पैसों को बचाना ही नहीं सीखाती बल्कि समय के सदुपयोग और सूझ-बूझ से निर्णय लेने में भी हमारी सहायता करती है। वितीय अनुशासन सीखाना बच्चों को भविष्य के लिए तैयार करने जैसा है। लक्ष्य निर्धारित करती भावी पीढी के लिए बचत करना एक चुनौती जैसा है, जिसने इसे पार कर लिया । तो समझें कि उसने अपने आने वाले कल के लक्ष्य को निर्धारित करके उसपर चलने के सही तरीके को प्राप्त कर लिया। तो आज ही अपनी भावी पीढ़ी को उनके सुखद भविष्य के लिए तैयार करें।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

रमेश रंजन त्रिपाठी

लेखक व्यंग्यकार हैं।

निंदिया धीरे से आ जा

आसमान के विस्तृत भाल पर साँझ के सिंदूरी छींटों की बूँदें पड़ते ही सूर्यदेव अस्ताचल की ओर प्रस्थान करने लगते हैं। अवनि के आँगन में सूरज की किरणों का स्थान निशा देवी द्वारा लिए जाने से पहले संध्या थोड़े समय के लिए अस्थायी चार्ज में रहती हैं। रात आते ही आलस्य के साथ कुछ पल रहने के बाद इंसानी तन-मन विश्राम के आग़ोश में जाने लगता है। दिन का एक तिहाई समय निद्रा के पहलू में बिताकर मानव स्वयं को रिचार्ज किया करते हैं।

खुशकिस्मत लोगों को नींद नहीं आती। तरोताज़ा होने के लिए वे नींद के भरोसे रहने को मजबूर नहीं होते। उन्हें जिंदगी के पासिंग मार्क्स यानी तैंतीस फीसदी टाइम को नींद में गँवाने के बजाय सदुपयोग करने की अतिरिक्त सुविधा ऐसे मिलती है जैसे शॉपिंग माल में दस हजार की ख़रीदारी करने पर सौ रुपए का वाउचर मुफ्त में मिल जाए।

नींद न आना वरदान से कम नहीं। न सोएँगे, न खर्राटे लेंगे, न किसी का चैन हराम करेंगे। न सोएँगे, न सपने देखेंगे, न सपने टूटने का गम सहना होगा। न सोएँगे, न समय व्यर्थ करने का इल्जाम लगेगा। निंदिया रानी को पलकों पर बिठाने से मुक्ति मिलेगी। जागते रहने से चोरी का भय भाग जाता है। कुत्तों का रोना, झींगुरों का गायन, रात्रि का सन्नाटा, अँधेरे की चादर, चाँदनी का जलवा, सितारों की महफिल, आकाशगंगा की उजली धार, सियारों की कूक, दूर की आवाजें, रात्रिचरों की गतिविधियाँ, तारे का टूटना और न जाने क्या कुछ जो कहने लायक है और न कहने लायक भी, बिना जागरण किए कैसे देखा, सुना और समझा जा सकता है? गीता में भी रात्रि को आत्मविश्लेषियों के लिए दिन कहा गया है। अगर रात में सोना ही महत्वपूर्ण होता तो लोग नाइट शिफ्ट में काम क्यों करते? किंवदंती है कि रावण के बेटे मेघनाथ को वही मार सकता था जो चौदह साल तक सोया न हो। इसीलिए लक्ष्मण ही इंद्रजीत का वध कर सके। न सोना भी बड़े काम आ सकता है।

अक्सर लोग जागने और सोने के बीच में झूला झूलने लगते हैं। इस अवस्था के लिए सुंदर शब्द गढ़े गए हैं- ऊँघ, झपकी, अर्धनिद्रा आदि। नींद भी कई टाइप की होती है, एक छोर पर है श्वान-निद्रा जो हल्की सी हलचल से खुल जाती है और दूसरे किनारे पर मुर्दों से होड़ लगानेवाली कुंभकर्णी नींद है, जिसे तोड़ने के लिए कितने डेसिबल का शोर वांछनीय है, शोध का विषय हो सकता है। इन दोनों के बीच मुहावरे गढ़नेवाले, चैतन्य और उनींदे से, टहलते मिल जाएंगे। किसी की नींद उड़ी हुई होगी तो किसी की नींद हराम। कोई घोड़े बेचकर सोनेवालों से ईर्ष्या कर रहा होगा तो कोई एक आँख खोलकर सोने में माहिर होगा। महाभारत के हीरो अर्जुन को गुडाकेश भी कहते हैं क्योंकि उन्होंने गुडाका अर्थात नींद को जीत लिया था। धार्मिक आख्यानों में निद्रा देवी को नमस्कार करते हुए कृपा करने की प्रार्थना की जाती है।

अनेक लोग अपनी नींद को बाहरी शोर से डरकर उचटने से बचाने के लिए खर्राटों का पहरा बिठा देते हैं। ये खर्राटे केवल अपने मालिक के वफादार होते हैं, उन्हें इसकी परवाह नहीं होती कि दूसरे उनके बारे में क्या कहेंगे। कुछ खर्राटे तो अति उत्साह में अपने वॉल्यूम के बटन को फुल पर ले जाते हैं। लगता है, अनेक वैज्ञानिकों ने अपनी मशीनों को ध्वनियाँ बख्शने के लिए खर्राटों से प्रेरणा ली होगी।

नींद वह शारीरिक और मानसिक अवस्था है जिसमें इंसान बेसुध होकर आराम की चरम अवस्था में पहुँच जाता है। होश में न रहने का भाव कवियों, शायरों को बेहद प्रिय है। वे तो जैसे बेखुदी में कहीं के कहीं पहुँच जाने को उधार ही बैठे रहते हैं। मिर्जा गालिब ने सवाल पूछा है, 'मौत का एक दिन मुअ'य्यन है, नींद क्यूँ रात भर नहीं आती'। अमीर मीनाई देवदूतों की अपेक्षा नींद को तवज्जो देते हुए अनुरोध करते हैं, 'शब-ए-फुर्कत का जागा हूँ फरिश्तो अब तो सोने दो, कभी फुर्सत न कर लेना हिसाब आहिस्ता आहिस्ता'। सिनेमा कब पीछे रहने वाला है! फिल्मी गीतकारों ने अपनी कलम से नींद की जमकर सेवा की है। 'नींद न मुझको आए', 'मेरी नींदों में तुम', 'नींद कभी रहती थी आँखों में', 'नींद उड़ जाए तेरी', 'मेरी आँखों से कोई नींद लिए जाता है' जैसे अनेक गाने किसे पसंद नहीं होते? माताएँ अपने बच्चों पर निद्रा देवी की कृपा पाने के लिए अक्सर लोरी की शरण लिया करती हैं। सपनों का कॉपीराइट नींद के पास है। नींद को बायपास कर जागती आँखों से सपने देखनेवाले लोग हिम्मती होते हैं। होश-ओ-हवास में देखे गए सपनों को पूरा करने के प्रयासों में तकदीर लिखने की कुव्वत होती है।

विश्व रंगमंच दिवस

प्रमोद दीक्षित मलय

लेखक स्तम्भकार हैं।

रंगमंच को संवारने के संकल्प का दिन

संस्कृत साहित्य में नाट्य लेखन एवं मंचन की समृद्ध परम्परा रही है जो इस्लाम के आगमन तक फलती-फूलती रही। पर इस्लामी आक्रमणों एवं राज्याश्रय न मिलने के कारण नाट्य-संस्कृति की यह पुण्यबेल निर्जीव-रसहीन हो मृतप्राय हो गयी। हालांकि 18वीं सदी से ब्रज, अवधी, छत्तीसगढ़ी में हिंदी नाटकों का लेखन मंचन गतिमान हुआ। लेकिन 20वीं शती के उत्तरार्ध काल में संचार और तकनीकी के क्षेत्र में हो रहे नित नवल अनुसंधानों एवं सुविधाओं के कारण जन मनोरंजन के तमाम सुगम संसाधनों की उपलब्धता से रंगमंच पर दुष्प्रभाव पड़ा है। दर्शकों की अनुपलब्धता से नाट्य मंडलियां काम के अभाव मे बंद हुईं और रंगमंच को समर्पित संस्थान भी आभाहीन हुए।

नाटक दर्शकों को प्रेम, रहस्य, रोमांच, हर्ष, खुशी, आत्मीयता और सौंदर्य की उस ऊंचाई पर ले जाता है जहां वे कल्पना लोक में विचरण कर रहे होते हैं जो खुरदुरे पठारी यथार्थ से परे एक अलग दुनिया होती है। नाटक के मंचन से उद्भूत रस प्रेक्षागृह में उपस्थित दर्शकों को आत्मानंद की प्राप्ति कराने में समर्थ होता है, इसीलिए नाट्य रस को परमानंद सहोदर कहा गया है। नाटक संस्कृत वांग्मय के शीर्ष आर्ष ग्रंथ वेदों की पंक्ति में पंचम वेद की संज्ञा से विभूषित हो लोक में समादृत हुआ है। ब्रह्मा जी ने ऋग्वेद से पाठ्य, सामवेद से गायन कला, यजुर्वेद से अभिनय और अथर्ववेद से रस लेकर नाट्यवेद की रचना की है। संस्कृत साहित्य में नाट्य लेखन एवं मंचन की समृद्ध परम्परा रही है जो इस्लाम के आगमन तक फलती-फूलती रही। पर इस्लामी आक्रमणों एवं राज्याश्रय न मिलने के कारण नाट्य-संस्कृति की यह पुण्यबेल निर्जीव-रसहीन हो मृतप्राय हो गयी। हालांकि 18वीं सदी से ब्रज, अवधी, छत्तीसगढ़ी में हिंदी नाटकों का लेखन मंचन गतिमान हुआ। लेकिन 20वीं शती के उत्तरार्ध काल में संचार और तकनीकी के क्षेत्र में हो रहे नित नवल अनुसंधानों एवं सुविधाओं के कारण जन मनोरंजन के तमाम सुगम संसाधनों की उपलब्धता से रंगमंच पर दुष्प्रभाव पड़ा है। दर्शकों की अनुपलब्धता से नाट्य मंडलियां काम के अभाव मे बंद हुईं और रंगमंच को समर्पित संस्थान भी आभाहीन हुए। तो 1948 में पेरिस में स्थापित इंटरनेशनल थियेटर इन्स्टीट्यूट ने रंगमंच के प्रति जागरूकता के प्रसार, रंगमंचीय संस्कृति एवं मूल्यों से आमजन को परिचित कराने, नाटकों के आनंद को परस्पर साझा करने और रंगमंच की पुनर्स्थापना की दृष्टि से 1961 में विश्व रंगमंच दिवस मनाने का संकल्प लिया और पहली बार 27 मार्च 1962 को यह दिवस मनाया गया। इसमें वैश्विक शांति के लिए रंगमंच एवं संस्कृति पर आधारित किसी प्रसिद्ध एवं समर्पित रंगमंचीय कला साधक के आमंत्रित संदेश का 50 भाषाओं में अनुवाद प्रकाशित कर सभी देशों में प्रसारित किया जाता है ताकि लोग रंगमंच के महत्व से अवगत हों। पहला रंगमंच संदेश 1962 में फ्रांसीसी थिएटर कलाकार जॉन काक्टयू ने दिया था। भारत के किसी कला साधक को यह सम्मान पहली बार 2002 में गिरीश कर्नाड को मिला। प्रत्येक वर्ष एक थीम का निश्चय कर तदनुरूप आयोजन किये जाते हैं। वर्ष 2025 की थीम है- रंगमंच और शांति की संस्कृति।

भारत में रंगमंच की समृद्ध एवं गौरवशाली परम्परा अति प्राचीन काल से ही रही है। सर्वप्रथम ऋग्वेद में यम और यमी तथा पुरुरवा एवं उर्वशी के बीच हुए संवाद के दृश्य दिखायी देते हैं। भरत मुनि का नाट्यशास्त्र रंगकर्म का सर्वोत्कृष्ट ग्रंथ है जिसमें नाट्य लेखन, पात्र चयन, अभिनय, मंचन, प्रेक्षागृह, रंगमंडप, नेपथ्य और रंगपीठ पर विशद विश्लेषण परक सामग्री है। साथ ही कथानक, संवाद कथन, ध्वनि एवं प्रकाश, साज-सज्जा, पात्र, रंग शिल्प, रस एवं दर्शक आदि पर भी विस्तार से विचार किया है। भारत के प्राचीन नाट्य मंचन स्थानों में रामगढ़ (छत्तीसगढ़), सीता गुफा, फुलमुई गुफा (नासिक, महाराष्ट्र) उल्लेखनीय है। ये सभी नाटक मंचन के स्थान अंशतः प्राकृतिक हैं पर पहाड़ काट कर मंचीय बनाये गये हैं। भारत के नाट्य मंचन स्थान गुफा जैसी बंद जगहों पर निर्मित किये गये जबकि पाश्चात्य देशों में नाटक खेलने हेतु खुले स्थानों को वरीयता दी गयी जहां दर्शकों के बैठने हेतु सीढ़ीदार गोल चबूतरे बनाये जाते रहे हैं। उसी आधार पर अब भारत में भी मुक्ताकाशी मंच बनाये जाने लगे हैं। इन पंक्तियों के लेखक को 2018 में भारत के प्राचीन नाट्य स्थल रामगढ़ को देखने का अवसर मिला था। अंबिकापुर जिले में स्थित यह स्थान रामगढ़ नामक पहाड़ी पर कालिदास द्वारा निर्मित किया गया है। पास ही विशाल हाथी गुफा भी है। रामगढ़ नाट्य मंच में सामने दर्शकों के बैठने हेतु विस्तृत शिला हैं।

मंचन हेतु पहाड़ को काटकर एक मंच तैयार किया गया है जो लगभग 6 फीट ऊंचा है। मंच के बाईं और पात्रों की साज-सज्जा और पर्दा खींचने वाले के लिए जगह बनी है तो दायीं ओर नाटक के निर्देशक और

नाटक से सम्बंधित कुछ अन्य व्यक्तियों तथा लेखक आदि के बैठने के लिए स्थान नियत है। यह गुफा प्राकृतिक नहीं मानव निर्मित है, ऐसा वहां देखने पर समझ में आता है। अब प्रत्येक वर्ष वहां कालिदास समारोह में तमाम नाट्य प्रस्तुतियों की पुष्पांजलि देकर महान नाटककार कालिदास के योगदान के प्रति श्रद्धा प्रकट की जाती है।

संस्कृत में बहुत सारे नाटक केवल मंचन की दृष्टि से ही लिखे गये। अभिज्ञान शाकुन्तलम्, वेणी संहार, मृच्छकटिकम्, स्वप्नवासवदत्तम्, उत्तररामचरितम्, मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोर्वशीयम, प्रतिमानाटकम और उरुभंग श्रेष्ठ नाटकों में गण्य हैं। दशरूपक और साहित्य दर्पण ग्रंथों में भी नाट्य विधा का सम्यक विवेचन दृष्टव्य है। हिंदी में नाटक भले ही गद्य की श्रेणी में शामिल है पर संस्कृत भाषा में नाटक को दृश्य काव्य के अंतर्गत रखा गया है। नाटक रस प्रधान होता है। काव्यात्मक सौंदर्य की विलक्षण रसपूर्ण सृष्टि की रचना ही नाटक का ध्येय है। काव्येषु नाटकम् रम्यम् कह कर नाटक के सौंदर्य का रेखांकन किया गया है। बौद्ध ग्रंथों में भी नाट्य परंपरा का उल्लेख मिलता है। भारत में मुस्लिम आक्रांताओं के कारण नाटक मंचन एवं लेखन को विराम लग गया। पर कालांतर में 18वीं शताब्दी में नाटक खेलने के उदाहरण मिलते हैं। संस्कृत की नाट्य धारा से प्रेरित होकर हिंदी में भी सुंदर मनोहरी आनंद प्रधान नाटकों की रचना हुई है जिसका श्रेय भारतेंदु हरिश्चंद्र को दिया जाता है। नाटक लेखन एवं मंचन को बढ़ावा देने में पारसी थियेटर की भूमिका की अनदेखी नहीं की जा सकती है।

वर्ष 1871 में स्थापित अल्फ्रेड नाटक मंडली को सही मायने में नाटकों के मंचन और जनसामान्य तक उसकी पहुंच एवं प्रसिद्धि दिलाने का श्रेय जाता है। इस मंडली द्वारा भारतेंदु हरिश्चंद्र और राधा कृष्ण दास के कई नाटकों का मंचन किया गया जिन्हें पर्याप्त सराहना मिली। अन्य नाटक मंडली और थिएटर की बात करूं तो मॉडर्न थिएटर कोलकाता, बलिया नाट्य समाज, बनारस थियेटर, आर्य नाट्य सभा प्रयाग और भारतीय कला मंदिर कानपुर का उल्लेख करना आवश्यक हो जाता है। वर्ष 1884 में नेशनल थियेटर कंपनी ने भारतेंदु के नाटक अंधेर नगरी का सर्वप्रथम मंचन किया था। अन्य नाटकों में सत्य हरिश्चंद्र चंद्रगुप्त, नीलदेव, स्कंद गुप्त, सुभद्रा हरण एवं ध्रुवस्वामिनी आदि का अंकन उचित होगा। ध्यातव्य है कि तत्कालीन नाटकों में स्त्री पात्रों का अभिनय भी पुरुष पात्रों द्वारा ही किया जाता था जिसे विराम दिया 1939 में काशी हिंदू विश्वविद्यालय में स्थापित विक्रम परिषद ने। पहली बार उसके द्वारा स्त्री पात्रों का अभिनय स्त्रियों के द्वारा ही कराने की पहल की गई जिसे अन्य मंडलियों ने भी स्वीकार कर आगे बढ़ाया। इस प्रवाह में लोकभाषा बोली में भी नाटकों की एक वेगवती धारा शामिल थी। नौटंकी, जात्रा, तमाशा, ख्याल, नाच, बिदेसिया, यक्षगान, स्वांग, रासलीला और रामलीला आदि से लोकजीवन आनंदित हैं।

वास्तव में नाट्य मंचन में संवाद संप्रेषण, भावाभिव्यंजना और रसास्वादन साथ-साथ चलते हैं। यहां सिनेमा की भांति रिटेक के लिए कोई जगह और अवसर नहीं होता। पात्र का सीधा संबंध दर्शकों से होता है। आज एक कला प्रेमी नागरिक के रूप में हमें यह संकल्प लेना आवश्यक है कि हम रंगमंच के महत्व को समझ उसकी वापसी हेतु संकल्पबद्ध हों। स्कूली स्तर पर भी रंगमंच को पाठ्यक्रम में शामिल कर सार्थक पहल सम्भव है।

विक्रम-1

डॉ.पं.राजशेखर व्यास

पूर्व अतिरिक्त महानिदेशक, दूरदर्शन/ ज्योतिषाचार्य व लेखक हैं)

आइए, विक्रम संवत् फिर याद करें !

यूँ शुरू हुआ था विक्रम महोत्सव! विक्रम भारत का सोया हुआ पराक्रम था! भारत गुलाम था, और हमें इतिहास में पढ़ाया जा रहा था की हम सदियों से गुलाम रहें हैं कभी शक और हूण के कभी मुग़ल और कभी अंग्रजों के हम सदियों से लुटे पिटे हारे थके जुआरी हैं। साढ़े तीन सौ साल हम पर मुग़लो ने शासन किया और दो सौ साल से अंग्रेज़ हम पर शासन करते आ रहे थे ! यह बात है 1940 के आसपास की उज्जयिनी के क्रांतिकारी युवा सूर्यनारायण व्यास ने , जिनका प्रचलित संवत् भी धीरे धीरे लोग भूलते जा रहे थे इतिहास से ऐसे पराक्रमी चरित्र 'विक्रम' के नाम पर उज्जयिनी से एक मासिक पत्रिका 'विक्रम' का प्रकाशन आरम्भ किया। चूँकि उनका अपना प्रिंटिंग प्रेस था, जहाँ से वे अपने पूज्य पिता महा महोपाध्याय पंडित नारायण व्यासजी के नाम पर 'नारायण विजय पंचांग' अपने छोटे भाई के साथ प्रकाशित करते ही थे ! पर विक्रम संवत् के दो हज़ार वर्ष पूर्ण होने जा रहे थे और विक्रमादित्य के नाम पर राष्ट्र में कोई हलचल नहीं थी। उन्होंने विक्रम संवत् के दो हज़ार वर्ष पूर्ण होने पर 'विक्रम द्वि सहस्त्राब्दी महोत्सव' की योजना बनायी और पृथ्वीराज कपूर को ले कर सारे राष्ट्र में जागृति फैलाने 'विक्रमादित्य' फ़िल्म का निर्माण शुरू कर दिया।

सारे देश में उनकी इस योजना का सम्यक् स्वागत हुआ। उन्हें सबसे पहले कन्हैया लाल माणिक लाल मुंशी से सहयोग मिला। महाराजा देवास ने योजना सुन कर कहा- सारे सूत्र उनके हाथ में रहें तो वे सहयोग देंगे। तब तक वीर सावरकर ने भी अपने पत्र में इस योजना की प्रशंसा कर दी। चूँकि पंडित सूर्यनारायण व्यास आज़ादी के पहले 114 स्टेट के राज्य ज्योतिषी भी थे, उनकी इस योजना का सारे देश में सम्यक् स्वागत हुआ और महाराजा ग्वालियर ने उन्हें ग्वालियर बुला भेजा। चार दिन घंटों विचार विमर्श हुआ और अंत में व्यासजी के सुझाव पर उज्जयिनी से ले कर मुंबई तक विक्रम महोत्सव मनाना स्वीकार हुआ। व्यासजी विक्रम के नाम पर एक विश्विद्यालय, शहर में एक भी भव्य सभागार नहीं था। पहले भी पृथ्वीराज कपूर आये थे तो महाराज वाडा रीगल टाकीज, कैलाश टाकीज में 'पैसा पठान दीवार' नाटक खेल समारोह के लिए चन्दा एकत्र किया गया था। तब विक्रम के नाम पर एक भव्य सभागार 'विक्रम कीर्ति मंदिर' बनाने का विचार किया गया।

भविष्य दृष्टा व्यासजी जानते थे कि दस साल के अंदर हम स्वतंत्र तो हो जायेंगे पर स्वतंत्रता उपरांत भी मानसिक गुलामी और सांस्कृतिक दासता से मुक्त नहीं हो पायेंगे। अतः 1928 से ही उन्होंने उज्जयिनी में अखिल भारतीय कालिदास समारोह मनाना शुरू कर दिया था। भारतीय रंगमंच की इस सांस्कृतिक आधारशिला इस समारोह में भारत और संसार के प्रायः सभी महान लेखक कलाकार राजनेता बुद्धिजीवी चित्रकार संगीतकार गायक अब तक हिस्सा ले चुके हैं।

आजादी के बाद तक प्रथम राष्ट्रपति प्रधानमंत्री से लेकर प्राय सभी बड़े राजनेता इस समारोह में आये हैं। भारत से पहले सोवियत रूस में पंडित सूर्यनारायण व्यास के प्रयास से डाक टिकट जारी हुआ। भारत में भी बाद में उन्हीं के प्रयास से कालिदास पर डाक टिकट जारी हुआ। 'कवि कालिदास' नामक फ़ीचर फ़िल्म उन्ही की प्रेरणा से बनी और भारत भूषण निरुपा रॉय को ले कर बनी इस फ़िल्म को उन्होंने राजेन्द्र प्रसादजी राष्ट्रपति से टैक्स फ्री करवा कर सारे देश में एक साथ प्रसारित प्रदर्शित कराया। यह फ़िल्म अब भी यू ट्यूब पर उपलब्ध है।

उनके जीवन की सारी संचित निधि के दान द्वारा आज उज्जयिनी में स्थापित कालिदास अकादेमी उनके सपनों का साकार ज्योतिर्बिंब है। आज भी प्रति वर्ष मनाये जाने वाला अखिल भारतीय कालिदास समारोह उनका जीवंत समारक हैं ! प्रखर पत्रकार क्रांतिकारी पंडित व्यास ने वर्ष 1942 में उज्जैन से 'विक्रम' मासिक आरम्भ किया और उसके माध्यम से सारे राष्ट्र के सोये पराक्रम को जगाने का उपक्रम किया। विक्रम संवत् के दो हज़ार वर्ष पूर्ण होने पर 114 राजा महाराजा इकट्ठा कर विक्रम महोत्सव मनाना आरंभ किया। आज उज्जयिनी में स्थापित विक्रम विश्वविद्यालय विक्रम कीर्ति मंदिर उनके इसी महान अवदान की कीर्ति गाथा हैं।

विक्रम की प्रामाणिकता, ऐतिहासिकता पर पंडित सूर्यनारायण व्यास निरंतर लिख कर अंग्रेज़ इतिहासकारों को मुंहतोड़ उत्तर दे ही रहे थे। विक्रम कीर्ति मंदिर स्थापित कर उन्होंने महाकाल मंदिर में उज्जयिनी की पहली खुदाई से प्राप्त पुरातत्व प्रमाण रखवाये थे। वे अपने ही काल में खुद के द्वारा स्थापित 'सिंधिया शोध प्रतिष्ठान' को विगत वर्षों में महाकाल में रखवायी सारी प्रतिमाओं का संग्रहालय बना दिया।, बाद के काल में उनके सुयोग्य शिष्य डॉ विष्णु श्रीधर वाकणकर ने विक्रम काल की सोने की मुद्रा खोज कर उसे प्रामाणिकता दी। अब व्यास जी का लक्ष्य विक्रम को जन जन तक पहुंचाना था तो उन्होंने पृथ्वीराज कपूर ,प्रेम अदीब, रत्नमाला, बाबूराव पेंढ़ारकर को लेकर फिल्म 'विक्रमादित्य' विजय भट्ट के निर्देशन में बनायी। इस फ़िल्म और 'कवि कालिदास' फ़िल्म दोनों फ़िल्म ने रजत जयंती मनायी।

कला और अभिव्यक्ति से विश्व को अनूठा संदेश

विश्व रंगमंच दिवस पर विशेष

ऋतुपर्ण दवे

लेखक शोधार्थी हैं।

आज विश्व रंगमंच दिवस है। रंगमंच कला के महत्व की जागरूकता बढ़ाजश्न मनाने का दिन है। रंगमंच शब्द ग्रीक शब्द 'थिएट्रॉन' से लिया गया है जिसका अर्थ है 'देखने की जगह'। भारत में रंगमंच का इतिहास बहुत पुराना है। भरत मुनि को नाट्यशास्त्र के लिए जाना जाता है।हमारेरंगमंचीय इतिहास बहुत पुराना है। शुरू से यही वो माध्यम है जिसे समझकर उसके सौंदर्य और महत्व, के साथ मनोरंजन के माध्यम से दैनिक जीवन में जश्न यानी खुशी प्रदर्शित की जाती है। विश्व रंगमंच दिवसइसी का प्रतीक है। रंगमंच वह विधा भी है जिससे दुनिया भर की सरकारों, राजनेताओं, संस्थानों और हितधारकों को भी मंच के जरिए सूचित व सचेत किया जाता है कि समाज की ऐसी संस्थाओं और लोगों के प्रति कैसी जनधारणा है।

वास्तव में यह अभिव्यक्ति की वह कला है जिसमें कलाकार वास्तविक जीवन या घटनाओं का एक तरह से नाट्य रूपांतरण यानी रिक्रिएशन करते हैं, दोहराते और याद दिलाते हैं। इसे मनाने की शुरुआत 1961 से हुई थी। 27 मार्च, 1962 को, विश्व रंगमंच दिवस अंतरराष्ट्रीय रंगमंच संस्थान केंद्रों, उसके सहयोगी सदस्यों, रंगमंच पेशेवरों और रंगमंच संगठनों द्वारा मनाया गया। अब,यह दिन विश्व के 90 से अधिक केंद्रों में मनाया जाता है, जिसमें दुनिया भर के रंगमंच विश्वविद्यालय, अकादमियाँ, स्कूल और रंगमंच प्रेमी शामिल होते हैं। संस्कृति, शिक्षा, शांति और सामाजिक जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए समर्पित है इस दिन एक विशेष संदेश जारी किया जाता है, जो किसी प्रमुख रंगमंच हस्ती द्वारा लिखा जाता है। यह संदेश रंगमंच की भूमिका और इसके सामाजिक प्रभाव पर प्रकाश डालता है।हर वर्ष इसकी एक अलग थीम होती है। इस बार की थीम 'रंगमंच और शांति की संस्कृति' है। जैसा कि नाम से ही साफ है, इस झुलसती और तृतीय विश्व युद्ध की आहट के बीच बढ़ रही दुनिया को बड़ा संदेश देना उद्देश्य है।

जैसा कि साफ है रंगमंच या थिएटर प्रदर्शन वास्तव में कला के जरिए जीवंत प्रस्तुति,अभिव्यक्ति, स्वीकरण या अस्वीकरण का वह तरीका है जिसमें कलाकारकिसी वास्तविक या काल्पनिक घटना के अनुभव को किसी विशिष्ट स्थान, पर आकर सामने नाट्या प्रदर्शन करते है। यह न तो रिकॉर्डेड होता है न ही बार-बार के रिटेक जैसी सुधार की संभावनाएं होती है। वास्तव में जीवंत प्रदर्शन बड़ी चुनौती सरीखे होती है जिसे कलाकार साक्षात प्रस्तुत कर उसमें जीते हुए दिखते हैं। जो बहुत ही आनन्दित

करता है। निश्चित रूप से यह न केवल कठिन कार्य है बल्कि अभिनय की वह चुनौती है जिसे सामने बैठे दर्शकों के समक्षमंच पर कलाकार करते हैं। एक तरह आज की भाषा में यह लाइव प्रदर्शन ही है।

अपने संवाद, हाव-भाव, भाषण, गीत, संगीत और नृत्य के संयोजन से की जा रही जीवंत प्रस्तुतियों का दर्शकों पर एक अलग छाप व प्रभाव पड़ता है। ऐसे मंचन समाज के लिए न केवल बड़े संदेश देते हैं बल्किकला के तत्व, और कृत्रिम संसाधनों जैसे चित्रित दृश्य और स्टेजक्राफ्ट व प्रकाश व्यवस्था का उपयोग कर वो अनुभव की भौतिकता, उपस्थिति और तात्कालिकता भी बढ़ाते हैं। समय के साथ-साथ इसमें काफी बदलाव भी आया है। आधुनिक रंगमंच में नाटकों और संगीत थिएटर का प्रदर्शन भी शामिल होने से यह और भी आकर्षक और लोकप्रिय होते जा रहे हैं।

रंगमंच कला भी कई रूप ले चुकी है। बैले और ओपेरा थिएटर की वो प्रस्तुतियां बन गई हैं जिसमेंपारंपरिक रूप से किए जाने अभिनय, वेशभूषाओं का उपयोग किया जाता है। समय के साथ इस कला का भी विकास आधुनिक होते हुए भी काफी हद तक पारंपरिक भी है। यह दिन थिएटर कला के महत्व और मनोरंजन में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में जागरूकता बढ़ाने और इस बात पर प्रकाश डालने के लिए भी मनाया जाता है ताकि उनका उपयोग शांति और आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए कैसे किया जा सकता है।

वास्तव में एक खास दिन इसको समूचे विश्व में एक साथ मनाने के पीछे भी बहुत बड़ी और व्यापक सोच है। रंगमंच के मूल्य के बारे में जागरूक करना, रंगमंच समुदायों को अपने काम को बड़े पैमाने पर बढ़ावा देने में सक्षम बनाना, दुनिया भर के रंगमंच कर्मियों और संगठनों को आपस में जोड़ना और एक-दूसरे परिचित कराना। विश्व में अलग-अलग रूपों में प्रचलित रंगमंच विधाओं का न केवल आनंद लेना बल्कि दूसरों के साथ आनंद साझा करना है। वास्तव में विश्व रंगमंच दिवस हमें रंगमंच के विभिन्न रूपों का जश्न मनाने और हमारे समाज में उनके महत्व की सराहना करने का मौका भी देता है।

सच में, रंगमंच वह कला है जो सदियों से जीवित है और सदियों तक रहेगी भी। भले ही समाज, विकास और तकनीक में कितने भी उतार-चढ़ाव आए हों लेकिन मूल भावना अब भी जीवन्त है। समय के साथ बदलाव के बावजूद रंगमंच की भावना जस की तस है। यह हर तरह की कलाओं को शिक्षामें समाहित कर, मनोरंजन के जरिए लोगों तक पहुंचाती है। अंतर्राष्ट्रीय रंगमंच दिवस इसी लक्ष्य की पूर्ति करता है तथा रंगमंच समुदाय नाटक और संगीत के प्राचीन शिल्प को बढ़ावा देने के लिए प्रत्येक वर्ष प्रदर्शन, व्याख्यान और पुरस्कार प्रस्तुतियों की योजना बनाता है। निश्चित रूप से रंगमंच समाज में जागरूकता और चेतना का बड़ा जरिया है। आज नुक्कड़ नाटकों के जरिए दिए जाने वाले संदेश काफी प्रभाव छोड़ते हैं। यह समाज के लिए सचेतक जैसे होते हैं।

विश्व रंगमंच दिवस का उद्देश्य इसे जीवित रख और उन्नत बनाना है ताकि यह अपनी-अपनी भाषाओं, लोकगाथाओं, लोक कलाओं के जरिए वो संदेश दे सके जो मानवता के लिए अपरिहार्य, हितकारक और शांति-सद्भाव को बनाए रखने में सहायक हो।

सक्षम आंगनवाड़ी एवं पोषण 2.0 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

बैतूल। भारत सरकार द्वारा संचालित सक्षम आंगनवाड़ी एवं पोषण 2.0 के तहत पोषण भी पढ़ाई भी तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम महिला बाल विकास परियोजना बैतूल शहरी में जिला आयुष विभाग कार्यालय टिकरी में आयोजित किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में द्वितीय दिवस पर विषय विशेषज्ञ श्रीमती नीरजा शर्मा ने पोषण एवं जीवन चक्र के 100 दिनों के महत्व पर व्याख्यान दिया। विशेष न्यायाधीश दिव्यांगना पांडे ने महिलाओं से संबंधित कानूनों, पॉक्सो अधिनियम और उपभोक्ता संरक्षण मामलों में विधिक सहायता के बारे में प्रतिभागियों को विस्तृत जानकारी दी। इसके अतिरिक्त डीएलओ श्री सोमनाथ राय ने पीड़ित प्रतिकर योजना और निशुल्क विधिक सहायता के बारे में जानकारी प्रदान की। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम महिला सशक्तिकरण और समाज में महिलाओं एवं बच्चों के लिए बेहतर स्वास्थ्य और सुरक्षा सुनिश्चित करने के उद्देश्य से आयोजित किया गया।

बैतूल में बाइक से कट मारने पर की मारपीट

बैतूल। बाइक से कट मारने को लेकर हुए विवाद ने गंभीर रूप ले लिया। पहले मामूली विवाद हुआ, जो कुछ देर में शांत हो गया। बाद में आरोपियों ने एसपी ऑफिस चौक पर तीन युवकों की घेराबंदी कर ली। आरोपियों ने पत्थर, लकड़ी और डंडों से युवकों पर हमला किया। इस घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। गंज थाना टीआई अरविंद कुमरे के अनुसार पीड़ित अनुज वाघमारे ने चार लोगों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराई है। आरोपियों में ग्रीन सिटी के रहने वाले हर्षित बिंजरे, दीपक दवडे, रवि बिंजरे और आयुष वराठे शामिल हैं। पुलिस वायरल वीडियो फुटेज के आधार पर भी आरोपियों की पहचान कर कार्रवाई करेगी। फिलहाल मामले की जांच जारी है।

भक्ति भाव ऐसी धारा है जो डूबा वो पार हो जाएगा: पं.सुखदेव शर्मा

बैतूल। निराकार भगवान भक्ति के कारण साकार रूप लेकर जगत में आए। भगवान को प्राप्त करना है तो विश्वास ही एक मार्ग है अगर जीवन सच्चे मन से भगवान का हो जाए तो उसके सारे संकट दूर हो जाएंगे। यह उद्गार कथा वाचक पंडित सुखदेव शर्मा ने ग्रीन सिटी साईं मंदिर के पास विवेकानंद वार्ड में चल रही भागवत कथा के पांचवे दिन व्यक्त किए। पंडित शर्मा ने कहा कि भक्ति भाव एक ऐसी धारा है जो डूबा वो पार हो जाएगा। ये संसार भगवान का ही स्वरूप है। भगवान के पैर से भूमि हाथ से अंतरिक्ष, नेत्र से दिशाएं, मन से मनुष्य बने हैं। भगवान को भक्त का केवल मन चाहिए। हमारा यश परंपरा है। स्वयं का भोजन यज्ञ है इसलिए हम हर कुछ इस शरीर में नहीं डाल सकते हैं। अतिथि का भोजन भी यज्ञ है अतिथि को पीड़ा हो ऐसा भोजन ना दे। शब्द भी हमें शुद्ध ग्रहण करना और दूसरों को भी शुद्ध देना चाहिए। यही मानवता है। शुद्ध क्या है ये गुरू कथा पुराण बताते हैं इसलिए उनकी शरण में आएं। कथा का आयोजन उमेश, विकास पंढरी, श्री वागद्रे द्वारा किया जा रहा है। कथा प्रतिदिन दोपहर 2 से 5 बजे तक की जा रही है। आयोजकों ने कथा श्रवण का लाभ लेने का आग्रह किया है।

ग्याराह दोहे रामायण पाठ समिति का 290वां सप्ताह संपन्न

बैतूल। रामायण बताती है कि कुछ गुणों को अपनाकर और कुछ खास बातों का ध्यान में रखकर मर्यादा एवं अनुशासन वाला जीवन जीना चाहिए। इससे बुराई पर अच्छाई की जीत होती है। रामायण एक राजपरिवार और राजवंश की कहानी है जो पति-पत्नी, भाई और परिवार के अन्य सदस्यों के आपसी रिश्तों के आदर्श पेश करती है। युवाओं को रामायण से प्रेरणा के

उद्देश्य से ग्यारह दोहे रामायण पाठ समिति संगीतमय रामायण पाठ का आयोजन कर रही है। इसी तारतम्य में ग्यारह दोहे रामायण पाठ और हनुमार चालिसा पाठ का आयोजन शिवशक्ति हनुमन मंदिर विकास वार्ड में संपन्न हुआ। ग्याराह दोहे रामायण पाठ समिति का यह लगातार 290वां सप्ताह था। इसमें जिसमें रामायण पाठ का संगीतमय वाचन किया गया। इस कार्यक्रम में शिवपाल सोमगड़े, रामा साहू, संतोष ओमकार, सुभाष सोमगड़े, मंगल चौरगड़े, छोटू चौरगड़े, बबलु साहू, श्याम टेकपुरे, पुरूषोत्तम बारस्कर, दीपक देशपांडे, दीपक राठौर, सोहनलाल राठौर, संतोष पारखे, राहुल झरबड़े, अशोक पाटनकर, श्री सोनी, ब्रह्मदेव माकोड़े, घनश्याम मदान, डीके देशमुख, छोटे देशपांडे, गौरीशंकर बाथरी, मधु, देवीदास खातरकर, सुनील चरड़े, शिवराज परिहार, रामकिशन बेले, विवेक शर्मा, राजेश धोटे, कमलेश घोडकी, नाथूराम ठाकरे, दीनू पंवार, सतपाल मगरदे, सुनीता सोमगड़े, नविता सोमगड़े सहित बड़ी संख्या में धर्मप्रेमी वार्डवासी मौजूद थे।

मुख्यमंत्री कल्याणी विवाह सहायता योजना अंतर्गत 9 हितग्राहियों को मिली आर्थिक सहायता

बैतूल। कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी ने मुख्यमंत्री कल्याणी विवाह सहायता योजना के अंतर्गत जिले के 9 हितग्राहियों को 18 लाख रुपए की राशि से लाभान्वित किया है। सामाजिक न्याय एवं दिव्यांगजन सशक्तिकरण के उपसंचालक ने बताया कि सामाजिक न्याय एवं दिव्यांगजन सशक्तिकरण के द्वारा मुख्यमंत्री कल्याणी विवाह सहायता योजना मध्य प्रदेश सरकार की योजना है। इस योजना के तहत राज्य की गरीब बेटियों के विवाह के लिए आर्थिक सहायता दी जाती है। योजना के तहत विवाह के उपरांत कल्याणी को 2 लाख की प्रोत्साहन राशि दी जाती है। यह राशि सीधे कल्याणी के बैंक खाते में जमा की जाती है। उक्त योजना अंतर्गत कल्याणी के पुनर्विवाह उपरांत प्राप्त आवेदनों का निराकरण कर 2 लाख की राशि प्रति हितग्राही को प्रदान की गई है।

बैतूल बाजार पुलिस ने हत्या के दो अलग-अलग प्रकरणों में दो आरोपियों को किया गिरफ्तार

हत्या के दोनों ही मामलों में पति निकले हत्यारे

बैतूल। पुलिस हत्या के दो अलग-अलग मामलों में आरोपियों को गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया। दोनों ही मामले बैतूल बाजार थाना क्षेत्र के है, इसमें से एक मामले में पुलिस ने 24 घंटे के भीतर ही आरोपी को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। पुलिस जनसंपर्क अधिकारी से मिली जानकारी के अनुसार 18 मार्च को ग्राम कोलगांव में फरियादी मारोती बामनकर (ग्राम कोटवार) से सूचना प्राप्त हुई कि लक्ष्मी उइके की मृत्यु हो गई है। जिसका शव संदिग्ध अवस्था में उसके झोपड़े में पड़ा हुआ है। सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस अधीक्षक निश्चल एन. झारिया के निर्देशानुसार, प्रकरण की गंभीरता को देखते हुए अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्रीमती कमला जोशी, अनुविभागीय अधिकारी पुलिस बैतूल सुश्री शालिनी परस्ते एवं प्रभारी सीन ऑफ क्राइम निरीक्षक आबिद अंसारी द्वारा घटनास्थल का निरीक्षण किया गया। भौतिक साक्ष्य संकलित कर विधिवत फोटोग्राफी एवं वीडियोग्राफी कराई गई। थाना प्रभारी निरीक्षक अंजना धुर्वे द्वारा मृतका का पीएम कराकर मर्ग कायम किया गया। मर्ग जांच के दौरान प्राप्त तथ्यों के आधार पर धारा 103(1) बीएनएस के तहत अज्ञात आरोपी के विरुद्ध प्रकरण दर्ज कर विवेचना में लिया गया।

खाना खाने को लेकर हुए विवाद में पति ने की थी हत्या ...- पुलिस ने जांच में पाया गया कि मृतिका लक्ष्मी उइके की हत्या उसके पति जुगनू उइके पिता भूरा उइके उम्र 45 वर्ष, निवासी ग्राम कोलगांव द्वारा की गई। आरोपी ने खाना खाने को लेकर हुए विवाद में गुस्से में आकर लकड़ी से मारपीट कर पत्नी की हत्या कर दी। पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर न्यायालय पेश किया। इस कार्रवाही में थाना प्रभारी निरीक्षक अंजना धुर्वे, निरीक्षक आबिद अंसारी (सीन ऑफ क्राइम एक्सपर्ट) सहायक उप निरीक्षक रमन धुर्वे, प्रधान आरक्षक सुभाष माकोड़े (पुलिस फोटो ग्राफर)आरक्षक कमल चौरे, आरक्षक लीलाधर, महिला आरक्षक स्नेहल परते की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

परतापुर ग्राम में हुई महिला की नृशंस हत्या का 24 घंटे के भीतर खुलासा

बैतूल। बैतूल बाजार क्षेत्रांतर्गत ग्राम परतापुर निवासी फरियादिया सृष्टि पिता कमलेश सरयाम ने थाना बैतूल बाजार में रिपोर्ट दर्ज कराई कि 23 मार्च की रात्रि में वह पातो बाई के घर के पास सो रही थी। रात्रि करीब 12 बजे उसके पिता कमलेश सरयाम आए और अवैध संबंधों के संदेह को लेकर उसकी मां

रूपा सरयाम के सिर में कुल्हाड़ी से हमला कर हत्या कर दी। पुलिस ने रिपोर्ट पर धारा 103(1) बीएनएस के तहत आरोपी कमलेश पिता भूत्तू सरयाम उम्र 38 वर्ष, निवासी ग्राम परतापुर, के विरुद्ध प्रकरण पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया। पत्नी की हत्या करने के उपरांत आरोपी पति घटनास्थल से फरार हो गया था। प्रकरण की गंभीरता को ध्यान में रखते हुए पुलिस अधीक्षक बैतूल निश्चल एन. झारिया के निर्देशन में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्रीमती कमला जोशी एवं अनुविभागीय अधिकारी पुलिस बैतूल सुश्री शालिनी परस्ते के मार्गदर्शन में थाना बैतूल बाजार पुलिस द्वारा विशेष टीम गठित की गई। गठित टीम द्वारा आरोपी की संभावित स्थानों पर तलाश की गई, जिसके परिणामस्वरूप थाना बैतूल बाजार पुलिस ने घटना के 24 घंटे के भीतर आरोपी कमलेश सरयाम को गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया, जहां से उसे न्यायिक अभिरक्षा में भेज दिया गया।

पुलिस अधीक्षक ने पुलिसकर्मियों को फीता लगाकर किया सम्मानित

बैतूल। बैतूल पुलिस विभाग में सेवा दे रहे 10 आरक्षकों को उनकी उत्कृष्ट सेवा और विभागीय प्रक्रिया के तहत प्रधान आरक्षक पद पर कार्यवाहक पदोन्नति प्रदान की गई। पुलिस अधीक्षक बैतूल निश्चल एन. झारिया द्वारा पुलिस कंट्रोल रूम बैतूल में आयोजित एक समारोह में इन सभी पुलिसकर्मियों को फीता लगाकर सम्मानित किया गया और कार्यवाहक प्रधान आरक्षक के पद का दायित्व सौंपा गया। इस अवसर पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक बैतूल श्रीमती

कमला जोशी, अनुविभागीय अधिकारी (पुलिस) बैतूल सुश्री शालिनी परस्ते, अनुविभागीय अधिकारी (पुलिस) शाहपुर श्री मयंक तिवारी सहित अन्य अधिकारी एवं पुलिसकर्मी उपस्थित रहे। इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक बैतूल निश्चल एन. झारिया ने पदोन्नत प्रधान आरक्षकों को बधाई एवं शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि पुलिस विभाग में पदोन्नति एक गौरवशाली उपलब्धि होती है, जो न केवल व्यक्तिगत मेहनत और अनुशासन का परिणाम होती है, बल्कि विभाग के प्रति समर्पण और कर्तव्यपरायणता को भी दर्शाती है। उन्होंने पदोन्नत पुलिसकर्मियों को नई जिम्मेदारियों एवं चुनौतियों से अवगत कराते हुए निर्देशित किया कि वे अपने कर्तव्यों का निर्वहन पूरी ईमानदारी, निष्ठा और समर्पण के साथ करें।

यह आरक्षक हुए पदोन्नत

10 आरक्षक, जिन्हें उत्कृष्ट सेवा और विभागीय प्रक्रिया के तहत प्रधान आरक्षक पद पर कार्यवाहक पदोन्नति प्रदान की गई, उसमें आरक्षक 172 रविशंकर इंगरे, आरक्षक 349 संजेश धुर्वे, आरक्षक 369 शिवकुमार उइके, आरक्षक 425 देवेन्द्र ठाकुर, आरक्षक 14 श्रुतिकिरण, आरक्षक 50 संजय बैन, आरक्षक 678 मन्तराम सरयाम, आरक्षक 458 विक्रम सिंह टेकाम, आरक्षक 439 मोनिका साहू, आरक्षक 108 अमित कवडे शामिल है।

अवैध देशी पिस्टल के साथ कुख्यात बदमाश गिरफ्तार

बैतूल। थाना आमला क्षेत्रातंर्गत बोडखी पुलिस चौकी द्वारा कुख्यात बदमाश करण उर्फ झांगरू पिता गणेश सोनेकर निवासी स्वीपर मोहल्ला कोठी बाजार बैतूल को अवैध देशी पिस्टल के साथ गिरफ्तार किया गया। बोडखी पुलिस को मुखबिर से सूचना प्राप्त हुई कि एक व्यक्ति पिस्टल लेकर बेचने की मंशा से रामटेक पहाडी के पास घूम रहा है। सूचना पर थाना प्रभारी ने तत्काल पुलिस टीम का गठन किया और पुलिस टीम ने रामटेक पहाडी के पास पहुंची, जहां एक व्यक्ति नीले रंग की टी शर्ट पहने घूमते दिखा, जिसे रोका तो पुलिस को देखकर भागने का प्रयास करने लगा। हमराह फोर्स की मदद से आरोपी की घेराबंदी कर पकड़ा, जिसका नाम, पता पूंछने पर करण उर्फ झांगरू पिता गणेश सोनेकर निवासी स्वीपर मोहल्ला, कोठी बाजार बैतूल बताया। तलाशी लेने पर एक अवैध देशी पिस्टल कीमत 10,000 बरामद की गई। पुलिस ने आरोपी पर धारा 25 आर्म्स एक्ट के अंतर्गत मामला दर्ज कर लिया गया है।

साप्ताहिक बाजार का सुधार कार्य प्रारंभ

मुरमी करण, पिचिंग, जल निकासी कार्य प्रारंभ, सुलभ शौचालय और नालियों का भी होगा निर्माण

बैतूल / मुलताई। पीडब्ल्यूडी के पुराने नागपुर रोड पर लगाए गए साप्ताहिक बाजार को सुविधाजनक आकार देने के प्रयास प्रारंभ हो गए हैं। नगरपालिका नागपुर रोड पर लगे साप्ताहिक बाजार के लगभग 800 मी लंबे भाग में मुरमी करण का कार्य प्रारंभ कर दिया है। नगर पालिका अध्यक्ष वर्षा गड़ेकर एवं एसडीएम ने नगरपालिका कर्मचारियों के साथ समतलीकरण किए जा रहे साप्ताहिक बाजार स्थल का निरीक्षण किया और कर्मचारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। बता दे कि जिला कलेक्टर के आदेश से आग्ल स्कूल खेल मैदान की भूमि को मुक्त कराकर साप्ताहिक बाजार को पुराने नागपुर रोड पर लगना प्रारंभ किया गया था। साप्ताहिक बाजार स्थान परिवर्तन वर्तमान नगर परिषद का सराहनीय प्रयास था, किंतु इसके साथ ही इस स्थल पर व्यापारियों और हाट मे पहुंचने वालों को सुविधा उपलब्ध कराना एक बड़ी चुनौती भी, क्योंकि वर्षो से वीरान पड़े इस क्षेत्र में काली मिट्टी और आबादी क्षेत्र से आने वाला नालियों का पानी एक बड़ी समस्या थी। मिट्टी से उठने वाली धूल भी बाजार पहुंचाने वालों के लिए बड़ी समस्या बन गई थी जिसे देखते हुए नगर पालिका ने आज से मुरमीकरण का कार्य प्रारंभ किया है। लाइटिंग व्यवस्था की गई है पानी की निकासी के लिए पाइप डाले गए हैं और निचले भाग में पत्थर की पिचिंग की गई है।

सर्व सुविधाजनक होगा साप्ताहिक बाजारः वर्षा गड़ेकर- नगर पालिका अध्यक्ष वर्षा गढेकर ने बताया कि वर्षा काल से पूर्व साप्ताहिक बाजार को सर्व सुविधाजनक बनाना हमारी प्राथमिकता है। इसके लिए हमने मुरमी करण, लाइटिंग व्यवस्था, पानी निकासी की व्यवस्था की है। बाजार में आने वालों के लिए शुद्ध पेयजल की व्यवस्था भी की है। इसके साथ ही हमने साप्ताहिक बाजार से गंदे पानी के निकासी के लिए नाली निर्माण के लिए एस्टीमेट भेजा है स्वीकृति के बाद नालियों का निर्माण होगा। सुलभ शौचालय के निर्माण के लिए भी सभी आवश्यक विभागीय कार्रवाई पूर्ण कर ली गई है। हाय मास्क लाईट के टेंडर के बाद साप्ताहिक बाजार में पर्याप्त लाइटिंग व्यवस्था हो सके इसके लिए जगह-जगह हाई मास्क लगाए जाएंगे।

मेंढ़ा डेम से प्रभावित गाडवा गांव के किसानों को अब तक नहीं मिला मुआवजा

4 साल से अपने हक के लिए भटक रहे किसान, 2 हजार किसानों को अब तक नहीं मिला पूरा मुआवजा

बैतूल। मेंढ़ा डेम मध्यम परियोजना के तहत प्रभावित किसानों को अब तक पूरा मुआवजा नहीं मिलने से किसान उग्र हो गए हैं। बुधवार को सैकड़ों किसान किसान समर्थक समाजसेवी निखिल बावने के नेतृत्व में कलेक्ट्रेट पहुंचे और जमकर नारेबाजी करते हुए जिला प्रशासन को ज्ञापन सौंपा। किसानों का कहना है कि डेम निर्माण के दौरान हुई खुदाई के कारण तप्ती नदी का बहाव बदल गया और गाडवा गांव के खेतों में मिट्टी कटाव के साथ फसलें बर्बाद हो गईं। अधिकारियों ने सर्वे के दौरान किसानों को मुआवजा देने की बात कही थी, लेकिन 4 साल बाद भी उन्हें अब तक उनका हक नहीं मिला।

किसानों का कहना है कि जब मेंढ़ा डेम का निर्माण किया जा रहा था, तब प्रशासन ने गांव में सर्वे कर आश्वासन दिया था कि यहां के किसानों को उनकी जमीन का उचित मुआवजा दिया जाएगा। इसके पीछे तर्क यह था कि जब डेम के गेट खोले जाएंगे, तो गाडवा गांव पूरी तरह पानी में समा सकता है। इसके बावजूद अब तक यहां के किसानों को कोई मुआवजा नहीं मिला। किसानों ने बताया कि इस परियोजना के तहत कुल 2 हजार किसान परिवार सहित लगभग 20 हजार की जनसंख्या प्रभावित हुई हैं। सरकार ने 10 लाख हेक्टेयर जमीन के लिए मुआवजा देने का वादा किया था, लेकिन अब तक सिर्फ 5 लाख हेक्टेयर का ही भुगतान हुआ है। 4 साल बाद भी आधे किसानों को उनका मुआवजा नहीं मिला है। इससे नाराज किसान लगातार अधिकारियों के चक्कर लगा रहे हैं, लेकिन उनकी कोई सुनवाई नहीं हो रही।

किसानों ने सरकार को दी चेतावनी- किसानों ने प्रशासन को साफ शब्दों में चेतावनी दी कि अगर जल्द ही उन्हें मुआवजा नहीं मिला, तो वे उग्र आंदोलन करेंगे। किसान नेता निखिल बावने ने कहा कि सरकार किसानों के साथ छलावा कर रही है। डेम की खुदाई के कारण गांव की कृषि भूमि बर्बाद हो गई, लेकिन सरकार ने मुआवजा देने के अपने वादे से मुंह मोड़ लिया। किसानों का कहना है कि वे बीते 4 सालों से जिला प्रशासन और संबंधित विभागों से लगातार गुहार लगा रहे हैं, लेकिन उनकी मांगों को अनसुना किया जा रहा है। अब उन्होंने सरकार से मांग की है कि जल्द से जल्द गाडवा गांव के सभी प्रभावित किसानों को उनकी जमीन का मुआवजा दिया जाए, ताकि वे अपने उजड़े खेतों को फिर से संवार सकें। अगर उनकी मांग नहीं मानी गई, तो वे जल्द ही बड़े आंदोलन की घोषणा करेंगे।

व्याख्यानमाला एवं काव्यपाठ का आयोजन आज

बैतूल। साहित्य अकादमी मध्य प्रदेश, संस्कृति परिषद भोपाल द्वारा पं. भवानीप्रसाद मिश्र स्मृति समारोह के अंतर्गत व्याख्यानमाला एवं काव्यपाठ का आयोजन गुरुवार 27 मार्च शाम 6 बजे से विवेकानन्द विज्ञान महाविद्यालय सदर बैतूल में किया गया है। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता भोपाल के वरिष्ठ साहित्यकार एवं अखिल भारतीय साहित्य परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री ऋषिकुमार जी मिश्र करेंगे, वहीं व्याख्यान् डॉ. प्रवीण गुगनानी, वरिष्ठ साहित्यकार, विदेश मंत्रालय, भारत सरकार में सलाहकार, राजभाषा, क्षेत्रीय महामंत्री, अखिल भारतीय साहित्य परिषद् का होगा। कार्यक्रम में हिंदी साहित्य अकादमी के निदेशक डॉ विकास दवे विशेष रूप से उपस्थित रहेंगे। कार्यक्रम दो सत्र में होगा जिसमें प्रथम सत्र व्याख्यान एवं द्वितीय सत्र काव्यपाठ होगा जिसमें नरसिंहगढ़ के वरिष्ठ कवि हरिसिंह परिहार, बाबू देवाल घायल आष्ठा, मनोज दुबे, कांटाफोड, हीरामनी वैष्णव कोरबा, पुष्पक देशमुख प्रभातपट्टन अजय पवार बैतूलबाजार, सुदर्शन देशमुख मुलताई, धर्मेंद्र खवसे बैतूलबाजार और स्थानीय संयोजक सुनील पांसे दास बैतूल एवं प्रद्युम्न सरसोदे स्थानीय कवि अपनी रचनाओं से काव्य प्रेमियों को सराबोर करेंगे। अखिल भारतीय साहित्य परिषद जिला इकाई बैतूल ने सभी काव्य प्रेमियों को आमंत्रित किया है।

50 वर्षो की तपस्या का मिल रहा फल : पूर्व केंद्रीय मंत्री विक्रम वर्मा

सागौर में तहसील सह अनुविभागीय कार्यालय का लोकार्पण

धार। 6 करोड़ 40 लाख की लागत से बनने वाले जिले की पीथमपुर तहसील के नवीन भवन का लोकार्पण बुधवार को सागौर में पूर्व केंद्रीय मंत्री विक्रम वर्मा, विधायक नीना वर्मा, भाजपा जिलाध्यक्ष महंत नीलेश भारती, जिला महामंत्री प्रकाश धाकड़,पूर्व नगर पालिका पीथमपुर अध्यक्ष प्रतिनिधि संजय वैष्णव सहित अन्य जनप्रतिनिधियों सहित क्षेत्रीय गणमान्य नागरिकों की मौजूदगी में हुआ। विधायक नीना वर्मा ने फीता काटकर नवीन तहसील भवन में प्रवेश किया। मंचीय कार्यक्रम में पूर्व केंद्रीय मंत्री, विधायक, जिलाध्यक्ष भाजपा सहित अन्य जनप्रतिनिधियों का स्वागत किया गया। भाजपा जिलाध्यक्ष महंत नीलेश भारती ने कहा एक समय सागौर क्षेत्र अत्यंत पिछड़ा क्षेत्र था लेकिन भाजपा की सरकार और पूर्व केंद्रीय मंत्री विक्रम वर्मा , नीना वर्मा के अथक प्रयासों से क्षेत्र की दशा और दिशा दोनों बदल गई, क्षेत्र का विकास केवल भाजपा ही कर सकती है।

कार्यक्रम कों सम्बोधित करते हुए पूर्व केंद्रीय मंत्री विक्रम वर्मा ने कहा की क्षेत्र का विकास एक दो दिन या एक दो वर्षो में नहीं हुआ पूरे 50 वर्षो की तपस्या का फल है। हमने क्षेत्र के विकास के लिए अनवरत काम किया मुझे बतौर विधायक काम करने के लिए 15 वर्ष मिले जिसमे हमने क्षेत्र के लिए काम किया बीच में तीन अलग अलग विधायक भी चुने गए जिनके कही पत्थर भी नज़र नहीं आते वर्तमान विधायक नीना वर्मा ने घर की चाहर दीवारों से बाहर निकल कर काम किया आज क्षेत्र का समुचित विकास आपके सामने है। एक भी गाँव ऐसा नहीं है पुरी विधानसभा में जहा सड़क की पहुंच ना हो अब तो हमने टोले मजरों तक सड़को का जाल बिछाने की बात भी कही है।

पीथमपुर उद्योगो की पहली पसंद इसलिये बना क?योकि यहां गुंडागर्दी, वसूली, नहीं है । पूर्व केंद्रीय मंत्री श्री वर्मा ने कहा सन 1977 में एक पंचायत का पीथमपुर आज पूरे विश्व में जाना पहचाना जाता है यह देशभर के उद्योगपतियों की निवेश के रूप में प्राथमिकता में है क्युकी यंहा ना तो गुंडागर्दी है ना ही हफ्ता वसूली है यंहा उद्योगपतियों को बिना वजह परेशान नहीं होना पड़ता इस कारण यहा निवेश बड़ा फैक्ट्रीया डली आज पीथमपुर सागौर और इससे आगे तक फ़ैल गया और क्षेत्र का विकास हुआ।

बाक्स- हम भविष्य की चिंता करते है - नीना वर्मा विधायक- धार विधायक नीना वर्मा ने कहा हम वर्तमान की ही चिंता नहीं करते, वरन हम भविष्य की कार्य योजना पर सतत कार्य करते है। हम सरकार के माध?यम से विकास तो करवा ही रहे है साथ ही हम यह भी देख रहे है भविष्य में क्षेत्र के लोगो कों क्या दिक्कत व परेशानी आ सकती है किन किन सुविधाओं कों बढ़ा जाना आवश?यक है, उसका पूर्व से आंकलन करवाते है। इसी कारण सागौर की जनता को छोटे छोटे कामों के लिए धार आने में दिक्कते होंगी समय के साथ अन्य परेशानिया होंगी इसलिए हमने बहुत पहले से मुख्यमंत्री से पीथमपुर कों तहसील बनाने की मांग की जिसको तत्कालीन मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने माना और आज यह भवन लोकर्पित हुआ अब इस क्षेत्र के लोगो कों आसानी होंगी एक ही भवन में कोषालय, पंजीयन विभाग सहित कई काम संपन्न हो सकेंगे जिससे समय के साथ अन्य दिक्कतों से मुक्ति मिलेगी।

जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा ने बताया कि कार्यक्रम में भाजपा ज़िला महामंत्री प्रकाश धाकड़, भाजपा नेता संजय वैष्णव, जीवन रघुवंशी नरेंद्र चौधरी, राजेंद्ररघुवंशी, विनीत मंडलोई, भाजपा मंडल अध्यक्ष मनोज धाकड, गणेश जयसवाल नारायण पटेल जीवन पटेल लोकेश चौधरी हंसराज पटेल, प्रकाश कामदार देवी गौड़ पिंटू जायसवाल कल्याण सिंह पटेल विष्णु चौधरी एवं समस्त शहर-ग्रामीण जन उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन प्रकाश धाकड़ ने किया तथा आभार मनोज धाकड ने माना।

कर्मयोगी का सम्मान

भोपाल। गीता में कहा गया है कि योगः कर्मसु कौशलं अर्थात कार्यस्थल पर ईमानदारी एवं सेवा भाव से किया गया कर्म ही योग है। और स्वार्थरहित सेवा कभी व्यर्थ नहीं जाती। सेवानिवृत्त भेल के महाप्रबंधक अविनाश चंद्र के सम्मान में संगी साथियों द्वारा आयोजित अनेक भावभीने आयोजन

इसके उदाहरण हैं। भोपाल इकाई के युवा सेवा समूह जी-7 ने अविनाश चंद्रा तथा उनकी पत्नी मनीता चंद्रा का सम्मान तथा अभिनंदन किया। इस अवसर पर जीपी. बघेल, शैलेंद्र महाजन महाप्रबंधक, विजय जोशी, पूर्व ग्रुप महाप्रबंधक, अमूल्य देवता, संयोजक एवं वरिष्ठ उपमहाप्रबंधक, प्रभात कुमार, जयेश जनार्धनन वरिष्ठ प्रबंधक तथा अन्य साथियों सहित उपस्थित थे।

एम्स की शोधकर्ता ने वैश्विक मंच पर ऑटोप्सी में सेप्सिस निदान पर अग्रणी अध्ययन प्रस्तुत किया

भोपाल। एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह संस्थान में शैक्षणिक श्रेष्ठता और ज्ञान के आदान-प्रदान को एक प्रेरक परंपरा के रूप में विकसित कर रहे हैं। इस कड़ी में, फॉरेंसिक मेडिसिन और टॉक्सिकोलॉजी विभाग की पीएचडी शोधार्थी सुश्री अश्विनी चंद्रन ने अपने मेंटर प्रो. (डॉ.) अनीत अरोड़ा के मार्गदर्शन में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। उन्होंने 17 से 22 फरवरी, 2025 तक अमेरिका के बाल्टीमोर, मैरीलैंड में आयोजित 77वें वार्षिक अमेरिकन एकेडमी ऑफ फॉरेंसिक साइंसेज वैज्ञानिक सम्मेलन में अपने शोध कार्य को प्रस्तुत किया। सुश्री चंद्रन ने ऑटोप्सी में सेप्सिस के लिए प्रोकेल्सीटोनिन का उपयोगः एक नवीन, साक्ष्य-आधारित, प्रभावी पॉइंट-ऑफ-केयर टूल विषय पर मौखिक प्रस्तुति दी। उनका शोध सेप्सिस से संबंधित मृत्यु की सटीक पहचान में एक महत्वपूर्ण कमी को दूर करने की दिशा में एक सार्थक कदम है। प्रोकेल्सीटोनिन जो नैदानिक परिस्थितियों में सेप्सिस के लिए एक विश्वसनीय बायोमार्कर के रूप में जाना जाता है, को इस अध्ययन में पोस्टमार्टम जांच के लिए एक संभावित उपकरण के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इस अध्ययन ने यह दर्शाया कि सेप्सिस-संबंधित मौतों की सही पहचान के लिए मानकीकृत प्रक्रियाओं की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त, माइक्रोबायोलॉजिकल और बायोकेमिकल विश्लेषणों के समावेश के माध्यम से, यह शोध एंटीमाइक्रोबियल रेजिस्टेंस की निगरानी, सार्वजनिक स्वास्थ्य नीति निर्माण और अस्पताल-प्राप्त संक्रमणों की रोकथाम में भी सहायक सिद्ध हो सकता है।

प्रो. (डॉ.) अजय सिंह ने इस उपलब्धि पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा- यह एम्स भोपाल के लिए अत्यंत गर्व की बात है कि यहां फॉरेंसिक मेडिसिन के क्षेत्र में इतना प्रभावशाली और व्यावहारिक अनुसंधान हो रहा है। सुश्री अश्विनी चंद्रन की यह उपलब्धि संस्थान की शोध प्रतिबद्धता को दर्शाती है। उनका अध्ययन न केवल फॉरेंसिक जांच को सुदृढ़ करेगा, बल्कि सार्वजनिक स्वास्थ्य और एंटीमाइक्रोबियल रेजिस्टेंस निगरानी में भी महत्वपूर्ण योगदान देगा। हम समाज के हित में ऐसे नवोन्मेषी अनुसंधान का समर्थन करते रहेंगे। यह विशेष शोध पूरे भारत में केवल एम्स भोपाल में किया जा रहा है, जो संस्थान की अग्रणी चिकित्सा अनुसंधान क्षमताओं को दर्शाता है। प्रो. (डॉ.) अनीत अरोड़ा के सतत मार्गदर्शन और संस्थान के नेतृत्व के समर्थन से यह अध्ययन सफल हुआ है।

ओरल हेल्थ शिविर में रैन बसेरा के 20 व्यक्तियों का किया गया दंत परीक्षण

बैतूल। राष्ट्रीय मुख स्वास्थ्य कार्यक्रम के अंतर्गत ओरल स्क्रीनिंग शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ रविकांत उइके ने बताया कि रैन बसेरा बैतूल में शिविर लगाकर 20 व्यक्तियों का दंत परीक्षण किया गया एवं उन्हें मुख स्वास्थ्य के लिए परामर्श दिया गया। शिविर में चिकित्सकों को कैंसर के पहले की अवस्था ओएसएमएफ, पायरिया, दांतों में कैरीज, एट्रीजन, एब्रीजन एवं दांतों में ठंडा-गरम लगना आदि समस्याएं मिलीं, जिसके लिए उन्हें दवाईयां उपलब्ध कराई गई एवं चिकित्सकीय परामर्श देते हुये आगे के उपचार के लिये जिला चिकित्सालय बैतूल बुलाया गया। शिविर में सलाह दी गई कि दिन में दो बार ब्रश करना चाहिये। मुख की साफ सफाई का विशेष ध्यान रखना चाहिये।

'विश्वरंग फाउंडेशन' द्वारा निर्मित अनूठी फ़िल्म 'गणगौर गाथा'

'द पोडियम टीम' के युवा फ़िल्मकारों ने संजोयी देशज विरासत

भोपाल। चैत्र नवरात्रि के पारंपरिक गणगौर पर्व के दौरान मध्यप्रदेश के निमाड़ अंचल में फ़िल्म 'गणगौर गाथा' विशेष आकर्षण का केन्द्र बन गई है। विश्वरंग फाउंडेशन द्वारा निर्मित इस फ़िल्म का निर्देशन युवा फ़िल्मकार आदित्य उपाध्याय ने किया। 'द पोडियम' टीम के युवा कलाकारों ने इसका संयोजन किया है। हाल ही एक गरिमामय समारोह में इस अनूठी डाक्यूमेंट्री फ़िल्म के पोस्टर का लोकार्पण 'विश्वरंग' के संस्थापक-निदेशक, साहित्य, संस्कृति और शिक्षा जगत के अग्रणी हस्ताक्षर संतोष चौबे ने किया। गणगौर पर्व के दौरान इस फ़िल्म के प्रदर्शनों का सिलसिला खंडवा, महेश्वर, बड़वाह, खरगोन सहित पूर्व और पश्चिम निमाड़ के गाँव-देहातों में हो रहा है।

सांस्कृतिक धरोहर और देशज कलाओं के शोध तथा दस्तावेज़ीकरण की श्रृंखला में 'गणगौर गाथा' का निर्माण एक अनूठी पारंपरिक सौग़ात है। इस फ़िल्म की परिकल्पना और शोध आलेख के साथ ही वाचक स्वर संस्कृतिकर्मी-कला समीक्षक विनय उपाध्याय का है। पोडियम टीम ने गत वर्ष गणगौर पर्व के अवसर पर पूर्व और पश्चिम निमाड़ के ग्रामीण इलाकों की सांस्कृतिक यात्रा की और इस पर्व से जुड़े अनुष्ठान तथा अन्य पारंपरिक गतिविधियों का वास्तविक फ़िल्मांकन किया। यह फ़िल्म लगभग 20 मिनिट की है। इस फ़िल्म का वीडियो संपादन निखिल कुमार अरमान आर्य सिन्हा तथा अभिषेक कनौजिया ने किया है। छायांकन

अनिरूद्ध चौथमल, आशीर्वाद मंडल और हेमांग कुरील का है। ध्वन्यांकन तनिष्क भूरिया ने किया है जबकि कोरियोग्राफ़ी लोक नर्तक संजय महाजन की है। सीवी रमन विवि खंडवा में आयोजित निमाड़ लोकरंग में 'गणगौर गाथा' की पहली स्क्रीनिंग की गई। भारत के विभिन्न राज्यों से आए लोक मर्मज्ञों, साहित्यकार, समाजसेवियों, शिक्षाविदों तथा छात्र-छात्राओं ने इस फ़िल्म का सामूहिक अवलोकन किया। उल्लेखनीय है कि पूर्व और पश्चिम निमाड़ की सरहदों से लेकर हरदा भुआणा के सीमावर्ती गाँव-कस्बों के रहवासी गणगौर में अपनी लोक आस्था और श्रद्धा का अभिषेक करते हैं।

यह फ़िल्म बताती है कि एक सिरे पर आध्यात्म के गहरे रंग, अनुष्ठान की पवित्रता, पूजा-प्रार्थना और निवेदन तो दूसरे सिरे पर लोकरंजन में आकंठ डूबा तन-मन एक आदिम सुख की इच्छा से भरकर गणगौर में थिरकने लगता है। दूसरे सिरे पर रनुबाई यानी निमाड़ की स्त्री को ही अधिष्ठात्री देवी मानकर उसका गुणगान किया जाता है। गीत की कड़ियों और लय की लड़ियों में लहराते संगीत तो यहाँ दूर देश को ब्याही रनुबाई की अपनी सखियों के संग ठिठोली है, तो प्रेम, ममत्व, करूणा, वात्सल्य और वियोग भी है।

यह फ़िल्म लोकपर्व के उन महत्वपूर्ण पक्षों को भी सामने लाती है जहाँ धर्म, संस्कृति, विज्ञान और अध्यात्म मिलकर मनुष्यता का उत्सवी रूपक बन जाते हैं। चैत्र महीने के दसवें दिन से आगामी नौ दिनों तक मध्यप्रदेश के निमाड़ की धरती गणगौर की धन्यता को गाने मचल उठती है। इन गीतों में स्मृतियों की दुनिया खुलती है। स्त्री की सृजन शक्ति, उसकी अभिलाषाएँ, उसके सरोकार, उसकी नियति और दैवीय महिमा के दिव्य स्वरूपों को जीवन्त होता देखा जा सकता है।

आदित्य उपाध्याय फ़िल्म प्रॉडक्शन में स्नातकोत्तर हैं। उनकी शॉर्ट फ़िल्म 'लेटर बॉक्स' का चयन चित्र भारती अंतरराष्ट्रीय फ़िल्म महोत्सव के लिए हुआ है। उन्होंने महेश्वर और मांडू के पुरातात्विक वैभव, साहित्य तथा कलाओं के अंतरराष्ट्रीय महोत्सव 'विश्वरंग' और रवीन्द्रनाथ टैगोर के कृती-व्यक्तित्व पर एकाग्र लघु फ़िल्मों का निर्माण स्वयं के निर्देशन में किया है।

भाषा- स्वराज के बिना आजादी अधूरी : विजयदत्त श्रीधर

भोपाल से होगा भारतीय भाषा सत्याग्रह का शंखनाद

भोपाल। भारत की स्वाधीनता को संपूर्णता प्रदान करने के लिए भारत में भाषा- स्वराज अपरिहार्य है। 'अपनी भाषा पर अभिमान, सब भाषाओं का सम्मान' के सामंजस्यपूर्ण उद्घोष के साथ भोपाल से भारतीय भाषा सत्याग्रह का शंखनाद होगा। माधवराव सप्रे स्मृति समाचारपत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान की इस पहल को अखिल भारतीय स्तर पर हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग और राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा का समर्थन और सहभागिता प्राप्त है। मध्यप्रदेश में श्री मध्यभारत हिन्दी साहित्य समिति इंदौर, मध्यप्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, तुलसी मानस प्रतिष्ठान, गांधी भवन न्यास और मध्यप्रदेश लेखक संघ इस अभियान में सक्रिय सहभागी हैं। हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग के आणन्द में संपन्न 76वें अधिवेशन में सर्वसम्मति से भाषा-स्वराज का प्रस्ताव स्वीकार किया गया है। इसका मूल मंत्र है- संकल्प का विकल्प नहीं होता। अर्थात मूल राजभाषा अधिनियम का बिना किंतु-परंतु के अनुपालन हो।

सप्रे संग्रहालय के संस्थापक विजयदत्त श्रीधर ने बताया कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में शिक्षा में भाषा विषयक प्रावधान बहुत स्पष्ट हैं। इसमें मातृभाषा में प्राथमिक शिक्षा तथा समुन्नत प्रादेशिक भाषाओं और हिन्दी में उच्चतर शिक्षा की व्यवस्था है। यह सभी भारतीय भाषाओं को महत्व देती है। परंतु राजनीतिक स्वार्थ और सत्ता के दुष्चक्र में भाषा के सवाल को जिस तरह सन 1965 से उलझाया गया है, उसमें समाधान का मार्ग दृढ़ राष्ट्रीय संकल्प से ही निकल सकता है। भारतीय भाषाओं के बीच परस्पर सम्मान और सौहार्द से यह गुत्थी सुलझ सकती है। टालमटोल की रीति-नीति से गुत्थी और अधिक उलझ रही है। 'अंग्रेजी की गुलामी से मुक्त हुए बिना स्वाधीनता संपूर्ण नहीं हो सकती।

भारतीय भाषा सत्याग्रह के सूत्र इस प्रकार हो सकते हैं-

1. हर भारतीय अपनी भाषा पर अभिमान रखे। अन्य भारतीय भाषाओं का सम्मान करे।
2. दैनन्दिन जीवन के प्रत्येक क्रियाकलाप में अपनी भाषा का प्रयोग करे। शुद्ध वर्तनी और सही उच्चारण पर ध्यान दे। अपनी भाषा के अंकों को व्यवहार में लाए।
3. जिनकी मातृभाषा कोई जनपदीय लोकभाषा हो, वे घर-परिवार और विवाह आदि सामाजिक कार्यों में उसी का प्रयोग करें।
4. भारतीय भाषाओं के बीच शब्दों का आदान-प्रदान बढ़ाएँ। हिन्दी का शब्द भाण्डार बढ़ाने के लिए अन्य भारतीय भाषाओं से उपयुक्त शब्द ग्रहण करना चाहिए। इसी तरह अन्य भारतीय भाषाएँ भी हिन्दी से शब्द ग्रहण करें।
5. हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं के बीच श्रेष्ठ साहित्य का आदान-प्रदान बढ़े।
6. शिक्षा के लिए यह भाषा नीति व्यावहारिक और राष्ट्रीय हितों की पोषक हो सकती है-

- प्राथमिक शिक्षा का माध्यम केवल मातृभाषा हो।
- माध्यमिक विद्यालयों से विश्वविद्यालयों तक हिन्दी का पठन-पाठन पूरे देश में हो।
- जिन प्रदेशों की अपनी समुन्नत भाषाएँ हैं, वहाँ वही भाषाएँ शिक्षण का माध्यम हों। त्रिभाषा सिद्धांत के अनुरूप दूसरी भाषा के रूप में हिन्दी अवश्य पढ़ाई जाए।
- हिन्दी क्षेत्रों में विशेष भाषा के रूप में विश्वविद्यालयों में किसी न किसी भारतीय भाषा का पठन-पाठन आवश्यक हो। प्रदेश शासन के अधीन आने वाले विश्वविद्यालय विशेष भाषा के रूप में एक-एक भाषा चुन लें। यथा- तमिल, तेलुगु, मलयालम, कन्नड, बांग्ला, ओडिया, मराठी, गुजराती आदि। जब हिन्दी क्षेत्रों में अन्य भारतीय भाषाओं को अपनाया जाएगा, तब उन भाषा क्षेत्रों में हिन्दी के प्रति रुझान बढ़ेगा।
- ज्ञान-विज्ञान के वैश्विक संपर्क के लिए अँगरेजी भाषा का अध्ययन कराया जाता है। इसके साथ-साथ फ्रेंच, जर्मन, जापानी, रूसी, मंदारिन, अरबी आदि भाषाओं के शिक्षण की व्यवस्था रहे। परंतु विदेशी भाषाओं को केवल 'स्किल' के रूप में अपनाया जाए।
- हिन्दी और भारतीय भाषाओं को रोजगार परक स्वरूप दिया जाए। विज्ञान और प्रौद्योगिकी की भाषा के रूप में ढाला जाए।
- अंग्रेजी की 'स्पेल चैक' के समान हिन्दी और भारतीय भाषाओं के लिए भी सही शब्द/वर्तनी की जाँच का प्रावधान सूचना प्रौद्योगिकी में विकसित किया जाए।

वन नेशन, वन इलेक्शन को लेकर बैठक सम्पन्न

बैतूल। वन नेशन वन इलेक्शन के तहत केसर बाग मैरिज लॉन में बुधवार 26 मार्च को एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई, जिसमें भाजपा पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं ने हिस्सा लिया। बैठक की अध्यक्षता भाजपा जिला अध्यक्ष सुधाकर पवार ने की। उन्होंने कहा कि यह व्यवस्था लागू होने से देशभर में समय और धन की बचत होगी, जिससे कल्याणकारी योजनाओं को बेहतर तरीके से लागू किया जा सकेगा। बैठक को संबोधित करते हुए अभियान के सहसंयोजक जयदीप रूनवाल ने कहा कि इस पहल को सफल बनाने के

लिए युवाओं के साथ-साथ सोशल मीडिया इंफ्लूएंसरों की भागीदारी भी जरूरी होगी। उन्होंने जोर देकर कहा कि युवा वर्ग ही इस अभियान की सफलता में अहम भूमिका निभाएगा। अभियान के जिला संयोजक अतीत पवार ने कहा कि यदि लोकसभा और विधानसभा चुनाव एक साथ कराए जाते हैं तो प्रशासनिक स्थिरता बनी रहेगी। इससे सरकार को पूरे कार्यकाल में योजनाओं को लागू करने में आसानी होगी। उन्होंने बताया कि एक राष्ट्र, एक चुनाव की अवधारणा 1984 में चर्चा में आई थी और 2023 में पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद की अध्यक्षता में एक उच्चस्तरीय समिति का गठन किया गया, जो इस प्रणाली को लागू करने की संभावनाओं पर विचार कर रही है। इस मौके पर उपस्थित भाजपा नेताओं और कार्यकर्ताओं ने संकल्प लिया कि वे जनता के बीच जागरूकता फैलाएंगे और समर्थन जुटाने के लिए विभिन्न स्तरों पर कार्य करेंगे। बैठक में नरेन्द्र शर्मा, निर्गुण देशमुख, तपन मालवीय, पूरन साहू, अजय पवार, चाणक्य राखडे, अनिल खंडेलवार और सूर्यदीप त्रिवेदी विशेष रूप से मौजूद रहे।

जन अभियान परिषद के उपाध्यक्ष नागर ने जल गंगा संवर्धन अभियान 2025 के लिए दिए दिशा निर्देश

जिले में जल संरक्षण के लिए 30 मार्च से 30 जून तक चलेगा अभियान

बैतूल। मप्र जन अभियान परिषद के जिला कार्यालय बैतूल में परिषद के अधिकारी-कर्मचारियों को प्रदेश उपाध्यक्ष मोहन नागर ने जल गंगा संवर्धन अभियान 2025 के आयोजन और क्रियान्वयन से संबंधित आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। यह अभियान 30 मार्च से 30 जून 2025 तक चलेगा। बैठक के दौरान जल स्रोतों की सफाई और संरक्षण के महत्व को जन-जन तक पहुंचाने एवं जन सहभागिता सुनिश्चित करने पर जोर दिया गया। उन्होंने निर्देश दिए कि जल संरक्षण संबंधी कार्यों को चिन्हित कर स्थानीय स्तर पर बैठकों का आयोजन किया जाए, जिससे समुदाय की भागीदारी बढ़े। श्री नागर ने अधिकारियों और कार्यकर्ताओं से अभियान को पूर्ण रूप से सफल बनाने के लिए समर्पित भावना से कार्य करने का आह्वान किया।

बैठक में नवांकुर समितियां, प्रस्फुटन समितियां, मुख्यमंत्री सामुदायिक नेतृत्व क्षमता विकास पाठ्यक्रम के सामाजिक कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर तीन महीने की कार्ययोजना तैयार करने पर गहन चर्चा की गई। जल संरचनाओं का निर्माण और पुनर्जीवन, जल स्रोतों की सफाई, सामुदायिक भागीदारी सुनिश्चित करना, जन जागरूकता अभियान रैलियां, सभा, पोस्टर, दीवार लेखन आदि के आयोजन पर चर्चा की गई। इस अवसर पर जिला समन्वयक श्रीमती प्रिया चौधरी ने जिले में परिषद द्वारा संचालित गतिविधियों की जानकारी दी और 2023-24 के वार्षिक प्रतिवेदन का अवलोकन कराया। उन्होंने आगामी कार्यों की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए सभी विकासखंड समन्वयकों और कार्यालयीन स्टाफ को आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान किया।

मोदी जी के नये भारत में जांच एजेंसियां सिर्फ विपक्ष को निशाना बनाती हैं : जीतू पटवारी

भोपाल। प्रदेश कांग्रेस प्रभारी हरीश चौधरी, प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी और अभा कांग्रेस सचिव रणविजय सिंह आज खजुराहों से सतना पहुंचें और वहां वरिष्ठ नेताओं एवं कांग्रेस कार्यकर्ताओं के साथ बैठक की। इस दौरान पूर्व नेता प्रतिपक्ष अजयसिंह राहुल भैया, सीडब्लूसी मेंबर कमलेश्वर पटेल भी मौजूद थे। नेतागणों के खजुराहों पहुंचने पर एयरपोर्ट पर कार्यकर्ताओं द्वारा उनका भव्य स्वागत किया गया।

प्रदेश प्रभारी श्री हरीश चौधरी जी के साथ कार्यकर्ता सम्मेलन में कहा कि कांग्रेस के विचार को जन-जन तक पहुंचाने के लिए हम जी-जान से संघर्ष करेंगे।

श्री पटवारी ने आज सतना प्रवास के दौरान प्रदेश में व्याप्त भयावह स्थिति और सरकार का माफियाओं को संरक्षण मिलने पर मीडिया के समक्ष तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुये मोहन यादव सरकार पर हमला बोला। इस दौरान नेतागणों ने सतना में सतना, चित्रकूट, रामपुर बघेला, नागौद, रैगांव, मैहर जिले की मैहर एवं अमरपाटन विधासभा क्षेत्र के कांग्रेसजनों से विधानसभावार कार्यकर्ता सम्मेलन को संबोधित करते हुये संगठनात्मक चर्चा की।

श्री पटवारी ने कहा कि मोहन यादव सरकार में हर तरह का माफिया पनप रहा है। प्रदेश में सर्वविदित हो गया है, रेत माफिया, भू-माफिया, शिक्षा-चिकित्सा, खनन माफिया हावी है, हर तरह का माफिया प्रदेश को छलनी कर रहा है और अब मछली माफिया प्रदेश में हावी हो गया है। सरकार और माफिया एक साथ है और माफियाओं की खिलाफत करने पर भाजपा उसका दमन करने पर आमादा हो जाती है। उन्होंने कहा कि किसान, गरीब, कर्मचारी सभी सेक्टर पर सरकार और माफिया हावी हो चुका है। यहां तक कि लोकतंत्र के चौथे स्तंभ मीडिया जगत के लोगों पर हमला, उन्हें डराया, धमकाया जा रहा है, खुलेआम लोकतंत्र की हत्या की जा रही है।

श्री पटवारी ने कहा कि नरेन्द्र मोदी ने 2014 में जो कहा एक भी वादा पूरा नहीं किया। देश में जगह-जगह नफरत की बातें होने लगी, 400-500 साल पुरानी कब्रें निकालकर आज के भविष्य को बिगाडने का भारत बना दिया। 25 साल से प्रदेश में भाजपा की सरकार है सोने की ईंटें इनोवा में मिली, 10 करोड़ रूपये इनोवा में मिले, इनोवा कहां से चली कहां रूकी, नरेन्द्र मोदी का नया भारत नहीं पकड़ पाया। नरेन्द्र मोदी का नया भारत में भूपेन्द्र बघेल के यहां ईडी की रेड डली, 500 कर्मचारी इनकम टैक्स के लगे हुये हैं। नरेन्द्र मोदी जब से प्रधानमंत्री बने 4000 ईडी की रेड डली, एक भी भाजपा के नेता पर नहीं डली। कांग्रेस-विपक्ष अलग-अलग लोगों पर डली। प्रदेश में सोने के बिस्किट किसके थे आज तक पता नहीं चल पाया। मोदी जी के नये भारत में जांच एजेंसियां सिर्फ विपक्ष को निशाना बनाती हैं। फिर की कांग्रेस की विचारधारा नहीं जागे तो कौन जागे?

नेतागणों ने आज सतना में कांग्रेस कार्यकर्ता सम्मेलन को संबोधित करते हुये संगठन को मजबूत और सुदृढ़ बनाने पर चर्चा की। नेतागणों ने कहा प्रदेश की भाजपा सरकार में हर वर्ग त्रस्त और परेशान है। सत्ता में बैठे लोग प्रदेश की जनता के हको पर डांका डाल रहे हैं। महंगाई की मार झेल रही जनता पर प्रहार उन्हें प्रताड़ित कर रही है। महिलाएं-बच्चियां प्रदेश में सुरक्षित नहीं, युवाओं का भविष्य अंधकार में धकेला जा रहा है।

इस अवसर पर वरिष्ठ नेता विधायक डॉ. राजेन्द्र सिंह, सिद्धार्थ कुशवाह, दिलीप मिश्रा, विनय सक्सेना, मकसूद अहमद, सुनील सर्राफ, जयभान सिंह, रमाशंकर प्यासी, धर्मेश घई सहित अन्य नेतागण एवं बड़ी संख्या में कांग्रेसजन उपस्थित रहे। श्री हरीश चौधरी, श्री जीतू पटवारी और श्री रणविजयसिंह 27 मार्च को रीवा में रीवा, गुढ़, त्योंथर, मनगंवा, सिरमौर एवं सिमरिया एवं मऊगंज जिले की मऊगंज एवं देवतालाब विधानसभा क्षेत्र के विधानसभावार कार्यकर्ताओं से व्यक्तिगत चर्चा करेंगे।

पीडब्ल्यूडी के मुख्य अभियंता पर 1 लाख का जुर्माना लगाया

जबलपुर (नप्र)। मध्यप्रदेश हाईकोर्ट ने एक याचिका पर सुनवाई करते हुए लोक निर्माण विभाग (पीडब्ल्यूडी) के मुख्य अभियंता पर एक लाख रुपए की कॉस्ट लगाई है। कोर्ट ने यह भी कहा है कि जुर्माना की राशि उन्हें अपनी जेब से देनी होगी। जिसे हाईकोर्ट विधिक सेवा समिति कोष में जमा करना होगा।

यह कॉस्ट मुख्य अभियंता एससी वर्मा द्वारा कोर्ट को गुमराह करने पर लगाया है। सुनवाई के दौरान हाईकोर्ट ने यह भी पाया कि लोक निर्माण विभाग के अधिकारी ने मामले में लगातार कोर्ट के साथ धोखाधड़ी करते हुए गुमराह करने की कोशिश की है। कोर्ट ने विभाग के प्रमुख सचिव को निर्देश दिए हैं कि सीई के खिलाफ विभागीय जांच कर रिपोर्ट पेश करे।

हाईकोर्ट ने दिए थे नियमितिकरण के निर्देश- अवमानना याचिका बालाघाट निवासी कृष्णकुमार ठकरेले सहित 6 अन्य ने लगाई थी। याचिकाकर्ता की ओर से अधिवक्ता मोहन लाल शर्मा और शिवम शर्मा ने कोर्ट में पक्ष रखा। बताया कि 2 हजार में याचिकाकर्ताओं का विभाग ने टरमेशन कर दिया था। बाद में ये लोग लेबर कोर्ट गए, जहां से उन्हें नियमित करने के आदेश देते हुए सेवा से बहाल करने कहा था।

इस मामले में मुख्य अभियंता एससी वर्मा ने 19 सितंबर 2024 को आदेश जारी करते हुए कहा था कि याचिकाकर्ता नियमितिकरण की पात्रता नहीं रखते हैं। मुख्य

अभियंता वर्मा ने वित्त विभाग के एक परिपत्र का हवाला देते हुए कहा था कि सभी दैनिक वेतन भोगी कर्मियों को नियमित कर दिया है। हाईकोर्ट ने जब इस जवाब का अवलोकन किया तो पाया कि मुख्य अभियंता एससी वर्मा ने कोर्ट को गुमराह करते हुए धोखा दे रहे हैं।

कोर्ट को मूर्ख समझते हो क्या- इस मामले में एक दिन पूर्व भी सुनवाई हुई थी। जिसमें कि हाई कोर्ट ने बेहद नाराजगी जताते हुए तल्ख टिप्पणी में कहा था कि विभाग के पीडब्ल्यूडी विभाग के इंजीनियर इन चीफ राजेंद्र मेहरा को व्यक्तिगत रूप से इस न्यायालय के प्रश्नों के उत्तर देने के लिए उपस्थित रहने के निर्देश दिए जाते हैं। वे अपने साथ याचिकाकर्ता के प्रकरण की संपूर्ण फाइल भी लेकर 25 मार्च को उपस्थिति सुनिश्चित करानी होगी। मामला सर्वप्रथम सुना जाएगा।

2 सप्ताह में आदेश का पालन सुनिश्चित करें- हाईकोर्ट जस्टिस विवेक अग्रवाल ने दो सप्ताह के भीतर पूर्व आदेश का पालन सुनिश्चित करने के निर्देश भी मुख्य अभियंता को दिए थे। कोर्ट ने अपने आदेश में साफ किया था कि यदि आदेश का पालन नहीं हुआ तो अगली सुनवाई के दौरान इंजीनियर इन चीफ पुनः हाजिर रहेंगे। 25 मार्च को हुई सुनवाई के दौरान पूर्व आदेश के पालन में पीडब्ल्यूडी के इंजीनियर-इन-चीफ कृष्ण पाल सिंह राणा भी कोर्ट में हाजिर हुए।

यह है मामला

अप्रैल माह में हाई कोर्ट में याचिका दायर की गई थी। जिसके जरिए 7 अक्टूबर, 2016 की नीति के स्थान पर उमादेवी के न्याय दृष्टांत के अनुरूप नियमितिकरण का लाभ दिए जाने की मांग की गई थी। इस तथ्य को स्वीकार करते हुए हाई कोर्ट ने 7 अक्टूबर 2016 की नीति के अंतर्गत दिए गए लाभ को निरस्त करते हुए अपेक्षित लाभ प्रदान करने के निर्देश दिए थे।

कोर्ट ने साफ किया था कि याचिकाकर्ता श्रम न्यायालय से जीत चुका है अतः उमादेवी के न्याय दृष्टांत के अनुरूप नियमितिकरण के लाभ का पात्र है। 60 दिन के भीतर यह लाभ प्रदान कर दिया जाए। लेकिन 60 दिन बीतने के बावजूद लाभ नहीं दिया गया। इसीलिए अवमानना याचिका दायर करनी पड़ी।

राइट क्लिक

कामरा की पैरोडी को 'सुपारी कॉमेडी' बताने के मायने...

अजय बोकिल

लेखक सुबह सवेरे के कार्यकारी प्रधान संपादक हैं।
संपर्क-
9893699939
ajaybokil@gmail.com

कुणाल कामरा किस स्तर के कॉमेडियन हैं और उनके तेवर क्या है, इन सवालों को थोड़ा अलग रखें तो प्रश्न उठता है कि उनकी पैरोडी पर भी जिस तरह महाराष्ट्र में शिंदे सेना ने बहुत ज्यादा गंभीरता से लेकर कामरा के स्टूडियो में तोड़फोड़ की और उन्हें घर से बाहर न निकलने की धमकी दी, उससे क्या कामरा का ही महत्व नहीं बढ़ा है? कामरा द्वारा महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे को निशाना बनाकर रचे गए जिस पैरोडी गीत पर शिंदे समर्थक भड़के, उसकी शब्दावली पर गौर करें तो इससे ज्यादा खराब भाषा शिंदे के खिलाफ उनके पुराने आका उद्धव ठाकरे, आदित्य ठाकरे और संजय राउत ने सार्वजनिक रूप से बार-बार इस्तेमाल की है। लेकिन शिंदे सेना ने उन पर तो कभी हमला करने की हिम्मत नहीं दिखाई। लेकिन जब वे ही शब्द कुणाल ने 'दिल तो पागल है' के टाइटल सांग की तर्ज पर बतौर पैरोडी इस्तेमाल किए तो बवाल खड़ा किया गया। यही नहीं, स्वयं एकनाथ शिंदे ने कुणाल की पैरोडी का परोक्ष स्वीकार करते हुए कहा कि 'व्यंग्य तो हम भी समझते हैं। लेकिन कुणाल ने जो किया, वह 'सुपारी कॉमेडी' है। शिंदे का आशय था कि कुणाल ने 'किसी' के इशारे पर यह सब किया है, लेकिन इस 'किसी' का खुलासा उन्होंने भी नहीं किया। उधर कामरा को उद्धव सेना का खुला समर्थन मिलने और विपक्ष द्वारा 'कॉमेडी' को लेकर राज्य में सत्तापक्ष की असहिष्णुता की आलोचना के बाद कामरा की हिम्मत और खुल गई है। उन्होंने साफ तौर पर कहा कि 'मैं माफी नहीं मांगूंगा।' उल्टे उन्होंने इसी तरह का एक और वीडियो वायरल कर दिया। इस मामले में महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेन्द्र फडणवीस की भूमिका दोहरी है। एक तरफ उन्होंने स्टूडियो में तोड़फोड़ करने वाले शिंदे समर्थकों के खिलाफ एफआईआर करवाई तो दूसरी तरफ शिंदे के खिलाफ इस तरह की पैरोडी की आलोचना भी की।

इसमे दो राय नहीं कि आज समाज में जिस तरह की असहिष्णुता बढ़ रही है, संवेदनशीलता घट रही है, उससे कॉमेडी बची रहे यह नामुमकिन सा है। शाब्दिक वार-पलटवार मीठी चिकौटियों के दिन शायद लद गए हैं। हर मामले में बात लट्ठ भाषा में ही करने का चलन और दुराग्रह है। ऐसे में कॉमेडियनों का मुश्किल में आना स्वाभाविक ही है। खासकर उन कॉमेडियनों का, जो प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से राजनीतिक टिप्पणियां भी करते हैं। लिहाजा ऐसी टिप्पणियों का विश्लेषण भी लक्षित व्यक्ति, दल या संगठन की राजनीतिक प्रतिबद्धता से होता है। मसलन अगर किसी को 'पप्पू' कह देना एक के लिए गहरा और ओछा व्यक्तिगत कटाक्ष है जो कई लोगों के मन को वह गुदगुदाता भी है। इसी तरह से तो 'फेकू' कहने से एक वर्ग गदगद होता है तो दूसरा बड़ा वर्ग इसे बौखलाहट में किया गया करार देता है। सारांश ये कि यदि मैं कहूं तो तो 'कॉमेडी' और तू कहे तो 'दुर्भाव।' दरअसल कामरा प्रकरण से कॉमेडी की शुद्धता, शिष्टता, उसकी मार और प्रकार पर भी सवाल उठ रहे हैं। आम तौर पर कॉमेडी की मान्य परिभाषा अभिव्यक्ति की ऐसी शैली से है, जो लोगों को हंसाती है, उन्हें मनोरंजन की स्थिति में बनाए रखती है। इसका अंत प्रायः सुखद होता है। हिंदी में इसे हास- परिहास या विनोद कहा जाता है। कॉमेडी अक्सर आम लोगों की जिंदगी, सुख- दुख और विसंगतियों से उपजती है। मानसिक रूप से यह उस त्रासदी की स्थिति से उलट है, जिसका अंत दुखद या क्लेश के रूप में होता है। कुछ की नजर में त्रासदी एक महान व्यक्ति, सोच या व्यवस्था का पतन है।

दरअसल हास्य-विनोद जीवन के कष्ट क्षणभर के लिए बिसराने और आनंद की अनुभूति का शालीन जरिया है। लेकिन कॉमेडी भी तीन बहने हैं। यानी कॉमेडी के अलावा पैरोडी और व्यंग्य (सटायर)। पैरोडी असल में किसी मूल रचना अथवा चरित्र आदि की अतिरंजित और आलोचनात्मक नकल है। जबकि हास्य-व्यंग्य अंग्रेजी में जिसे 'कॉमेडी' कहा जाता है, वह भी कई प्रकार की होती है। जबकि व्यंग्य हंसाने के साथ-साथ भीतर तक तिलमिलाता भी है। यूं कॉमेडी के कई रूप हैं। जैसे कि प्रहसन,व्यंग्य, डॉर्क कॉमेडी (वर्जित या गंभीर विषयों पर केन्द्रित), हार्ड कॉमेडी (शुद्ध हास्य) तथा लो कॉमेडी (हल्का फुल्का हास्य)। लेकिन एकनाथ शिंदे ने जिस 'नई विधा' का उल्लेख किया है, वह है- 'सुपारी कॉमेडी।' जहां तक व्यंग्य- विनोद की बात है तो एकनाथ शिंदे की मातृभाषा मराठी में यह आम बात है। बल्कि सहजता से कटाक्ष मराठी भाषा की नैसर्गिक विशेषता है। इसे अन्यथा अमूमन नहीं लिया जाता। लेकिन मराठीभाषी होते हुए भी शिंदे ने कुणाल की पैरोडी को अन्यथा लिया तो उनका मानना है कि कुणाल की पैरोडी राजनीति से प्रेरित है। इसीलिए 'सुपारी पैरोडी' है। अभी तक 'सुपारी किलिंग' जैसे शब्द चलन में थे, लेकिन अब सुपारी कॉमेडी नया लफ्जच है। तो क्या शिंदे यह कहना चाहते हैं कि इस तरह की पैरोडी किसी की चरित्र हत्या की मंशा से की जा रही है? इसका एक संदेश यह भी है कि हम राजनेताओं को तो एक दूसरे को यथा संभव निकृष्ट शब्दों में कोसने- गरियाने का जन्मजात अधिकार है, लेकिन एक कॉमेडियन ऐसा दुस्साहस कैसे कर सकता है? और वो भी किसी सत्ताधीश पर? अगर वह अपनी औकात में नहीं रहेगा तो उसकी वही गत बनेगी, जो कामरा की हुई है। शायद इसीलिए कामरा ने भी शिंदे पर कटाक्ष के लिए पैरोडी का माध्यम ही चुना न कि सीधे कॉमेडी का। ऐसे में कुणाल को लाठी से भले चमकाया जाए, लेकिन अदालत में उनके खिलाफ मामला शायद ही टिक पाए।

इसका अर्थ यह नहीं कि लोकतंत्र में कोई किसी पर किसी भी तरह की अमर्यादित टिप्पणी या कटाक्ष करे। उकसाने का भाव कॉमेडी का उद्देश्य नहीं हो सकता। सवाल यह भी है कि कुणाल कामरा ने इसी वक्त एकनाथ शिंदे पर पैरोडी क्यों की? जब वो महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री थे, तब भी 'सुपारी कॉमेडी' की जा सकती थी। अब जबकि शिंदे राज्य के उप मुख्यमंत्री रह गए हैं और उनका सियासी आभामंडल भी पहले की तुलना में फीका पड़ चुका है, तब शिंदे को 'गद्दार', दाढ़ी वाला आदि बताने से क्या हासिल होना है। वैसे भी राजनीति में 'गद्दारी' की परिभाषा सुविधा सापेक्ष होती है। मसलन अगर शिंदे, उद्धव ठाकरे के लिए 'गद्दार' हैं तो भाजपा की निगाह में उद्धव ने बाला साहब के हिंदुत्व को तजकर उनके सिद्धांतों से 'गद्दारी' की है। दोनो गद्दारियों के मूल में सत्ता स्वार्थ है। हालांकि कॉमेडी में किसी किस्म की गद्दारी नामुमकिन है। आदमी वहां या तो हंसेगा या मुंह छिपाएगा। कोई भी कॉमेडियन समाज की प्रवृत्तियों, विसंगतियों और विद्रूपताओं पर ही कटाक्ष करता है। इस लिहाज से एकनाथ शिंदे का बाला साहब के उसूलों की खातिर भाजपा के साथ जाना 'गद्दारी' नहीं है तो उन्हें कुणाल की पैरोडी से नाराज होना ही नहीं चाहिए।

लेकिन इससे भी बड़ा सवाल सोशल मीडिया के आने के बाद आर्थिक लाभ की खातिर भाषा के अमर्यादित इस्तेमाल का है। आज देश में कुणाल की तरह पांच सौ से अधिक स्टैंड अप कॉमेडियन बताए जाते हैं, जो अपनी शिष्ट अथवा घटिया कॉमेडी से लोगों को हंसाने का दावा करते हैं। कॉमेडियनो दवारा लोगों को हंसने- हंसाने (?) का यह कारोबार करीब 60 हजार करोड़ रू. का है। लेकिन अगर गाली देने से भी लाइक्स मिलें, नग्नता परोसने से ज्यादा से व्यूज मिलें, अश्लील या अपमानजनक हास्य अथवा कटाक्ष के वीडियो या कमेंट ज्यादा से ज्यादा शेयर हों, तो यह भाव समूचे समाज के ही मानसिक और चारित्रिक पतन का परिचायक है। विडंबना यह है कि जहां एक तरफ लोग पैसे देकर कामेडी शो पर हंस रहे हैं तो दूसरी तरफ जर जरासी बात पर एक दूसरे की जान लेने में भी नहीं हिचक रहे हैं। सहृदयता पर कूरता और मनोरंजन पर निष्ठुरता हावी होती जा रही है। यूं कुणाल कामरा पहले भी विवादित कॉमेडी करते रहे हैं। शिंदे पर उनकी पैरोडी भी अभिव्यक्ति की 'बोल्डनेस' भले हो, लेकिन उसके पीछे मंशा सिर्फ सच बोलने की नहीं लगती। कुणाल की अपनी राजनीतिक प्रतिबद्धता है। जो उन्हें शिंदे के विरोधी वैचारिक खेमे में बिठाती है। बावजूद इसके कुणाल की पैरोडी का जवाब प्रति-पैरोडी से भी दिया जा सकता था। उसके लिए लठ ही भांजा जाए, जरूरी नहीं है। उस पैरोडी की उपेक्षा भी की जा सकती थी। शाब्दिक वार के हिंसक जवाब से तंज की धार कम नहीं होती।

॥ मंदिरम् ॥

67

पशुपतिनाथ मन्दिर, मन्दसौर

पशुपतिनाथ मन्दिर भारत देश के मध्य प्रदेश राज्य के मन्दसौर जिले में स्थित एक प्राचीन मन्दिर है। यह मन्दसौर नगर में शिवना नदी के किनारे स्थित है। पशुपतिनाथ की मूर्ति पूरे विश्व में अद्वितीय प्रतिमा है ये प्रतिमा इस संसार की एक मात्र प्रतिमा है जिसके आठ मुख है और जो अलग-अलग मुद्रा में दिखाई देते है। भागवताचार्य श्री श्री 1008 स्वामी प्रत्यक्षानंद जी द्वारा मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा की गई थी व बाद में ग्वालियर स्टेट की राज माता श्री विजयाराजे सिंधिया द्वारा एक विशाल मंदिर का निर्माण करवाया गया एवं मंदिर शिखर पर स्वर्णकलश को स्थापित किया गया। महादेव श्री पशुपतिनाथ की मूर्तिको एक ही पत्थर पर बहुत ही आकर्षक तरीके से बनाया गया है।

सहकारिता आंदोलन को आगामी 4 वर्ष में नए मुकाम पर पहुंचाएंगे : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

दूध पर बोनस देने के साथ ही अन्य क्षेत्रों की सहकारी संस्थाओं के सदस्यों को करेंगे लाभान्वित

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि मध्यप्रदेश सरकार सर्वजनकल्याण के संकल्पों के साथ कार्य कर रही है। वर्तमान में पंचायत से लेकर मंत्रालय तक पारदर्शितापूर्ण कार्य शैली के कारण अन्य क्षेत्रों के साथ सहकारी क्षेत्र में समृद्ध हुआ है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और केंद्रीय सहकारिता एवं गृह मंत्री श्री अमित शाह ने सहकारिता का लाभ पहुंचाने के लिये बहुजन हिताय-बहुजन सुखाय के भाव के अनुसार कार्य करने के लिए मार्गदर्शन दिया है। मध्यप्रदेश सहकारिता के क्षेत्र में निश्चित ही नए दौर की नई कहानी लिखेगा। गुजरात में दूध पर बोनस की जिस तरह व्यवस्था है, मध्यप्रदेश भी इस दिशा में आगे बढ़ रहा है। इसके साथ ही मध्यप्रदेश में मत्स्य पालन के लिए काफी बड़ा क्षेत्र है और हाल ही में ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट में भी उद्योग क्षेत्र के साथ सहकारिता ने कार्य करने की पहल की है। मध्यप्रदेश में सहकारिता आंदोलन को गति दी जा रही है। अब सहकारिता क्षेत्र में व्यवस्थाएं काफी पारदर्शी हैं और मध्यप्रदेश में सहकारिता के विभिन्न आयामों पर कार्य किया जाएगा। आने वाले चार वर्ष में सहकारिता आंदोलन को नए मुकाम पर पहुंचाया जाएगा।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बुधवार को समन्वय भवन में अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता वर्ष-2025 के राज्य स्तरीय कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सम्मेलन में पधारे प्रदेश भर के प्रतिभागियों का स्वागत किया। उन्होंने सहकारिता विभाग में नवनियुक्त सहकारी निरीक्षकों के नियुक्ति पत्र भी सौंपे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सहकारिता विभाग के प्रयासों की सराहना की।

भारत में प्रचलित व्यवस्थाओं से सीखते हैं अन्य देश

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भारत में सहकारिता का इतिहास पुराना है। भारत में वर्षों पूर्व अश्वमेघ यज्ञ की परंपरा रही थी। लेकिन भारत ने किसी राष्ट्र पर कब्जा नहीं किया। छोटे-छोटे राज्यों की स्वायत्तता को खत्म नहीं होने दिया बल्कि उन्हें साथ लेकर कार्य किया और उनके स्वावलंबन को भी जीवंत रखा। सच्चे अर्थों में संयुक्त राष्ट्र संघ की भावना का पालन करने वाला कोई राष्ट है तो वह भारत है। जब यह कहा जाता है सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः ....तो इसका अर्थ है सभी को परस्पर जोड़ना और अपने लाभ में उन्हें सहभागी बनाना। यह वसुधैव कुटुम्बकम जैसे वेद वाक्य का लघु रूप है। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने विश्व में भारत की गरिमा बढ़ाने का कार्य किया है।

सीएम बोले-किसी के 12 बजाना हो, सहकारिता में सदस्य बनाओ

भोपाल के समन्वय भवन में बुधवार को अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता वर्ष-2015 के मौके पर राज्य स्तरीय सम्मेलन हुआ। इस दौरान सीएम डॉ. मोहन यादव ने कहा- हम भाग्यशाली हैं कि हमको अपने प्रधानमंत्री के नेतृत्व में सहकारिता के क्षेत्र में बड़े बदलाव दिख रहे हैं। नहीं तो सहकारिता के अंदर की दुनिया ऐसी है कि खग ही जाने खग की भाषा। इससे तो भगवान ही बचाएं। मुख्यमंत्री ने कहा- मैं तो वर्षों से सहकारिता से जुड़ा रहा, लेकिन दूर भी रहा। किसी को निकालना है तो ये माया भी भगवान के अलावा सहकारिता के अधिकारी ही जानते हैं। कैसे निकालना है। किसी के 12 बजाना है तो समिति में सदस्य बनाकर जांच बैठा दो।

प्रधानमंत्री श्री मोदी की भावना के अनुरूप मध्यप्रदेश में होगा कार्य

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री मोदी ने सहकारिता के मूल भाव के अनुरूप बहुउद्देशीय सहकारी समितियों की कल्पना की। इसे साकार करने के लिए सहकारिता का दायित्व केंद्रीय मंत्री श्री अमित शाह को दिया गया। केंद्र सरकार ने सहकारिता में सभी के कल्याण का ध्यान रखा है। मध्यप्रदेश में भी इसी तर्ज पर कार्य हो रहा है। सहकारिता अधिनियम में परिवर्तन के फलस्वरूप सोसायटी के रजिस्ट्रेशन का कार्य 30 दिन में संभव होगा। पूर्व में यह अवधि 90 दिवस थी। पूर्व की व्यवस्था में अनेक कठिनाईयों को सामना करना होता था। प्रधानमंत्री श्री मोदी के मार्गदर्शन में सहकारिता क्षेत्र में प्रक्रियाओं को सरल बनाने की पहल हुई। सहकारिता को उन्होंने बहुउद्देश्यीय और बहुआयामी बनाने का कार्य किया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा औद्योगीकरण में सिर्फ व्यक्ति ही नहीं, सहकारिता को भी भागीदारी सुनिश्चित की जाएगी। मध्यप्रदेश किसानों, गौ पालकों और मत्स्य पालकों को सहकारी क्षेत्र में अधिक से अधिक लाभ दिलवाकर इस क्षेत्र में शिखर पर पहुंचेगा।

सहकारी ध्वजारोहण कर कैलेण्डर, मैन्युअल और परिपत्र पुस्तिका का किया विमोचन

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने शुरूआत में सहकारी ध्वजारोहण कर अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता वर्ष 2025 के वार्षिक कैलेंडर, पैक्स कार्य मैन्युअल और सहकारिता में सहकार, पैक्स पुनर्गठन और व्यवसाय संवर्धन के महत्वपूर्ण परिपत्रों की पुस्तिका का विमोचन किया। इसके साथ ही मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने माइक्रो एटीएम पखवाड़े का शुभारंभ भी किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कार्यक्रम में उत्कृष्ट कार्य करने वाली पैक्स, दुग्ध सहकारी संस्थाओं और मत्स्य पालक सहकारी संस्थाओं को पुरस्कार प्रदान किए। इन संस्थाओं में विदिशा, इंदौर और खरगोन की संस्थाएं शामिल हैं।

कार्यक्रम को सहकारिता और खेल एवं युवा कल्याण मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री मोदी और केंद्रीय सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने सहकारिता से समृद्धि का मंत्र दिया है। मध्यप्रदेश सहकारिता क्षेत्र में अग्रणी हो रहा है। हाल ही में जीआईएस-भोपाल में नया अध्याय जोड़ा गया जब सीपीपीपी अर्थात को-ऑपरेटिव पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप का विषय सामने आया। सहकारिता विभाग में कई नवाचार भी किए जा रहे हैं। ईज ऑफ डूईंग बिजनेस के अनुरूप कार्य किया जा रहा है।

अपर मुख्य सचिव सहकारिता श्री अशोक बर्णवाल ने स्वागत उद्बोधन दिया। कार्यक्रम में प्रमुख सचिव पशुपालन एवं डेयरी श्री उमाकांत उमराव, प्रमुख सचिव मत्स्य पालन श्री डी.पी. आहूजा, राज्य सहकारी विपणन संघ के प्रबंध संचालक श्री आलोक कुमार सिंह, आयुक्त सहकारिता श्री मनोज पुष्प, नाबार्ड क्षेत्रीय कार्यालय की मुख्य महा प्रबंधक श्रीमती सी. सरस्वती एवं बड़ी संख्या में प्रदेश की सहकारी संस्थाओं के प्रतिनिधि, जिला सहकारी बैंक, अपेक्स बैंक, पैक्स, दुग्ध एवं मत्स्य समितियों के साथ ही सहकारिता विभाग के अधिकारी और कर्मचारी भी उपस्थित थे। अपेक्स बैंक के प्रबंध संचालक श्री मनोज कुमार गुप्ता ने आभार माना।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव 28 मार्च को सिंगल क्लिक से श्रमिक परिवारों को करेंगे राशि का अंतरण

संबल योजना के 23 हजार 162 प्रकरणों में श्रमिक परिवारों को मिलेंगे 505 करोड़ रूपये

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव 28 मार्च को मंत्रालय में संबल योजना में अनुग्रह सहायता के 23 हजार 162 प्रकरणों में 505 करोड़ रूपये सिंगल क्लिक से हितग्राहियों के खातों में अंतरित करेंगे। कार्यक्रम में श्रम, पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल एवं प्रदेश के विभिन्न स्थानों पर मंत्री एवं स्थानीय जन प्रतिनिधि भी उपस्थित रहेंगे।

मुख्यमंत्री जनकल्याण (संबल) योजना, असंगठित क्षेत्र में कार्यरत लाखों श्रमिकों के लिए महत्वपूर्ण योजना है। योजना में अनुग्रह सहायता योजना अंतर्गत दुघर्टना में मृत्यु होने पर 4 लाख रूपये एवं सामान्य मृत्यु होने पर 2 लाख रूपये प्रदान किये जाते हैं। स्थायी अपंगता पर 2 लाख रूपये एवं आंशिक स्थायी अपंगता पर 1 लाख रूपये तथा अंत्येष्टि सहायता के रूप में 5 हजार रूपये प्रदान किये जाते हैं।

वरिष्ठ पत्रकार अरूण पटेल की सास का निधन

भोपाल। वरिष्ठ पत्रकार अरूण पटेल की सास एवं स्व. ओंकार सिंह रघुवंशी की पत्नी श्रीमती गीता रघुवंशी का मंगलवार सुबह निधन हो गया। वे 93 वर्ष की थीं। श्रीमती रघुवंशी का अंतिम संस्कार भदभदा विश्राम घाट पर किया गया। मुखाग्नि उनके पुत्र अजित रघुवंशी ने दी। इस अवसर पर विधानसभा में उप नेता प्रतिपक्ष हेमंत कटारे, कांग्रेस पार्षद गुड्डू चौहान, राकांपा (अजित) के राष्ट्रीय प्रवक्ता ब्रजमोहन श्रीवास्तव, वरिष्ठ पत्रकार उमेश त्रिवेदी, विजयदत्त श्रीधर, एन.के.सिंह, सतीश सक्सेना, गिरीश उपाध्याय, राकेश अग्निहोत्री, विनोद तिवारी, संजय सक्सेना, नंदकिशोर मालवीय सहित कई गणमान्य व्यक्ति मौजूद थे। दिवंगत आत्मा को दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि दी गई।

(विनोद तिवारी)

अध्यक्ष तोमर के संचलनशक्ति से सौहार्दपूर्ण संपन्न हुआ बजट सत्र

मध्य प्रदेश की सोलहवीं विधानसभा का दूसरा बजट सत्र कई मायनों में अनूठा रहा। जहां एक तरफ अब तक का सबसे छोटा बजट सत्र रहा, वहीं मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव का विजन और विधानसभा अध्यक्ष नरेंद्र सिंह तोमर के कुशल संसदीय संचालन की सभी ने तारीफ की। मात्र नौ बैठकों वाले इस सत्र के बारे में विधानसभा अध्यक्ष श्री तोमर का कहना है कि सदन की संसदीय कार्यप्रणाली ऐसी हो जो प्रदेश और वहां की जनता की प्रगति का माध्यम बने।

सदन की कार्यवाही का सुचारू संचालन स्वस्थ लोकतांत्रिक व्यवस्था का प्रतीक होती है और कई मौकों पर ऐसा देखने को भी मिला जब अध्यक्ष ने पक्ष और विपक्ष को बखूबी नियंत्रित कर सदन को सुचारू रूप से चलाया।

16 वीं विधानसभा का पंचम सत्र का समापन सौहार्दपूर्ण वातावरण में चला सत्र। पक्ष-विपक्ष के सदस्यों की सक्रियता के बीच विपक्ष ने सरकार को बिगड़ती कानून व्यवस्था का आरोप लगाकर घेरा।यहां तक की सरकार पर माफिया को संरक्षण देने का आरोप लगाकर कई बार घेरा।

मध्यप्रदेश की सौलहवीं विधानसभा के पंचम सत्र (बजट सत्र) का सोमवार को समापन हो गया। 10 मार्च से प्रारंभ हुए इस सत्र में कुल 9 दिन सदन की कार्यवाही संचालित हुई जिसमें 56 घंटे काम हुआ। राज्य की डॉ मोहन यादव सरकार ने जहां विधाई, वित्तीय और लोक महत्व के कार्य संपादित किए वहीं राज्यपाल श्री मंगू भाई पटेल का अभिभाषण हुआ एवं प्रदेश सरकार का वित्तीय वर्ष 2025-26 के आय व्यय को पारित किया गया। सदन में वित्तीय वर्ष 2024-25 की द्वितीय अनुपूरक मांगों को भी स्वीकृति प्रदान की गई।

सत्र के सफलतापूर्वक समापन पर विधानसभा अध्यक्ष नरेंद्र सिंह तोमर ने प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, सभी मंत्रीगण, नेता प्रतिपक्ष का आभार जताते हुए कहा कि सदन में सार्थक चर्चा के माध्यम से ही जनता की समस्याओं का निराकरण होता है। सदन का चलना और चर्चा होना पक्ष और विपक्ष दोनों के हित में है। इससे जहां एक ओर विपक्ष को प्रश्नों, ध्यानाकर्षण और विभिन्न संसदीय माध्यमों से अपनी बात कहने का अवसर मिलता है वहीं सरकार को अपनी कार्यप्रणाली में कमियों को दूर करने हेतु बहुमूल्य सुझाव भी प्राप्त होते हैं। इससे जहां प्रशासनिक व्यवस्था में सुधार करने और उसमें कसावट लाने में सुविधा होती है।

श्री तोमर ने कहा कि सदन की सफल कार्यवाही से विधायिका का कार्यपालिका पर नियंत्रण की वास्तविक तस्वीर भी परिलक्षित होती है। वास्तव में हमारा लक्ष्य यही होता है कि लोकतंत्र समृद्ध हो और संसदीय कार्यप्रणाली प्रदेश और उसकी जनता की प्रगति तथा उन्नति का माध्यम बने। सत्र समापन पर अपने संबोधन में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि पक्ष एवं विपक्ष दोनो ओर के सभी सदस्य सदन की पूरी कार्यवाही में सत्र के अंतिम दिन तक सक्रिय रूप से प्रतिभागी रहे यह एक स्वस्थ लोकतंत्र परंपरा की निशानी है।

नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने भी विधानसभा अध्यक्ष की तारीफ करते हुए कहा कि उन्होंने संवेदनशीलता और निष्पक्षता के साथ इस सत्र का सफल संचालन किया है। सत्र में सदस्यों ने जनता से जुड़े मुद्दों को उठाया और उनकी समस्या के निराकरण के लिए सदन से व्यवस्था भी दी गई।

उल्लेखनीय है कि जितने समय के लिए विधानसभा की कार्यवाही निर्धारित की गई थी उतने पूरे दिनों के लिए सदन की कार्यवाही संचालित हुई। कुछ कार्य दिवसों में तो निर्धारित समय अवधि से ज्यादा अपितु रात्रि दस बजे तक सदन की कार्यवाही में सक्रियता से सदस्यों ने भाग लिया। इस सत्र में अशासकीय कार्य भी काफी मात्रा में हुए है।

इस सत्र में कुल 2939 प्रश्न प्राप्त हुए जिसमें से 1448 तारांकित और 1491 अतारांकित प्रश्न थे। ध्यानाकर्षण की 624 सूचनाएं प्राप्तु हुई जिसमें से 33 सूचनाएं ग्राह्य की गई। शून्यकाल की 183 सूचनाएं और 510 याचिकाएं भी प्राप्त हुई। इस सत्र के दौरान 4 शासकीय विधेयक और एक अशासकीय संकल्प भी सदन में पारित हुआ है। इस सत्र में अनेक समितियों के 59 प्रतिवेदन भी सदन के पटल पर रखे गए हैं।

राज्यपाल के अभिभाषण पर कृतज्ञता ज्ञापन के प्रस्ताव पर सदन के कुल 11 घंटे 30 मिनट चर्चा हुई और बजट पर सामान्य चर्चा 9 घंटे 44 मिनट चली।

लोक निर्माण विभाग के मंत्री राकेश सिंह ने सदन के समापन अवसर अध्यक्ष श्री तोमर की महत्वपूर्ण भूमिका को प्रतिपादित किया। उन्होंने कहा कि वे गंभीरता से सदन को संचालित करते हैं एवं सदन के प्रत्येक सदस्य को महत्व प्रदान करते हैं। श्री तोमर का अनुभव सुदीर्घ है और उनके दिशा-निर्देश को पक्ष-विपक्ष दोनों ही पूर्ण रूप से स्वीकार करते हैं।

चिंतामणि ने डाला चिंता में

सत्र के दौरान विपक्ष ने भ्रष्टाचार के मुद्दों पर सरकार को घेरा और सौरभ शर्मा मामले में सीबीआई जांच की मांग की, लेकिन एक अन्य भ्रष्टाचार के मामले में सेंट्रल विस्टा के संबंध में सदन में कोई ज्यादा हलचल नहीं देखी। वहीं भाजपा के विधायक डॉ.चिंतामणि मालवीय ने कफ़न में जेब नहीं होने के बयान पर सदन को इतना गर्मा दिया कि उसकी आंच से भाजपा मुख्यालय भी तप गया। विधायक डॉ.मालवीय भी इस आंच में तपते नजर आए।